इसरो isro

अभिव्यक्ति

हिंदी गृह पत्रिका अंक 18

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी का अमृत महोत्सव-विशेषांक

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद

डेकू - इसरो द्वारा डिज़ाइन अक्तूबर - 2022
Designed by DECU - ISRO October - 2022

डेकू DECU

वर्ष 2021-22 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु अंतरिक्ष विभाग को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम)

अंतरिक्ष विभाग को वर्ष 2021-22 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार 14 सितंबर, 2022 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय इनडोर स्टेडियम, सूरत (गुजरात) में संयुक्त रूप से आयोजित हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान माननीय श्री अमित शाह, गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार के कर-कमलों से अध्यक्ष, इसरो के प्रतिनिधि के रूप में नामित श्री नीलेश एम. देसाई, निदेशक, सैक ने ग्रहण किया।

इस सम्मेलन के दौरान सैक-इसरो के वैज्ञानिकों द्वारा लिखी गई पुस्तक 'भारतीय विद्युत प्रकाशीय नीतभारों का विकास – एक चित्रमयी काव्यगाथा' का भी विमोचन माननीय श्री अमित शाह, गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार के कर-कमलों से किया गया।

अनुक्रमणिका

क्र.	रचना का शीर्षक	पृष्ठ सं
1.	संपादकीय	02
2.	संदेश : निदेशक, सैक	03
3.	संदेश : नियंत्रक, सैक	04
4.	पाठकों की कलम से	05
5.	अभिव्यक्ति के 17 वें अंक की विशेष पुरस्कृत रचनाएं	05
6.	अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में राजभाषा गतिविधियां	06
7.	भारत के स्वतंत्रता सेनानी श्री नंदलाल शाह जी के साथ साक्षात्कार	07
8.	75 वर्ष: आजादी से अमृत महोत्सव तक का सफर	12
9.	चित्तौड़गढ़ किले के दर्शन	14
10.	यूँ ही नहीं मेरा भारत महान कहलाता	15
11.	बाबू कुंवर सिंह	16
12.	जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान और जय अनुसंधान	17
13.	लाल किला – यात्रा वृत्तांत	18
14.	मास्टर दा की प्रेरणादायक कहानी	19
15.	महायोद्धा- राणा	20
16.	स्टैच्यू ऑफ यूनिटी- यात्रा संस्मरण	21
17.	जलियांवाला बाग़ - अविस्मरणीय यात्रा	22
18.	दांडी - आजादी की लड़ाई में मील का पत्थर	24
19.	हमारी आजादी के 75 वर्ष : अमृत मंथन	26
20.	सेलुलर जेल : सजा-ए-कालापानी	27
21.	चित्र	30
22.	क्रांतिकारी अल्लूरी सीताराम राजू	31
23.	अभिव्यक्ति अंक 17 वर्ग पहेली के उत्तर	32
24.	काश....मैं नहीं होता	33
25.	आजाद हिन्द फौज के एक स्वतंत्रता सेनानी की वीरगाथा	34
26.	चित्र	35
27.	रब्दान्से की सभ्यता – भारत का अपना माचू पिच्चू	36
28.	ये कैसी आज़ादी???	38
29.	गुजरात के ऐतिहासिक एवं दर्शनीय स्थल	39
30.	स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन के रोचक तथ्य	40
31.	वर्ग पहेली	41
32.	चित्र	42
33.	स्वराज के बाद दुःख का आरंभ	43
34.	भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रसिद्ध भाषण और नारे	44
35.	स्वतंत्रता के बाद देश की 75 उपलब्धियों का संकलन	46
36.	स्वतंत्रता के मतवाले गुमनाम नायक – मेरे दादाजी	49
37.	मेरा भारत: परतंत्र से स्वतंत्र	50
38.	जंगल के दावेदार भगवान बिरसा मुण्डा	51
39.	चित्र	52
40.	अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद उद्यान : रोमाँचक और प्रेरणादाई	53
41.	अमृत महोत्सव	54
42.	क्रांतिकारियों के करीबी साथी रामचंद्र कर्नावट	55
43.	चित्र	57
44.	चित्र	58
45.	नज़रिया	59
46.	चित्र	60
47.	कृतज्ञ नागरिक	61
48.	लखनऊ रेजीडेंसी : 1857 की क्रांति की गवाही देती एक इमारत	62
49.	मुर्शिदाबाद का रोचक इतिहास	64
50.	अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में संपन्न हिंदी तकनीकी संगोष्ठी-2022 की रिपोर्ट	65

संपादकीय

सुधी पाठकों के समक्ष 'अभिव्यक्ति' का 18वां अंक प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। 18 वर्ष पूरे होना वयस्क अवस्था को प्राप्त होना माना जाता है। 'अभिव्यक्ति' पत्रिका भी अपनी बाल्यावस्था और किशोरावस्था को पार करके वयस्क हो गई है। आप सब इसके विकास के सफर के साथी रहे हैं। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आगे जैसे-जैसे यह पत्रिका नए सोपान पार करेगी, आप तब भी इसके साथ रहेंगे।

यह अंक 'आजादी का अमृत महोत्सव' विशेषांक है। हमने प्रयास किया है कि भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के विविध आयाम हम पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर सकें। इस अंक में वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी का साक्षात्कार, कुछ अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के विषय में लेख, ऐतिहासिक महत्व के स्थानों का यात्रा वृत्तांत, देशभक्ति से भरी कविताएँ, चित्र आदि शामिल किए गए हैं। ये रचनाएँ लेखकों की सृजनात्मक क्षमता के साथ उनकी देशभक्ति भी दर्शाती हैं।

प्रिय पाठकों से हमारा एक छोटा-सा अनुरोध है। कितना अच्छा हो यदि हम देशभक्ति को सिर्फ 15 अगस्त या 26 जनवरी तक ही सीमित न रखें। कैसा लगता है जब बाहर के व्यक्ति यह कहते हैं कि भारत में स्वच्छता नहीं है या यहाँ पर लोग ट्रैफिक नियमों का पालन नहीं करते हैं, वगैरह-वगैरह? स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद अपने देश की इस छवि को बदलना नितांत आवश्यक हो गया है। आप सभी से अनुरोध है कि अपने रोजमर्रा के जीवन में नियमों का पालन करके, सार्वजनिक स्थानों पर साफ-सफाई रखकर, अपने आसपास के लोगों के प्रति संवेदना और शालीनता दर्शाकर अपने देश की प्रगति में योगदान दें। जय हिंद, जय हिंदी।

संपादक मंडल

अभिव्यक्ति

हिंदी गृह पत्रिका

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, वर्ष 2022, अंक 18

परम संरक्षक

श्री नीलेश एम. देसाई, निदेशक एवं अध्यक्ष,
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संरक्षक

वी. के. जैन भा.दू.से., नियंत्रक एवं
सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादक मंडल

श्री नीरज माथुर, समूह निदेशक
श्री देवांग मांकड़, वैज्ञानिक/अभियंता एसजी
श्रीमती निधि सिंह, वैज्ञानिक/अभियंता एसएफ
श्री मुकेश कुमार मिश्र, पुस्तकालय अधिकारी
सुश्री ज्योत्सना लाडकानी, वैज्ञानिक/अभियंता एसई

प्रधान संपादक

श्रीमती नीलू सेठ, उप निदेशक (राजभाषा)

संपादक

सुश्री एनाक्युलेट फर्नाण्डस सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्रबंध संपादक

श्री पवन गुप्ता, वरि.सहायक
सुश्री सोमा करनावट, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सहयोग

सुश्री रजनी सेमवाल, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री जी. एल. त्रिवेदी, वरि. परियोजना सहायक

आलेखी अभिकलन

श्री रमेश ए, वैज्ञा. सहायक - बी (मल्टीमीडिया)
श्री अरविंद मिश्र, वैज्ञा. सहायक - बी (मल्टीमीडिया)

आवरण पृष्ठ: आवरण पृष्ठ आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित है।

नोट – इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक मंडल का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

एन. एम. देसाई
निदेशक, सैक एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

संदेश

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र इसरो का अग्रणी केंद्र है जहाँ संचार, नौवहन, सुदूर संवेदन आदि उपग्रहों के लिए नीतभार तैयार किए जाते हैं। हाल ही में सैक द्वारा ओशनसैट-3, आईआरएनएसएस-1जे, भूटानसैट, चंद्रयान-3 आदि के नीतभार तैयार करके सुपुर्द किए गए। इसके अतिरिक्त, आगामी कार्यों में आईडीआरएसएस-1, एनवीएस-01, जीसैट-7आर, जीआईसैट-2, रिसोर्ससैट-3, आरआईसैट-1बी, इनसैट-3डीएस आदि के लिए 15 से अधिक नीतभार विकास के उन्नत चरणों में हैं।

हमारे वैज्ञानिक नवीनतम तकनीकी ज्ञान को जनता तक पहुँचाने के लिए विशेष प्रयास कर रहे हैं जिसमें मौलिक पुस्तक लेखन शामिल है। गत वर्ष केंद्र के वैज्ञानिकों ने 8 पुस्तकें लिखी हैं जो प्रकाशनाधीन हैं। अन्य 4 पुस्तकों के लेखन का कार्य भी प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त, संवेदक विकास क्षेत्र के वैज्ञानिकों ने अनूठी पहल करते हुए अब तक विकसित विद्युत प्रकाशीय नीतभारों के हस्तरेखांकित चित्र और उन पर आधारित स्वरचित कविताओं का सृजन कर "भारतीय विद्युत प्रकाशीय नीतभारों का विकास – एक चित्रमयी काव्यगाथा" नाम की पुस्तक तैयार की। अत्यंत हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का विमोचन 14 सितंबर 2022 को सूरत, गुजरात में आयोजित हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के उद्घाटन के दौरान माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कर-कमलों से हुआ।

हमारे वैज्ञानिक गृह-पत्रिका में भी रोचक लेख और कविताएँ लिख रहे हैं। उनके परिवार के सदस्य भी बड़े मनोयोग से पत्रिका को बेहतर बनाने में अपना सहयोग देते हैं। अभिव्यक्ति का 18वां अंक देखकर सचमुच बहुत प्रसन्नता हो रही है। स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में इस अंक को "आज़ादी का अमृत महोत्सव विशेषांक" के रूप में तैयार किया गया है। लेखक, संपादक मंडल और इस कार्य से जुड़े सभी व्यक्ति सराहना के पात्र हैं। पत्रिका की प्रगति के लिए सबको शुभकामनाएँ।

जय हिंद।

(एन. एम. देसाई)

वी. के. जैन भा.दू.से.
नियंत्रक, सैक एवं
सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

संदेश

समय का पहिया घूमता रहता है। देश को स्वतंत्र हुए 75 वर्ष हो गए हैं। पूरे देश में 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। हमारे केंद्र में भी इस उपलक्ष्य में पूरे वर्ष विविध कार्यक्रम और प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। इन सबका उद्देश्य था- वर्तमान पीढ़ी को देश की स्वतंत्रता के लिए हुए संघर्ष और उस समय के लोगों द्वारा दिए गए बलिदानों के बारे में जागरुक करना। उन्हें यह समझाना कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए देश को और देश के निवासियों को बड़ी-बड़ी कीमतें चुकानी पड़ी हैं और अपनी स्वतंत्रता को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए।

हमारा केंद्र जितना तकनीकी गतिविधियों में अग्रणी है, उतना ही राजभाषा संबंधी कार्यान्वयन में भी सक्रिय है। अंतरिक्ष विभाग को इस वर्ष फिर राजभाषा विभाग द्वारा श्रेष्ठ हिंदी कार्यान्वयन के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। हमारी खुशी दोगुनी हो जाती है जब अन्य विभागों को अंतरिक्ष विभाग का उदाहरण दिया जाता है और कहा जाता है कि विशुद्ध तकनीकी विभाग होने पर भी विभाग में राजभाषा कार्यान्वयन अत्यंत गंभीरता और सक्रियता से किया जाता है।

कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने के साथ-साथ हम जनता की भाषा में ही अंतरिक्ष विज्ञान के प्रचार-प्रसार में भी जुटे हुए हैं। प्रतिवर्ष "भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियाँ" कार्यक्रम के माध्यम से सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों और जनता को अंतरिक्ष विज्ञान की नवीनतम जानकारी प्रदान करते हैं। हमारे वैज्ञानिक बच्चों को ध्यान में रखकर कई पुस्तकें लिख रहे हैं जिससे गूढ़ तकनीकी विषयों का ज्ञान सरल भाषा में दिया जा सके।

आशा है कि पाठकों को यह विशेषांक पसंद आएगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई।

वी.के.जैन
22/08/2022

(वी. के. जैन भा.दू.से.)

पाठकों की कलम से

'अभिव्यक्ति' पत्रिका में संकलित सभी साहित्यिक, सामाजिक, वैज्ञानिक/तकनीकी लेख एवं राजभाषा संबंधित गतिविधियाँ प्रशंसनीय हैं। मुख्य रूप से पत्रिका का मुखपृष्ठ प्रशंसनीय है, जिसमें 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' को दर्शाया गया है। विशेष रूप से पृष्ठ क्रमांक 06 पर 'ऊष्मा की कुछ रोचक बातें-11' लेख ज्ञानवर्धक लगा तथा पृष्ठ क्रमांक 35 पर 'एक कहानी शायद किन्हीं अपनों की' मार्मिक लगी, जिसमें कोरोना के कहर का चित्रण किया गया है। संक्षेप में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि संपूर्ण पत्रिका में निहित सभी लेख उत्तम कोटि के हैं।

आशा है कि 'अभिव्यक्ति' पत्रिका के आगामी अंक पाठकों के ज्ञानार्जन में मील का पत्थर सिद्ध होंगे।

इसी शुभकामना के साथ

-एम.जी. सोम शेखरन नायर
संयुक्त निदेशक (राजभाषा), अंतरिक्ष विभाग, बेंगलूरू

आपके द्वारा प्रेषित "अभिव्यक्ति" की सॉफ्ट प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। "अभिव्यक्ति" का नया अंक बहुत ही सुंदर बना है। इस पत्रिका द्वारा ऊष्मा से संबंधित रोचक बातें, योग की महत्ता, वातानुकूलक का तकनीकी परिचय, पहला कदम पृथ्वी की बहन की ओर, वर्ग पहेली एवं अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियाँ इत्यादि का परिचय बहुत अच्छे से दिया गया है। सभी विषयों के चित्र भी अत्यंत आकर्षक हैं। इसके लिए आपके कुशल संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

-मीनाक्षी सक्सेना
उप निदेशक (राजभाषा), एसडीएससी, शार, श्रीहरिकोटा

दिनांक 04.01.2022 को आपके द्वारा भेजी गई हिंदी गृहपत्रिका अभिव्यक्ति के 17 अंक का डिजिटल संस्करण पढ़ लिया। पत्रिका में प्रकाशित सभी तकनीकी तथा राजभाषा आलेख पठनीय, संग्रहणीय, अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा सूचनाप्रद हैं। पत्रिका की साज-सज्जा मनमोहक एवं उत्तम है। अभिव्यक्ति के संपादक मंडल को शुभकामनाएँ।

- डॉ. टी विजय शेखर
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, आईपीआरसी, महेंद्रगिरी

अभिव्यक्ति अंक 17 के विशेष पुरस्कार विजेता

रचना का शीर्षक	रचनाकार (श्री/ श्रीमती/ सुश्री/ डॉ.)	भाषा वर्ग	पुरस्कार
गद्य रचनाओं को पुरस्कार			
अंतर्राष्ट्रीय चार्टर: अंतरिक्ष एवं प्रमुख आपदाएँ	सी.पी. सिंह	हिंदी	I
मृदा की ईंटों का निर्माण एवं उपयोग से पूर्व की सावधानियाँ	पुरुषोत्तम गुप्ता	हिंदी	II
पुस्तक समीक्षा : Why Mars and Venus Collide?	भूपेन्द्र जैन, विवाहिती- सोमा करनावट	हिंदी	III
वर्ग पहेली	आरती सोनी, विवाहिती- आशिष सोनी	हिंदीतर	I
चित्र	प्रिंस सोनी, पुत्र- आशिष सोनी	हिंदीतर	II
बेटी की विदाई के बाद वाला घर	गायत्री भनारकर	हिंदीतर	III
पद्य रचनाओं को पुरस्कार			
कृत्रिम उपग्रह	अश्वनी कुमार	हिंदी	I
नदी की आत्मकथा	प्रतिभा तिवारी	हिंदी	II
नारी- विवशता या विशेषता	प्रभुलाल पंवार	हिंदी	III
कोरोना से कुछ सवाल	देवांग मांकड़	हिंदीतर	I
इच्छा तो होगी न!!	आशिष सोनी	हिंदीतर	II

राजभाषा गतिविधियां

पुरस्कार

- अंतरिक्ष विभाग को वर्ष 2021-22 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार 14 सितंबर, 2022 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय इनडोर स्टेडियम, सूरत (गुजरात) में संयुक्त रूप से आयोजित हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान माननीय श्री अमित शाह, गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार के कर-कमलों से अध्यक्ष, इसरो के प्रतिनिधि के रूप में श्री नीलेश एम. देसाई, निदेशक, सैक ने ग्रहण किया।
- कार्यालय में केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की विविध प्रतियोगिताओं के अंतर्गत 11 फरवरी को टंकण प्रतियोगिता, 17 फरवरी को टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता तथा 21 फरवरी को निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में श्री अपूर्व प्रजापति को हिंदीतर भाषी क्षेत्र तृतीय पुरस्कार एवं श्री देवांग मांकड को केंद्र प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता में श्री दिनेश कुमार अग्रवाल को हिंदी भाषा द्वितीय पुरस्कार और अपूर्व प्रजापति को केंद्र प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। अखिल भारतीय विज्ञान तथा तकनीकी विषयों पर हिंदी लेख प्रतियोगिता में श्री जयरव जनसारी एवं डॉ. वरेन्द्र वर्मा (संयुक्त रूप से) अखिल भारतीय तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- नराकास, अहमदाबाद के तत्वावधान में भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) द्वारा जून 2022 में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में श्री बी.एन.शर्मा को प्रथम, श्री जगदम्बा प्रसाद को द्वितीय एवं श्री इंदनील मिश्रा को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुए।
- नराकास, अहमदाबाद के तत्वावधान में रेल इंजीनियरी कारखाना, साबरमती द्वारा दिसंबर 2021 में आयोजित 'चित्र देखो, कहानी लिखो' प्रतियोगिता में श्री देवांग मांकड को प्रथम, श्री जितेन्द्र कुमार एवं श्री आशीष सोनी को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुए।

प्रकाशन/विमोचन

- सैक-इसरो के संवेदक विकास क्षेत्र (सेडा) के वैज्ञानिकों द्वारा लिखी गई पुस्तक 'भारतीय विद्युत प्रकाशीय नीतभारों का विकास – एक चित्रमयी काव्यगाथा' का विमोचन 14 सितंबर 2022 को माननीय श्री अमित शाह, गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार के कर-कमलों से गुजरात राज्य के सूरत शहर में आयोजित हिन्दी दिवस एवं द्वितीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान किया गया।
- निदेशक, सैक द्वारा 31 दिसंबर 2021को केंद्र की हिंदी गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" के 17वें अंक की ई-प्रति का विमोचन किया गया। पत्रिका की ई-प्रति अन्य इसरो केंद्रों/यूनिटों को प्रेषित की गई तथा सैक राजभाषा पोर्टल पर अपलोड की गई।
- द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की स्मारिका में सैक के 02 वैज्ञानिकों – श्री आशिष सोनी और श्रीमती निधि सिंह के लेख प्रकाशित हुए।

हिंदी तकनीकी संगोष्ठी

- अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में 07 अप्रैल 2022 को "भारतीय परिप्रेक्ष्य में ग्रहीय अन्वेषण और समानव अंतरिक्ष कार्यक्रम" विषय पर हिंदी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री नीलेश एम. देसाई, निदेशक, सैक की अध्यक्षता में संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया, इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री एस.के. श्रीवास्तवआई.एफ.एस. अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, गुजरात सरकार उपस्थित रहे। अंतरिक्ष विभाग से प्राप्त निर्देशानुसार डेकू और पीआरएल प्रतिभागी यूनिट के तौर पर संगोष्ठी में शामिल हुए। संगोष्ठी में पावर पाइन्ट और पोस्टर माध्यम से कुल 80 लेख प्रस्तुत किए गए। तकनीकी सत्रों के बाद पैनल चर्चा रखी गई जिसमें सभी सत्राध्यक्षों ने आलेखों और प्रस्तुतियों पर विस्तार से चर्चा की। अंत में पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किया

गया जिसमें संगोष्ठी की श्रेष्ठ प्रस्तुतियों, कर्मचारियों तथा तकनीकी एवं प्रशासनिक प्रभागों के लिए लागू विविध प्रोत्साहन योजनाओं, विश्व हिंदी दिवस की प्रतियोगिताओं और कक्षा 1 से कक्षा 9 के बच्चों के हिन्दी योग्यता पुरस्कार वितरित किए गए।

हिंदी माह

- केंद्र में विगत कई वर्षों से हिंदी माह का आयोजन किया जाता है जिसमें कार्यालय के कर्मचारी अत्यंत उत्साह से प्रतिभागिता करते हैं। इस वर्ष हिंदी माह का आयोजन 14 सितंबर-14 अक्तूबर के दौरान किया जा रहा है। आयोजित होने वाली सभी प्रतियोगिताओं में 'क', 'ख' एवं 'ग' क्षेत्र भाषा वर्ग के कर्मचारियों को अलग-अलग पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। इस वर्ष कर्मचारियों के लिए 9 प्रतियोगिताएँ और उनके परिवार के सदस्यों के लिए 6 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

विश्व हिंदी दिवस

- विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 10 जनवरी 2022 को दो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कोविड-19 दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए दोनों प्रतियोगिताएँ ऑनलाइन/ हाइब्रिड माध्यम से आयोजित की गईं। पूर्वाह्न में "अपनी हिंदी परखें" प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों से हिंदी भाषा, व्याकरण, साहित्य और राजभाषा संबंधी बहु-विकल्पी प्रश्न पूछे गए। इस प्रतियोगिता में 401 कर्मचारियों ने भाग लिया। अपराह्न में "हिंदी काव्य प्रस्तुति" नामक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने प्रसिद्ध कवियों की रचनाएं प्रस्तुत कीं। इस प्रतियोगिता को भी काफी अच्छा प्रतिभाव प्राप्त हुआ और 35 कर्मचारियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

गणतंत्र दिवस

- निदेशक, सैक ने 26 जनवरी 2022 को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र परिसर में गणतंत्र दिवस के अवसर पर उपस्थित जनसमूह को हिंदी में संबोधित किया। गणतंत्र दिवस के अवसर पर निदेशक, सैक के कर-कमलों से 10वीं और 12वीं में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले कर्मचारियों के बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

राजभाषा कार्यशाला

- सैक में प्रत्येक तिमाही के दौरान राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। वर्ष के दौरान 02 मार्च 2022, 18 मई 2022 एवं 08 अगस्त 2022 को क्रमश: राजभाषा समन्यवकों, प्रशासनिक क्षेत्र के अधिकारियों एवं नवनियुक्त वैज्ञानिक/अभियंता वर्ग के कर्मचारियों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के दौरान संघ की राजभाषा नीति, नियम, कार्यान्वयन तथा कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने संबंधी प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक

- राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक की 168वीं बैठक 03 मार्च 2022 को, 169वीं बैठक 13 मई 2022 को और 170वीं बैठक 24 अगस्त 2022 को आयोजित की गई। निदेशक, सैक की अध्यक्षता में आयोजित इन बैठकों में संबंधित तिमाहियों के दौरान केंद्र में राजभाषा नीति के अनुपालन की समीक्षा की गई। बैठकों में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित चर्चा की गई तथा केंद्र में प्रभावी राजभाषा कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

आंतरिक राजभाषा निरीक्षण

- केंद्र में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए शत-प्रतिशत कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने हेतु तकनीकी क्षेत्र के नए अनुभागों को नामित किया गया। आंतरिक समीक्षा समिति द्वारा कुल 31 प्रभागों/ अनुभागों का राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में निरीक्षण किया गया। निरीक्षण रिपोर्ट तैयार कर निदेशक महोदय के समक्ष प्रस्तुत की गई और अनुवर्ती कार्रवाई के लिए संबंधित प्रभागों को परिचालित की गई।

हिंदी प्रशिक्षण

- अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में हिंदी शिक्षण योजना के भाषा प्रशिक्षण के अंतर्गत प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ और पारंगत प्रशिक्षणों की परीक्षाएँ आयोजित की गईं। इन परीक्षाओं में क्रमशः 2, 13, 3 और 17 कर्मचारी उपस्थित रहे एवं सभी प्रशिक्षणार्थी अच्छे अंक से उत्तीर्ण हुए।
- जुलाई 2022 से मई 2023 सत्र के दौरान 05 कर्मचारियों को प्रवीण प्रशिक्षण एवं 01 कर्मचारी को प्राज्ञ प्रशिक्षण हेतु नामित किया गया है, जो मई 2023 में परीक्षा देंगे। 04 कर्मचारियों को प्रवीण प्रशिक्षण (प्राइवेट) हेतु नामित किया गया है जो नवंबर-2022 में परीक्षा देंगे।
- अगस्त 2022-जनवरी 2023 सत्र के लिए 03 प्रशासनिक कार्मिकों को हिंदी टंकण प्रशिक्षण के लिए नामित किया गया है।

विविध प्रोत्साहन योजनाएँ

- वर्ष 2022-23 के दौरान अधिकतर कार्यालयीन काम हिंदी में करने हेतु अंतरिक्ष राजभाषा प्रोत्साहन योजना (सोलिस) लागू की गई। वर्ष 2021-22 की प्रोत्साहन योजना (सोलिस) के अंतर्गत सैक से 74 एवं डेकू से 13 स्टाफ सदस्यों तथा ड्राइवर/एटेंडेंट वर्ग कर्मचारियों से 07नामांकन प्राप्त हुए।
- हिंदी माह 2022 के दौरान अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए विशेष प्रोत्साहन योजना लागू की गई।
- सत्र 2021-22 में कक्षा 1 से 12 में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले सैक/डेकू कर्मचारियों के आश्रित बच्चों हेतु 'राजभाषा योग्यता पुरस्कार' योजना लागू की गई।
- सोलिस के अंतर्गत पुस्तक पठन योजना लागू की गई।
- तकनीकी एवं प्रशासनिक अनुभागों में हिंदी कार्यान्वयन को बढ़ावा

देने के उद्देश्य से वर्ष के दौरान प्रोत्साहन योजना लागू की गई।

- केंद्र में अधिकारियों द्वारा हिंदी में डिक्टेशन देने हेतु प्रोत्साहन योजना लागू की गई।

वेबसाइट

सैक की इंटरनेट साइट व्योम पर हिंदी संस्करण नियमित रूप से अद्यतित किया जाता है। सैक राजभाषा पोर्टल पर हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित सभी जानकारियां अपलोड की जाती है एवं नियमित रूप से उसको अद्यतित किया जाता है।

अन्य गतिविधियाँ

- अंतरिक्ष विभाग द्वारा जारी विक्रम साराभाई मौलिक हिंदी पुस्तक लेखन योजना के अंतर्गत 12 पुस्तकें लिखी जानी प्रस्तावित है। अब तक केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा लिखी गई 08 पुस्तकें प्राप्त हो चुकी हैं। विक्रम साराभाई मौलिक पुस्तक लेखन योजना के अंतर्गत अंतरिक्ष उपयोग केंद्र की 03 पुस्तकें आगे की कार्रवाई के लिए अंतरिक्ष विभाग, बेंगलूरु अग्रेषित की गई।
- तिमाही प्रगति रिपोर्ट को मंगवाने हेतु आईटीएनडी टीम द्वारा 2 लेयर सॉफ्टवेयर विकसित किया गया है। इसमें राजभाषा समन्वयक द्वारा रिपोर्ट ऑनलाइन भरकर उनके संबंधित अनुभाग/प्रभाग प्रधान को अनुमोदन हेतु प्रस्तुत की जाती है। तत्पश्चात् अनुभाग/प्रभाग प्रधान द्वारा रिपोर्ट हिंदी अनुभाग को आवश्यक कार्रवाई हेतु भेजी जाती है।
- केंद्र के सेवानिवृत होने वाले कार्मिकों के लिए प्रत्येक माह आयोजित होने वाले विदाई समारोह संबंधी सभी कार्य हिंदी में किए गए।
- केंद्र की मासिक प्रगति रिपोर्ट का हर माह नियमित रूप से हिंदी रूपांतरण तैयार कर विभाग को प्रेषित किया गया।
- स्वच्छता पखवाड़ा-2022 के अंतर्गत ऑनलाइन प्रश्नमंच प्रतियोगिता द्विभाषी रूप में आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में 350 कर्मचारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर हिंदी में भी निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। पुरस्कार विजेताओं के प्रमाण-पत्र हिंदी में तैयार किए गए।
- सीएसआईआर-एनएएल द्वारा राष्ट्रीय स्तर हिंदी वेबिनार-अंश में प्रतिभागिता के लिए केंद्र से 04 तकनीकी आलेख प्रेषित किए गए।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद के तत्वावधान में आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 02 अप्रैल 2022 को आयोजित पदयात्रा कार्यक्रम (कोचरब आश्रम से साबरमती आश्रम) में सैक और डेकू के 25 कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद की हिंदी गृह-पत्रिका 'अंकुर' में प्रकाशन के लिए सैक के कर्मचारियों की 08 रचनाएँ अग्रेषित की गई।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), बड़ौदा द्वारा 18 जुलाई 2022 को आयोजित राष्ट्रीय स्तर सेमिनार के लिए 'डिजिटल मुद्रा' विषय पर केंद्र के 06 आलेखों में से 02 आलेख प्रस्तुति हेतु और 04 आलेख चर्चा हेतु स्वीकृत हुए।
- राजभाषा विभाग द्वारा जारी लक्ष्यों के अनुसार वर्ष 2021-22 के दौरान पुस्तकालय में हिंदी पुस्तकों की खरीद का विवरण निम्नानुसार है-

सामान्य पुस्तकों पर किया गया कुल खर्च	अंग्रेजी पुस्तकों पर किया गया कुल खर्च	हिंदी पुस्तकों पर किया गया खर्च	हिंदी पुस्तकों पर किए गए खर्च का प्रतिशत	कुल हिंदी पुस्तकों की संख्या
रु. 1,37,107/-	रु. 63,629.30/-	रु.73,477.70/-	53.59%	146 पुस्तकें एवं 12 पत्रिकाएं

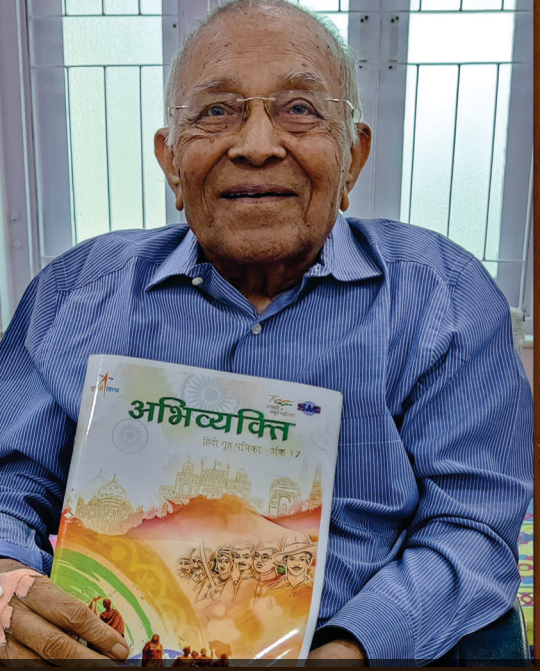

भारत के स्वतंत्रता सेनानी श्री नंदलाल शाह जी के साथ साक्षात्कार

भारतीय स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में, गृह-पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के आगामी अंक को एक विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने के प्रयासों के क्रम में यह तय हुआ कि स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़े किसी स्वतंत्रता सेनानी का साक्षात्कार यदि लिया जाए तो यह बहुत प्रेरणादायी, रोचक एवं पठनीय तो होगा ही, साथ ही साथ स्वतंत्रता संग्राम में समर्पित अनेक गुमनाम या अल्प-ज्ञात सेनानियों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि एवं आभार-ज्ञापन होगा।

इस दिशा में किये गए अथक प्रयासों से स्वतंत्रता सेनानी श्री नंदलाल शाह जी, उम्र 96 वर्ष, के अहमदाबाद में ही होने का पता चला। श्री नंदलाल शाह जी ने पढ़ाई करते हुए ही अपने आप को देश को समर्पित कर दिया था। श्री शाह जी से उनके इस संघर्ष, भोगी गयी यातनाओं, और स्वतंत्रता पश्चात के जीवन इत्यादि से जुड़े प्रश्नों, उनके इस योगदान के लिये आभार-ज्ञापन एवं एक साक्षात् स्वतंत्रता सेनानी से मिलने की उत्कंठा के साथ संपादक मंडल द्वारा अगस्त 2022 में उनके आवास पर ही साक्षात्कार लिया गया। श्री नंदलाल शाह जी से साक्षात्कार के सम्पादित अंश प्रस्तुत हैं।

- संपादक मंडल

चित्र: श्री नंदलाल शाह जी एवं उनके परिवार-जनों के साथ संपादक मंडल; अभिव्यक्ति के पिछले अंक के साथ श्री नंदलाल शाह

प्र.- महोदय, हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। इस अवसर पर हम सभी गौरवान्वित हैं। यह आजादी हमें आप जैसे स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान के कारण ही प्राप्त हो सकी है। महोदय, इन 75 वर्षों में भारत की प्रगति और उपलब्धियों के बारे में आपके क्या विचार हैं?

उत्तर: आज भारत काफी प्रगति कर चुका है। हमारा देश हर क्षेत्र में प्रगति करते हुए काफी आगे निकल चुका है। फिर भी अभी काफी कुछ किया जाना शेष है। हमें विकासशील देश से विकसित देश बनने की ओर आगे कदम उठाने हैं।

प्र.- महोदय, आप अपने बारे में हमें कुछ बताइए?

उत्तर- मेरा जन्म सुरेन्द्रनगर जिले के लींबड़ी गाँव में हुआ था। बालपन से ही मुझे देश पर मर-मिटने के संस्कार प्राप्त हुए थे। अंग्रेजों द्वारा जनता पर किए जा रहे अन्याय के कारण गांव के लोगों को बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। इसलिए मेरे पिताजी घर, अनाज व अपना कपास का व्यापार सब कुछ छोड़कर सुरेन्द्रनगर आ गए और मेरा दाखिला अहमदाबाद के सी.एन.विद्यालय में करा दिया। मेरे रहने का प्रबंध विद्यालय से संलग्न छात्रावास में किया गया।

प्र.- महोदय स्वतंत्रता संग्राम में आप किस तरह से जुड़े?

उत्तर- 1942 में जब "अगस्त क्रांति" शुरू हुई, तब मैं अहमदाबाद के सी.एन. विद्यालय में मैट्रिक की पढ़ाई कर रहा था। सभी स्कूलों एवं कॉलेजों में अचानक अवकाश घोषित कर दिया गया और विद्यार्थियों को बारी-बारी से सुरक्षित उनके निवास स्थान भेजा जाने लगा। उस समय विद्यार्थियों के मन में आजादी का जज्बा कूट-कूट कर भरा हुआ था। वे सहर्ष देश के लिए मर-मिटने को तैयार थे। सत्याग्रह, हड़ताल, क्रांतिवीरों की सभाएं, लाठीचार्ज और चारों तरफ स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए चल रही हलचल से मेरा मन भी बेचैन था। एक बार मैं किसी बहाने से श्री बाड़ीलाल डगली जोकि मेरे साथ ही पढ़ाई करते थे, के पास अहमदाबाद पहुँच गया। उन्होंने मुझे महात्मा गांधी द्वारा लिखित 'हिंद छोड़ो' पुस्तक की कुछ प्रतियां दीं। उन्होंने मुझसे कहा कि इस पुस्तक पर प्रतिबंध लगा हुआ है, इसलिए इसे गुप्त रूप से आम लोगों तक पहुँचाना है। यह स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में बढ़ाया गया मेरा पहला कदम था।

प्र.- फिर आगे क्या आप उस पुस्तक को लोगों तक पहुँचा पाए?

उत्तर- पुस्तकें लेकर मैं सुरेन्द्रनगर जाने के लिए अहमदाबाद स्टेशन पहुँचा। मुझे वहां यह देखकर अत्यंत आश्चर्य हुआ कि यात्रियों से अधिक संख्या में

वहां पुलिस मौजूद थी। कुछ पुलिसवाले बिना वर्दी के भी थे। अचानक पांच-छह लोगों ने मुझे घेर लिया और पूछताछ करने लगे। मैंने उनसे कहा कि स्कूल बंद हो गए हैं, इसलिए पढ़ाई जारी रखने हेतु छात्रावास से पुस्तकें लेने अहमदाबाद आया था। मैंने अपना उत्तर अत्यंत सहज रहते हुए दिया था। अत: उन्हें मुझ पर शक नहीं हुआ और उन्होंने थैला भी नहीं देखा। मैं पकड़े जाने से बच गया। इससे मेरी झिझक थोड़ी खुल गई और बाद में इस प्रतिबंधित साहित्य को और तीन बार ले जाकर मैंने आम-जनता के बीच वितरित किया।

प्र.- महात्मा गांधी के अतिरिक्त भी गुजरात से कई स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। महोदय, आप अपने साथियों के बारे में भी हमें कुछ बताइए?

उत्तर- अगर मैं अपने नजदीकी साथियों की बात करूँ तो भोगीलाल मूणजी शाह, कानजी भिखा मेरे दो अन्य मित्र थे। इस प्रकार हम तीन लोगों का समूह था। हालांकि न वे मेरे बचपन के साथी थे, न ही हम स्कूल में साथ पढ़ते थे। किंतु हमारे दिल में देश की आजादी के लिए बलिदान देने की भावना जोरों पर थी। यही कारण था कि उन दोनों से कोई विशेष संपर्क-सूत्र न होने के बावजूद हम तीनों मित्र बन गए।

प्र.- महोदय, भोगावो कांड के बारे में आप हमें कुछ बताइए। इससे आप कैसे जुड़े और यह पूरा कांड क्या था?

उत्तर- एक बार वाड़ीभाई ने मुझे बम बनाने की सामग्री दी। देश भर में ट्रेनों को नुकसान पहुंचाने, बम फेंकने की घटनाएं घटित हो रही थीं। इसी उद्देश्य के लिए बम बनाने की सामग्री वाड़ीभाई ने मुझे दी। इस सामग्री में बंगाल की एक फैक्टरी से चोरी किए गए डायनामाइट, फ्यूज और अन्य विस्फोटक सामग्रियां थीं।

उन्होंने मुझसे कहा कि इससे तुम बम बनाओ। मैं रोमांचित हो उठा क्योंकि अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई उस समय पराकाष्ठा पर थी। एक दिन मैं और मेरे दोनों मित्र भोगीलाल मूणजी शाह और कानजी भिखा, मेरे घर की तीसरी मंजिल की छत पर पढ़ाई के कमरे में मिले। भोगीलाल विज्ञान का विद्यार्थी था।

हमने वाड़ीभाई द्वारा दी गई सामग्रियों तथा बाजार से कुछ सामग्रियां लाकर फायर बम बनाया। उस बम को यदि कहीं फेंका जाए तो टाइम कंट्रोल के कारण फटने के कुछ समय बाद उससे आग लग जाती थी। बम को तैयार करने के बाद हम उसका उपयोग करने के लिए लालायित हो उठे। उन्हीं दिनों एन.टी.एम. हाईस्कूल, सुरेन्द्रनगर के सामने के मैदान में एक सर्कस लगा।

सर्कस का मालिक एंग्लो-इंडियन था। कानजी भाई ने अंधेरे का सहारा लिया और सर्कस के एक तंबू के ऊपर बम फेंककर हमारे पास आ गया। हम लोग एक ओर खड़े होकर समय गिनने लगे। तभी तंबू में आग लगती दिखाई दी और लगभग 20 मिनट के अंदर पूरा शामियाना जलकर राख हो गया। किसी को इस बात का पता नहीं चला कि यह हमारा कृत्य था। इस बात ने हमारा उत्साह और अधिक बढ़ा दिया। एक दिन भोगीलाल ने एक और बम बनाया जिसे कानजी ने 10.01.1943 को सुरेन्द्रनगर की जेल पर फेंका। चारों ओर हाहाकार मच गया, क्योंकि सुरेन्द्रनगर के इतिहास में बम फेंके जाने की यह पहली घटना थी। इसके बाद एक और बम कानजी ने 18.01.1943 को मिलिट्री के लिए वर्दी बनाने वाली फैक्ट्री के ऊपर फेंका। इसके बाद हमारी नज़र मालगाड़ी पर थी। क्योंकि हम नुकसान तो मिलिट्री ट्रेन को पहुंचाना चाहते थे, किंतु कोई भी मिलिट्री ट्रेन वहां से नहीं गुजरती थी एवं मिलिट्री ट्रेन के बारे में जानकारी बहुत गुप्त भी रखी जाती थी। यह सुनिश्चित किया गया कि कोई स्पेश्यल ट्रेन अथवा पैसेंजर ट्रेन भूल से भी बम का शिकार न बने। कई दिनों की रेकी के बाद हमने एक मालगाड़ी को चुना। एक दिन अंधेरी रात को मैं और कानजीभाई पटरी उखाड़ने के औजार लेकर सुरेन्द्रनगर-राजकोट लाइन पर पहुंचे। हमने बहुत कोशिश की किंतु हम एक भी नट खोलने में सफल नहीं हो सके। उसी समय रेलवे इंजन सर्च लाइट लेकर वहां बार-बार चेकिंग चल रही थी। अत: हमें झाड़ी में छुपना पड़ा। सफलता प्राप्त किए बिना ही जैसे ही हम वापस आने लगे, उसी समय पुलिस ने हमें पकड़ लिया। हमने थैली की ओर दिखाते हुए कहा कि हम लोग पढ़ने गए थे और इस प्रकार हम बाल-बाल बच गए। हाँ पुलिस ने अगर थैली की जांच की होती, तो परिणाम कुछ और ही हो सकते थे।

इस असफलता एवं बाल-बाल बचने के बाद भी हमारे हौसले कम न हुए थे। एक दिन मैंने फिर बम बनाया, उस बम को मैंने 05.02.1943 को सुरेंद्रनगर से भावनगर जाने वाली ट्रेन में से भोगावो रेलवे पुल पर फेंका। ट्रेन को पुल के बाद तुरंत रोक दिया गया।

भागने की कोई संभावना न दिखती देख मैं अन्य यात्रियों के बीच मिल गया, किंतु दिन का समय था और यात्रियों की संख्या भी कम थी, इसीलिए मुझे पहचान लिया गया और मैं पकड़ा गया। एक-दो दिन के अंदर पुलिस ने मेरे बाकी दोनों साथियों को भी पकड़ लिया। हम तीन लोगों की टोली थी और हम लोग सुरेंद्रनगर पुलिस चौकी के नजदीक ही रहते थे।

हम तीनों को राजकोट की सेंट्रल जेल में अंधेरी कोठरी में रखा गया। हमारा केस सेशन कोर्ट में चला। यह केस "भोगावो बम केस" के रूप में प्रसिद्ध हो गया। भोगावो कांड का केस जिस जेल में चल रहा था, उसका जज एक अंग्रेज था, जोकि अधिक एवं कड़ी सजा सुनाने के लिए प्रख्यात था।

थोड़े दिन पूर्व ही करांची में ऐसे ही एक केस का नतीजा आया था, जिसमें हेमु कालानी नाम के व्यक्ति को फांसी की सजा सुनाई गई थी। हमारा केस भी काफी लंबा चला। उसी दरम्यान वह अंग्रेज जज इंग्लैण्ड चला गया और केस के एक महत्वपूर्ण गवाह फ्रांसिस की मृत्यु हो गई। भारत-छोड़ो आंदोलन एवं द्वितीय विश्व-युद्ध के कारण राजकीय वातावरण भी बदल रहा था। भोगीलाल को निर्दोष करार कर छोड़ दिया गया। मुझे और कानजीभाई को शंका का लाभ देते हुए बाद में छोड़ दिया गया। हमने 15 महीने से अधिक समय जेल में बिताया।

प्र.- महोदय, अंग्रेजों द्वारा आपको कारावास दिया गया था। कारावास में रहने के दौरान अंग्रेज स्वतंत्रता सेनानियों से किस तरह का व्यवहार करते थे?

उत्तर- मैंने कारावास में बिताए 15 महीनों के दौरान अनेक यातनाएं सहीं, पर उस समय आज़ादी पाने का उत्साह इतना ज्यादा था कि हम उनको भी सह जाते थे या उनसे निकलने का रास्ता खोज लेते थे। हमें जो भोजन दिया जाता था, उसमें रोटी के बीच में रेत भर दी जाती थी।

हम रोटी को पानी के बर्तन में भिगा देते थे, जिससे रेत नीचे बैठ जाती थी, और रोटी गल कर ऊपर आ जाती थी, और इस प्रकार हम रोटी खाते थे।

हमने अंग्रेजों की भयंकर यातनाओं का सामना किया।

जेल में रहते हुए हमसे विभिन्न प्रकार की सामग्रियां बनवाई जाती थीं। काम के बाद जो थोड़ा-बहुत समय बचता था, उसमें मैं गीता, बाइबल, महाभारत, रामायण आदि ग्रंथ पढ़ा करता था।

प्र.– महोदय, 75 वर्षों में भारत के लिए आपको सबसे ज्यादा खुशी कब मिली?

उत्तर- 30 जुलाई 2004 को मैं अपने पोते के साथ ब्रिटिश एयरवेज से यू.के. जा रहा था। हम बिजनेस क्लास में सफर कर रहे थे। तभी ब्रिटिश एयरवेज का एक एटेंडेंट आया और मेरे जूते उठाकर ऊपर की ओर रख दिए। मुझे यह देखकर अत्यंत खुशी मिली कि एक समय था जब अंग्रेज हम पर अत्याचार किया करते थे किंतु आज वह समय हमें देखने को मिल रहा है कि वे हमारी सेवा कर रहे हैं।

प्र.– महोदय, सरकार की तरफ से आपको कौन-कौन से सम्मान प्राप्त हुए हैं?

उत्तर-भारत की स्वतंत्रता के 25 वर्ष पूर्ण होने पर तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा मुझे ताम्र-पत्र से सम्मानित किया गया। प्रत्येक वर्ष स्वतंत्रता-सेनानियों को स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में राजभवन में सम्मानित किया जाता है। वर्ष 2020 में कोविड की विषम परिस्थितियों को देखते हुए जिला प्रशासन द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार अगस्त 2020 में स्वयं अहमदाबाद के उप कलेक्टर श्री जे.बी. देसाई ने मेरे निवास स्थान पर आकर मुझे सम्मानित किया।

प्र.– महोदय, आज की युवा पीढ़ी को आप क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर- मैंने जिस प्रकार से जीवन व्यतीत किया, मैं चाहता हूं कि आज की पीढ़ी उससे अनुशासनप्रियता की सीख ले।

मैं चाहता हूं कि उनका आने वाला जीवन स्वस्थ एवं संपन्न हो। वे सदैव मुस्कुराते हुए रहें। अपने देश का गौरव चारों ओर फैलाएं।

प्र.– क्या गांधीजी या सरदार वल्लभ भाई पटेल जी से आपकी कभी मुलाकात हुई?

उत्तर- इन लोगों से मेरी व्यक्तिगत मुलाकात तो कभी नहीं हो सकी, लेकिन गांधीजी की सभाओं में मैं अक्सर भाग लिया करता था। मैं उनकी विचारधारा से अत्यंत प्रेरित था।

प्र.- आजकल आपकी दिनचर्या क्या रहती है?

उत्तर- मुझे अनुशासित जीवन-शैली पसंद है। अपनी धर्म-पत्नी के अवसान के बाद मैं एकदम सात्विक जीवन व्यतीत कर रहा हूं।

रोजमर्रा के आहार में मैं चीनी एवं तैलीय सामग्री नहीं लेता हूं। मैने 90 वर्ष की आयु में तैराकी सीखी। मैंने 93 वर्ष की अवस्था तक कार भी चलाई है।

प्र.-जेल से छूटने के बाद आपने आजीविका के लिए क्या किया?

उत्तर: मैं, जीवन बीमा निगम में अधिकारी के रूप में संलग्न रहा और 31 वर्षों तक अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

प्र.- हमने सुना है कि आप समाज-सेवा के कार्य में भी संलग्न रहे, कृपया इस बारे में हमें कुछ बताइए?

उत्तर- लोगों को गंभीर रोगों के बारे में जानकारी देने के लिए मैंने इससे संबंधित साहित्य छपाकर नि:शुल्क उपलब्ध कराया।

मैंने अहमदाबाद के कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. रमेशभाई कापड़िया के 'यूनिवर्सल हीलिंग' प्रोग्राम में भी उपयोगी सेवाएं प्रदान की हैं। मुझे मानव-सेवा के लिए अनाथाश्रम और पशु-पक्षियों के आहार के लिए दान देना पंसद है।

श्री नंदलाल शाह जी के साक्षात्कार के बाद संपूर्ण संपादक मंडल अत्यंत रोमांचित अनुभव कर रहा था। साक्षात्कार के पश्चात् श्री नीरज माथुर, समूह निदेशक, मेसा-एएमएसजी द्वारा इंसरो के "भारतीय क्षेत्रीय नौवहन उपग्रह तंत्र (आईआरएनएसएस)" उपग्रह का मॉडल नंदलाल शाह जी को भेंट-स्वरूप अर्पित किया गया।

अंत में जब सभी सदस्यों ने प्रस्थान के लिए श्री नंदलाल शाह जी का अभिवादन किया तो उन्होंने अत्यंत स्नेहिल शब्दों के साथ मुस्कुराते हुए कहा कि अभी मैंने आप लोगों को जाने की इज़ाजत नहीं दी है।

सभी उनके शब्दों से नि:शब्द हो गए और उनके इस संदेश के साथ कि जीवन में चाहे कोई भी स्थिति हो उसका सामना सदा मुस्कुराते हुए करना चाहिए, उनसे फिर मिलने आने के आश्वासन के साथ विदा ली।

संपादक मंडल श्री नंदलाल शाह जी का साक्षात्कार करवाने के लिए उनके परिवार के सदस्यों, विशेषकर उनके पुत्र श्री किरीट एन. शाह एवं उनकी पत्नी का, तथा आवश्यक सभी प्रकार की अनुमतियों के लिए निदेशक, सैक का हृदय से आभार व्यक्त करता है।

श्री नन्दलाल शाह जी का जन्मदिन 26 सितम्बर को होता है। सैक,

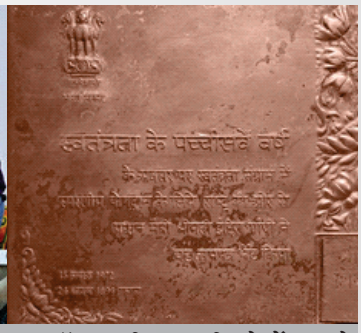

चित्र: "आईआरएनएसएस" उपग्रह का मॉडल श्री शाह जी को भेंट करते हुए श्री नीरज माथुर, समूह निदेशक, मेसा-एएमएसजी, सैक

स्वतंत्रता के 25 वर्ष पूर्ण होने पर तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा श्री शाह को प्रदत्त ताम्र-पत्र

अहमदाबाद की ओर से हम महोदय को उनके जन्मदिवस पर हार्दिक बधाई देकर उनके शतायु होने की कामना करना चाहते थे। किंतु संपादक मंडल अत्यंत दु:ख के साथ सूचित करता है कि इस पत्रिका के विमोचन से पूर्व ही दि. 10 सितंबर 2022 को श्री नंदलाल शाह जी का स्वर्गवास हो गया। ईश्वर उनकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें। देहावसान के पश्चात् भी वे जरूरतमंदों के काम आए। उनकी अंतिम इच्छानुसार उनके पुत्र ने उनकी देह एवं नेत्रदान कर आदर्श प्रस्तुत किया। हम सभी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

75 वर्ष: आजादी से अमृत महोत्सव तक का सफर

15 अगस्त के दिन आजाद भारत का जन्म था।
हृदय में उल्लास और चारों ओर आजादी की ही गूंज थी।
वो दिन ही खास था, हर भारतीय के मन में एक धुन सवार थी।
200 सालों की गुलामी से मिल रही जो आजादी,
वीरों की शहादत और वीरांगनाओं के बलिदान का परिणाम थी।

पर कुछ कदम ही तो चल पाए थे हम
कौन था दोषी, क्या नियति की चाल थी।
आजाद भारत का सपना दिखाया था जिन्होंने,
स्वतंत्रता का मोल समझाया था जिन्होंने,
वो राष्ट्रपिता देश को अनाथ करके चल दिए।

दृढ संकल्प से सपनों की डगर पर हमने कदम बढ़ाया,
1950 में संविधान को अपनाया था, मान लोकतंत्र का बढ़ाया
1951 में पहला चुनाव कराया था, वोट की शक्ति को पहचाना
आर्थिक समृद्धि के लिए पंचवर्षीय योजना को अपनाया,
तकनीकी की खोज में खड़गपुर में IIT का निर्माण कराया।

1954 में ट्राम्बे की धरा पर परमाणु संयंत्र लगाया,
1956 में अप्सरा के रूप में नाभिकीय संयंत्र लगाया,
1961 में कोलकाता और अहमदाबाद में IIM का निर्माण कराया।
पड़ोसी को हमने पंचशील का सिद्धांत बताया,
विश्व को गुट निरपेक्षता का महत्व समझाया।

छोटे-छोटे कदमों से चल रहे थे हम,
पर वो सह ना पाए थे, युद्ध के लिए तत्पर होकर आए थे।
दो-दो युद्धों का भार हमने सह लिया,
ताशकंद में शास्त्रीजी का बलिदान हमने सह लिया।
पर हम रुक नहीं सकते थे, हम झुक नहीं सकते थे।
यह संकल्प ही तो है जो हम फिर चल दिए।

1969 में अंतरिक्ष की खोज में ISRO की स्थापना कराई
देश अकाल से ग्रस्त था तो हरित क्रांति की अलख जगाई
दुग्ध उत्पादों के लिए श्वेत क्रांति का बिगुल बजाया
1971 में मानवीय अत्याचारों से ग्रस्त देश को
इंदिरा ने दुर्गा बनकर स्वतंत्र कराया।

1974 में पोखरण की धरा पर परमाणु शक्ति से परिचय कराया
1975 में आर्यभट्ट नामक पहले उपग्रह को अंतरिक्ष में पहुँचाया
1983 में क्रिकेट विश्व कप को कपिल ने हाथ में उठाया
1984 में राकेश शर्मा को अंतरिक्ष में पहुँचाया

फिर वो दिन भी आया स्वर्ण मंदिर में आतंक छाया
उसका मूल्य हमने इंदिरा के प्राणों से चुकाया
भोपाल गैस त्रासदी ने देश की नींद उड़ाई
जहर का घूंट हमने पी लिया, हर गम को हमने सह लिया
यह जिद ही तो है जो हम फिर चल दिए।

1988 में इसरो से सुदूर संवेदन उपग्रह का प्रक्षेपण कराया
1990 में कुवैत से भारतीयों की वापसी के लिए गंगा अभियान चलाया
1991 में आर्थिक मंदी के दौर में खुली अर्थव्यवस्था को अपनाया
देश के पहले सुपर कम्प्यूटर परम को स्थापित कराया

फिर से दुख के बादल छा गए, देश ने राजीव को खो दिया
मुम्बई भी सीरियल बम धमाकों से दहल गया
क्या रुक जाएं हम, क्या झुक जाएं हम, सपनों को देखना छोड़ दें
यह संकल्प ही तो है जो हम फिर चल दिए।

1995 में इंटरनेट पर हम पहली बार आए
1997 में कल्पना ने देश का मान बढ़ाया

पोखरण में अपनी शक्ति का फिर से भान कराया
वो फिर से आ गए, कारगिल में युद्ध के बादल छा गए
सैनिकों के बलिदानी साहस से हम विजय हो पाए।

2000 में स्वर्णिम चतुर्भुज योजना का शुभारंभ मिला
2005 में जन-जन को सूचना का अधिकार मिला
मनरेगा से ग्रामीणों को सुनिश्चित रोजगार मिला
2008 में चन्द्रयान से हमें चाँद तक पहचान मिली
2009 में आधार से हमें डिजिटल पहचान मिली

2010 में बच्चों को शिक्षा का अधिकार मिला
2011 में अन्ना हजारे से लोकपाल का मूलमंत्र मिला
2013 में मंगलयान से हमें मंगल ग्रह तक पहचान मिली
2015 में योजना आयोग की जगह नीति आयोग का साथ मिला

2016 में काले धन पर हमने नोटबंदी को लगाया
'एक राष्ट्र एक कर' के तहत हमने GST को अपनाया
2017 में इसरो ने 104 उपग्रहों के साथ इतिहास बनाया
2018 में स्टेच्यू ऑफ यूनिटी बना, लौह पुरूष का मान बढ़ाया

2019 में 370 व 35ए हटा कर जम्मू कश्मीर में
देश की एकता को सम्मान दिलाया
2020 में पूरा विश्व महामारी में लिपट गया
द्वार बंद थे, देश बंद था, डर के माहौल में हम सब बंद थे
वायरस की जंग में वैक्सीन का भरोसा मिला

आज हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं
आजादी के 75 वर्षों का संकल्प दोहरा रहे हैं
हम याद दिला रहे हैं कि हम चले कहाँ से थे
उतार चढ़ाव हैं कई, पर ठहरना नहीं है कहीं
विश्व गुरू के इस सफर में कठिनाई और भी हैं।

संकल्प है सपनों को साकार रूप देंगे
आजादी का मोल पता है, उसे संभाल कर रखेंगे
यह जन-गण-मन का अभिमान है
तिरंगे की शान का मान रखेंगे।
नए संकल्पों के साथ अमृत महोत्सव का सम्मान रखेंगे।

प्रभु लाल पँवार
सहायक

चित्तौड़गढ़ किले के दर्शन

वो प्रतीक है स्वाभिमान का, शौर्य और बलिदान का
जो साक्ष्य है अभिमान का, राजपूताना की शान का
गंभीरी और बेड़च के संगम पर खड़ा, वो गौरव है राजस्थान का
मैं चल पड़ी करने दर्शन जिसके, वो किला है चित्तौड़ का।।

स्वागत व सत्कार में खड़े हैं सात प्रवेश द्वार
भैरव, गणेश, पाडन, हनुमान
जोडला, राम, लक्ष्मण पोल है नाम जिनके
सबकी अपनी गाथा, अपना ही इतिहास है।
मैं चल पड़ी करने दर्शन जिसके, वो किला है चित्तौड़ का।।

सबसे पहले दर्शन हुए मेवाड़ की इष्ट देवी के
कालिका मंदिर में जो हैं विराजमान।
वो महामारू शैली में कुंभा का निर्माण है,
जो इतिहास है स्वाभिमान का, यह उसी का आशीष है।
मैं चल पड़ी करने दर्शन जिसके, वो किला है चित्तौड़ का।।

सामने ही खड़ा है विजय स्तंभ
वो नौ मंजिला सिर्फ इमारत ही नहीं
विश्वकोष है हिन्दू मूर्तिकला का
वो राणा कुंभा की धाक का प्रतीक है।
मैं चल पड़ी करने दर्शन जिसके, वो किला है चित्तौड़ का।।

फिर दर्शन हुए उनके, जो मगन थी कृष्ण में
समिद्धेश्वर और कुंभश्याम मंदिर
जो समर्पित है शिव और विष्णु को।
सतबीसी और जैन कीर्ति स्तंभ सी कलाकृति
जो प्रतीक है धार्मिक सहिष्णुता की।
मैं चल पड़ी करने दर्शन जिसके, वो किला है चित्तौड़ का।।

यहाँ तुलजा भवानी का मंदिर है
जो आराध्या हैं छत्रपति शिवाजी की।
यहाँ रमाबाई की श्रृंगार चंवरी है
देश पर न्यौछावर कर दी जिसने सारी संपत्ति,
उस स्वामिभक्त भामाशाह की हवेली यहाँ है।
मैं चल पड़ी करने दर्शन जिसके, वो किला है चित्तौड़ का।।

बाणमाता के दर्शन पाकर मैं धन्य हुई
जो कुलदेवी हैं इस गौरवान्वित वंश की।
पानी की व्यवस्था की खातिर
यहाँ गौमुख और सूर्यकुंड बने हैं,
यहाँ नीलकंठ महादेव और चारभुजा का मंदिर है।
मैं चल पड़ी करने दर्शन जिसके, वो किला है चित्तौड़ का।।

यहाँ नौलखा और फतेह प्रकाश महल है
जो उन्नत स्थापत्य कला के प्रतीक हैं।
मेवाड़ का भविष्य बचाने की खातिर
जिसने शीश कटा दिया पुत्र चंदन का
उस पन्नाधाय का स्मारक यहाँ है।
मैं चल पड़ी करने दर्शन जिसके, वो किला है चित्तौड़ का।।

यह गौरा-बादल, जयमल-फत्ता
बाघसिंह और कल्ला राठौड़ के बलिदान की भूमि है।
यहाँ महासतियों के जौहर स्थल हैं,
जो प्रतीक हैं उन वीरांगनाओं के बलिदान के
यह पद्मिनी, कर्मावती व फूलदेवी के सतीत्व की भूमि है।
मैं चल पड़ी करने दर्शन जिसके, वो किला है चित्तौड़ का।।

यह कर्मभूमि है बप्पा रावल और हम्मीर की
जिन्होंने नींव रखी उस स्वर्णिम इतिहास की।

यह कुंभा के कौशल की भूमि है
जिसने स्थापत्य और संगीत कला को नया आयाम दिया,
यह राणा सांगा के बलिदान की भूमि है।
मैं चल पड़ी करने दर्शन जिसके, वो किला है चित्तौड़ का।।

यह भूमि है स्वतंत्रता की खातिर मरने वालों की
जिन्होंने हर पल अपना मान रखा।
यह धरा है शौर्य और बलिदान की
जिसने हर पल आजादी की साँस ली।
यह है वो किला जिसने स्वाभिमान का पाठ पढ़ाया।
मैं चल पड़ी करने दर्शन जिसके, वो किला है चित्तौड़ का।।

सपना कुमारी
विवाहिती-प्रभु लाल पँवार (सहायक)

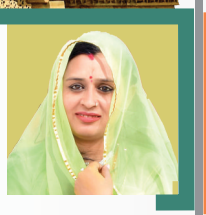

यूँ ही नहीं मेरा भारत महान कहलाता

धरती पर यह बसी हुई जो स्वर्णिम धरा हमारी
आओ जरा बताता हूं कैसी है भूमि हमारी।
भिन्न-भिन्न लोग यहां और भिन्न उनकी थाली,
कहीं तो पूरी-साक मिले और कहीं दम बिरयानी।
दुनिया को भी बड़ा अचरज है,
विविधा में एकता का लोहा खुद लौह पुरुष ने मनवाया है।
यूँ ही नहीं मेरा भारत महान कहलाता है।

लूटा बेशक भारत को विदेशी आक्रमणकर्ताओं ने
कभी अंग्रेजों ने तो कभी मुगल बादशाहों ने।
वीरता का परिचय तब भारत के सपूतों ने कराया,
शिवाजी, गांधी, सावरकर ने हिंदुस्तान का परचम लहराया।
मानी नहीं हार कभी निरंतर परिश्रम करते गए,
अपना स्वर्णिम इतिहास स्वयं ही हम लिखते गए।
तब जो लंबा लगता था हाथ से मुंह का रास्ता,
आज देख लो भारत ने दिया है दुनिया को देशी पास्ता।
यूँ ही नहीं मेरा भारत महान कहलाता है।

आया जो समय विकट महामारी फैली चारों-ओर,
हुई दुनिया लाचार देख रही तेरी ओर।
न छोटा न बड़ा भारत ने निस्वार्थ सेवा है दिखलाया,
वसुधैव कुटुम्बकम के संदेश को सही मायने में अपनाया।
निरोगी जीवन का भेद आयुर्वेद से ही तो खुल पाया है।
यूँ ही नहीं मेरा भारत महान कहलाता है।

पाल करण संजय
तकनीकी सहायक

बाबू कुंवर सिंह

जब रक्त से रंजित भूमि हुई
सब लोग पूछे कि बचे कैसे पानी
बाबू कुंवर सिंह का तब रुद्र अवतार हुआ
अस्सी के उम्र में इनका स्वरूप विस्तार हुआ

वो तो आजादी की थी पहली लड़ाई
कानपुर से नाना साहेब बनारस से लियाकत अली
और मंगल पांडे थे इनके सहभाई
पहली ही बार में जीत जाना था, ऐसी थी हिम्मत आई

आरा से भगा दिया लड़ते हुए उन फिरंगियों को
दानापुर के रेजिमेंट में तिलक हुआ उन बजरंगियों को
थे भोजवंश के वंशज और जगदीशपुर था गाँव
बूढ़े सूरमा के रक्त में जगा था आजादी का ताव

घोड़े से घोड़ा टकराया और लोगों से लोग
ऐसा वज्रघात हुआ और बने ऐसे योग
बिरवर के वीर भूमि में और लग गई ऐसी आग
अंग्रेज उस मुकाम से गए जैसे भाग

बिन दया के लड़ते रहे, मारते रहे उन निर्दयी को
घायल हाथ चढ़ा दिया काट के, बहती हुई गंगा मैया को
एक हाथ और एक घोड़े से करते रहे हुड़दंग
उन गोरों को धूल चटाकर जीत ली थी वो जंग

फिर खौला खून किसानों का और जगा जोश जवानों का
पसीना छूटा अंग्रेजों का और गोरे कप्तानों का
यही वीर की थी अंतिम विजय और अंतिम लड़ाई थी
बाबू कुंवर ने मरते दम तक अंग्रेजों को धूल चटाई थी

है नमन उन सब वीरों को जिसने दे दी बलिदान सही
चाहत थी आजादी और देश की शान सही
वीर वीरों की भूमि है भारत माँ के जयवादी को
अमृतोत्सव मना रहे पचहत्तर साल की आजादी को

जय हिंद जय भारत

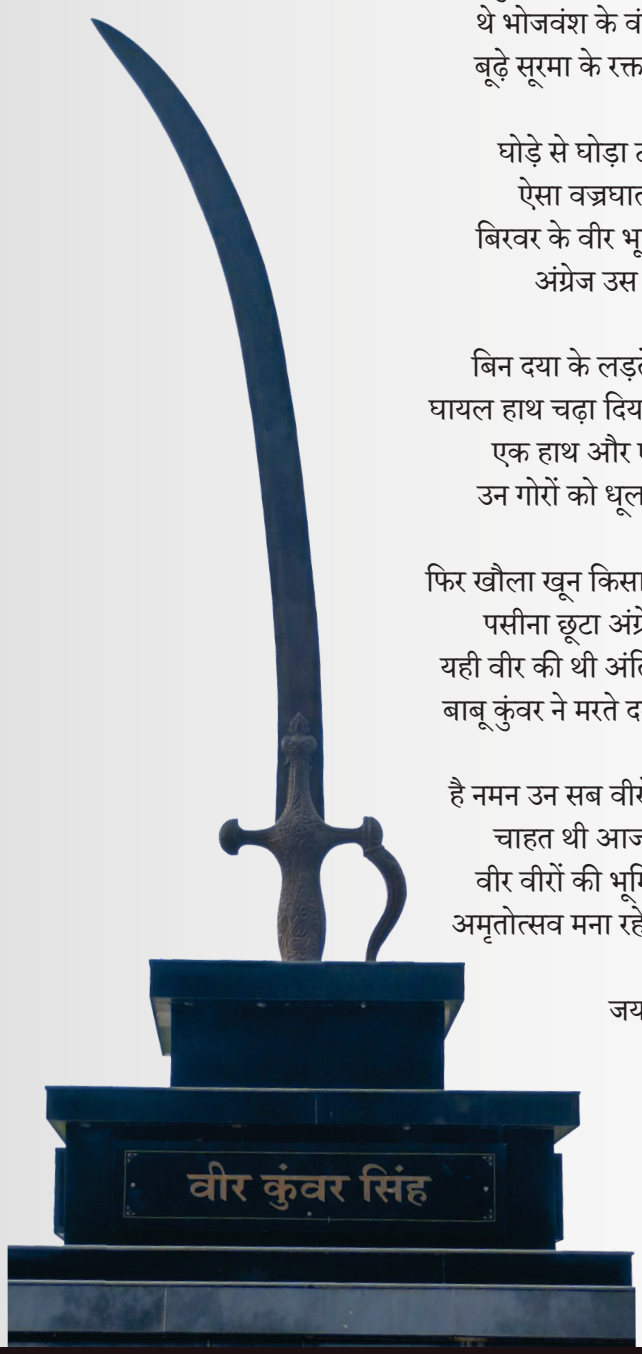

सिकन्दर कुमार शर्मा
वरि.सहायक

जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान और जय अनुसंधान

जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान के साथ-साथ जय अनुसंधान नव भारत का नारा है। इस वर्ष 76 वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा एक बार फिर इस नारे को सभी भारतवासियों के समक्ष दोहराया गया। इससे तात्पर्य है कि विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में हमें तेजी से कार्य करना है। इसकी पृष्ठभूमि में अगर हम जाएँ तो 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय देश के द्वितीय प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया था। उस समय देश में खाद्यान्न का भी अभाव था। देश के सैनिकों और किसानों का मनोबल बढ़ाने और प्रोत्साहित करने के लिए यह नारा दिया गया था।

हमारे देश के वीर जवानों की प्रशंसा के लिए शब्द भी कम ही पड़ते हैं। वर्ष 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय विकसित देशों जैसे आधुनिक तकनीक से लैस हथियार न होने के बावजूद भी हमारे जवानों ने अपने बुलंद हौसलों, उपलब्ध हथियारों और संसाधनों से दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए। स्वयं सैनिक परिवार से होने के कारण मुझे हमेशा इस बात से गर्व की अनुभूति होती है। वर्तमान में देश को सुरक्षा की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने में स्वदेशी कम्पनियाँ प्रयासरत हैं जिससे हमारे सैनिकों को नव-तकनीक से निर्मित हथियार मिल सकें। रेगिस्तान, बर्फीली चोटियों और तटीय क्षेत्रों इत्यादि में हमारे जवान सीमा प्रहरी बनकर देश के लिए एक अभेद्य सुरक्षा कवच बनाते हैं। देश की सुरक्षा करते हुए मातृभूमि पर मर-मिटने के लिए हमारे जवान सदैव तत्पर रहते हैं। शहीद सैनिकों की याद में 'राष्ट्रीय युद्ध स्मारक' बनाया गया है जो उन सैनिकों को समर्पित है जिन्होंने देश की रक्षा करते हुए अपने प्राण सहर्ष न्यौछावर कर दिए।

देश के किसान हमारे अन्नदाता हैं। अत्यधिक गर्मी, सर्दी या बारिश में भी वे अनाज, दलहन, तिलहन इत्यादि का उत्पादन सफलतापूर्वक करते हैं। वर्ष 1967-68 तथा वर्ष 1977-78 की अवधि में हुई हरित क्रांति ने भारत को खाद्यान्न के अभाव वाले देश की श्रेणी से निकालकर विश्व के अग्रणी कृषि देशों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। इस क्रान्ति का वैज्ञानिक पहलू उच्च किस्म के बीजों का उपयोग करना था। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) द्वारा उच्च उपज देने वाले बीज जैसे गेहूं, चावल, बाजरा और मक्का के बीजों की नयी किस्मों का विकास किया गया। इस क्रान्ति से देश खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हो गया और पर्याप्त भण्डार होने की वजह से निर्यात करने की स्थिति में आ गया था। इससे किसानों की आय में भी वृद्धि हुई जिससे उनके जीवन-यापन के तरीकों में सकारात्मक बदलाव आया। डिजिटल माध्यम से देश की सभी कृषि मंडियों को एकीकृत करके, मौसम का सटीक पूर्वानुमान लगाकर, बीज-उर्वरक-कीटनाशक की आसान पहुँच बना कर कृषि व्यापार में अभूतपूर्व वृद्धि की गयी है। निश्चय ही हमारे देश के किसानों को इसका लाभ मिलेगा जिससे उनका मनोबल बढ़ेगा।

'जय विज्ञान' का नारा स्वर्गीय पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने वर्ष 1998 में पोखरण-II परमाणु परीक्षण के सफल होने के बाद दिया था। इस ऑपरेशन का नेतृत्व डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम द्वारा किया गया था। उनका कहना था-'सपने, वे नहीं जो सोते हुए देखे जाएँ, बल्कि सपने वे हैं जो इंसान को सोने न दें। हमारे वैज्ञानिकों की दक्षता और कड़ी मेहनत की वजह से ही आज भारत की गिनती परमाणु शक्ति संपन्न देशों में होती है। परमाणु ऊर्जा का उपयोग देश की विकास गतिविधियों जैसे विद्युत् उत्पादन इत्यादि में किया जा रहा है। चिकित्सा, शिक्षा, सुरक्षा इत्यादि क्षेत्रों की प्रगति में विज्ञान का ही हाथ है क्योंकि यह तर्क और प्रायोगिक परीक्षणों पर आधारित है। बौद्धिक और मानसिक क्षमता में बढ़ोतरी करके विज्ञान ने समाज को सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाया है।

वर्ष 2019 में 106 वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस के समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान में जय अनुसंधान भी जोड़ दिया था। उन्होंने इस नए नारे का दोहराव कर इस वर्ष 76वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से समस्त देशवासियों का आह्वान किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अपने देश में ही अनुसंधान बढ़े। देश से अब प्रतिभा पलायन में कमी हो रही है और हम ब्रेन ड्रेन से ब्रेन गेन की ओर बढ़ रहे हैं। शोध की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध होने की वजह से विदेशों में काम करने वाले भारतीय वैज्ञानिक अब वापस लौट रहे हैं। स्वास्थ्य, आवास, स्वच्छ पेयजल, ऊर्जा, सुरक्षा उपकरण, संचार, कृषि उत्पादकता और खाद्य प्रसंस्करण इत्यादि क्षेत्रों में अनुसंधान निरंतर किया जा रहा है। इसरो (ISRO), सीएसआईआर (CSIR), डीआरडीओ (DRDO), आईसीएआर (ICAR), आइसीएमआर (ICMR), सीडैक (C-DAC), एनडीआरआई (NDRI), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IITs) और भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) जैसे कई विश्वविख्यात शोध संस्थान भारत में हैं। शोध कार्यों में हमारे देश ने काफी प्रगति की है। जनसाधारण को भारतीय शोधों के बारे में जानकारी देने और उनका प्रसार करने के लिए 'अवसर' (AWSAR-ऑगमेंटिंग राइटिंग स्किल्स फॉर आर्टिकुलेटिंग रिसर्च) इत्यादि योजनाएँ चलाई गयी हैं। प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को विज्ञान और शोध में कैरियर बनाने के अवसर प्रदान किये जा रहे हैं। त्रिभाषा (अंग्रेजी, हिंदी और क्षेत्रीय भाषा) में उपलब्ध शिक्षण पुस्तकों और शोध पत्रों की वजह से निश्चय ही देश के हर स्तर के नागरिकों की अनुसंधान में भागीदारी हो सकेगी। हम सभी देशवासी स्वतंत्र भारत के कर्म योद्धा हैं जिन्हें अनुसंधान के क्षेत्र में अपना सर्वोत्तम योगदान देकर भारत को विकसित देश की श्रेणी में लाना है।

निधि सिंह
वैज्ञा./अभि. एसएफ

लाल किला – यात्रा वृत्तांत

लाल किला भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित है। भारत के उत्तरी भाग से होने के कारण इंजीनियरिंग की परीक्षाओं के लिए मेरा दिल्ली आना जाना लगा रहता है। अतः मुझे कई बार लाल किले के भ्रमण का अवसर मिला। लाल पत्थरों से बने होने के कारण इसको लाल किले के नाम से जाना जाता है। इसका निर्माण मुग़ल शहंशाह शाहजहां ने करवाया था। किले का भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। लाल किला हमेशा से ही विदेशी ताकतों के विरुद्ध भारतवासियों के संघर्ष का प्रतीक रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सबसे पहले भारतीय झंडा लाल किले पर ही फहराया गया, तब से लेकर आज तक हर स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री लाल किले पर ध्वजारोहण करते हैं। ध्वजारोहण लाल किले के लाहौरी द्वार पर किया जाता है और फिर प्रधानमंत्री राष्ट्र को संबोधित करते हैं।

लाल किले के मुख्य आकर्षण:

1. लाहौरी द्वार और दिल्ली द्वार: लाल किले के दो द्वार हैं। इसमें से दिल्ली द्वार का प्रयोग आम जनता के लिए किया जाता है।

2. दीवान-ए-आम: लाल किले में स्थित दीवान-ए-आम का प्रयोग आम जनता की बात सुनने के लिए किया जाता था।

3. दीवान-ए-खास: यह एक सफ़ेद पत्थर से बनी हुई इमारत है जिसका प्रयोग व्यक्तिगत काम के लिए शाही परिवार के लोगों द्वारा किया जाता था।

4. हम्माम: यह इमारत स्नानागार है जिसका प्रयोग शाही परिवार के सदस्यों द्वारा किया जाता था। यह भी सफ़ेद पत्थर से बनी हुई है।

5. बावली: सीढ़ियों से नीचे उतरकर बावली है, जिसका प्रयोग पानी एकत्र करने के लिए होता था।

6. मोती मस्जिद: सफ़ेद पत्थर से बनी इस मस्जिद का प्रयोग नमाज़ पढ़ने के लिए किया जाता था।

लाल किले का स्वतंत्रता संग्राम में स्थान: सन् 1857 में हुई क्रान्ति के समय लाल किला विदेशी ताकतों के विरुद्ध भारत के संघर्ष में केंद्र बिंदु रहा। अंतिम मुग़ल शहंशाह बहादुर शाह ज़फर ने इसी किले से क्रांति का नेतृत्व किया था। सभी क्रांतिकारी नेताओं ने उनको अपना शहंशाह माना और फिर इसी लाल किले में योजनाएं आदि बनाकर अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति का बिगुल बजा दिया। अंग्रेज शासकों ने भी लाल किले के महत्व को समझकर सेनाबल का प्रयोग कर इस पर अपना कब्ज़ा करके 1857 की क्रान्ति को दबा दिया। बहादुर शाह ज़फर को भी बंदी बनाकर उनके बेटों का क़त्ल कर दिया गया। इसके साथ-साथ अंग्रेजों ने लाल किले की इमारत को भी काफी ध्वस्त कर दिया और बहुमूल्य पत्थरों, आभूषणों तथा चित्रकारी को भी लूट लिया गया था।

1857 की क्रान्ति के सौ सालों बाद नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में आज़ाद हिंद फ़ौज ने 'दिल्ली चलो' का नारा बुलंद किया। बाद में फ़ौज के लोगों को बंदी बना लिया गया और उन पर मुकदमा भी लाल किले में ही चलाया गया।

भारतवासियों के निरंतर प्रयास से 15 अगस्त 1947 को हमको स्वतंत्रता मिली और लाल किले पर तिरंगा फहराया गया।

समी उर रहमान
वैज्ञा./अभि. एसएफ

मास्टर दा की प्रेरणादायक कहानी

चटगांव बांग्लादेश का एक तटीय शहर है जो आजादी से पहले अविभाजित भारत का हिस्सा था। बहुत कम लोग जानते हैं कि चटगांव हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख स्थानों में से एक था। 1920 के आसपास, सूर्य सेन के नाम से पहचाने जाने वाले एक स्कूल शिक्षक ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। गांधी जी के असहयोग आंदोलन से प्रेरित होकर, श्री सेन ने चटगांव क्षेत्र के आसपास उस आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई और बाद में अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। अपने साथियों और छात्रों के बीच, श्री सेन को "मास्टर दा" के नाम से भी जाना जाता था। मास्टर दा ने अपने साथी स्वतंत्रता सेनानियों के साथ लगभग दो साल जेल में बिताए और बाद में 1928 में वे रिहा हुए। मास्टर दा एक उच्च संगठित व्यक्ति और चटगांव क्षेत्र में एक प्रभावशाली नेता थे। छात्र मास्टर दा को उनकी बौद्धिक क्षमता, ज्ञान और प्रेरणा के कारण प्यार करते थे। जब मास्टर दा जेल में थे, तब उन्होंने सोवियत संघ में कम्यूनिस्ट पार्टी के आंदोलन की किताबों का अध्ययन किया और वे स्वतंत्रता प्राप्त करने के उन विचारों से प्रभावित हुए। उन्होंने सोचा कि ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए, हमें किसी प्रकार की आउट-ऑफ-द-बॉक्स घटना करने की आवश्यकता है जो भारतीय क्षेत्र में अंग्रेजों के आधार को नष्ट कर सके। मास्टर दा ने अपने स्वतंत्रता सेनानी दोस्तों के साथ इतिहास की किताबों में "चटगांव शस्त्रागार छापे" के नाम से लोकप्रिय एक शस्त्रागार छापे की योजना बनाना शुरू किया।

चटगाँव के समुद्र तट के पास एक बड़ा फुटबॉल मैदान था। आमतौर पर उस क्षेत्र के युवा भारतीय उस क्षेत्र में फुटबॉल खेलना पसंद करते थे। एक सुबह, ब्रिटिश सेना ने अपने सैनिकों के लिए उस फुटबॉल मैदान पर कब्जा कर लिया। भारतीय लड़कों को फुटबॉल के मैदान में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी और उनमें से कुछ को ब्रिटिश सैनिकों द्वारा पीटा भी जाता था। वे युवा लोग वास्तव में बहुत पीड़ा और उदासी महसूस करते थे। उस फुटबॉल मैदान का ब्रिटिश सैन्य अड्डे में बदल जाना युवा मन को बहुत परेशान करने लगा था। एक युवा लड़के ने कहा कि चलो चलें और मास्टर दा से मिलें। वे ब्रिटिश सेना से फुटबॉल का मैदान हासिल करने में हमारी मदद कर सकते हैं। सभी लड़के फुटबॉल मैदान के पास स्थित मास्टर दा के छोटे से घर में गए। लड़कों ने पूरा प्रसंग मास्टर दा और उनके स्वतंत्रता सेनानी मित्रों को बताया जो उस समय उनके घर पर मौजूद थे। उस समय, मास्टर दा क्रांतिकारियों के साथ मंथन सत्र में थे कि हम कैसे चटगांव से ब्रिटिश शासन को हटा दें। मास्टर दा बहुत बुद्धिमान थे। वे जानते थे कि आजादी पाने के लिए हमें एक ऐसी टीम की जरूरत है जिसमें अनुभव और प्रतिभा दोनों हों। मास्टर दा के पास स्वतंत्रता सेनानियों की एक टीम थी लेकिन ब्रिटिश सेना के मुकाबले यह बहुत छोटी थी। मास्टर दा ने कहा कि हम आपके फुटबॉल मैदान को ब्रिटिश सेना से मुक्त करा देंगे लेकिन बदले में मुझे चटगांव से ब्रिटिश शासन को हटाने के लिए आपके समर्थन की आवश्यकता है। सभी युवा लड़कों ने तुरंत मास्टर दा की यह शर्त स्वीकार कर ली और भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का हिस्सा बन गए। अन्य क्रांतिकारियों के साथ मास्टर दा ने ब्रिटिश सैनिकों की पिटाई करके उस फुटबॉल मैदान को उन युवा भारतीयों के लिए मुक्त कर दिया। वे अब निडर होकर फुटबॉल खेल सकते थे।

18 अप्रैल 1930 की रात लगभग 10 बजे, मास्टर दा ने अपनी युवा टीम के साथ चटगांव शस्त्रागार, यूरोपीय क्लब, पुलिस लाइनों में लगे टेलीफोन/ टेलीग्राफ लाइनों और सभी संचार तंत्रों को काट दिया। उन्होंने चटगांव शस्त्रागार में भारतीय ध्वज भी फहराया। समस्या केवल यह थी कि वे गोला-बारूद का पता नहीं लगा पाए। इस छापेमारी में लगभग 65 क्रांतिकारियों ने भाग लिया। बाद में वे सभी, ब्रिटिश सैनिकों से छिपने के लिए अलग-अलग स्थानों पर चले गए। चटगांव शस्त्रागार भारत में ब्रिटिश शासन के लिए एक बड़ा झटका बन गया। दुनिया भर में

अब अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले भारतीयों की बहादुरी के किस्से प्रकाशित होने लगे थे।

मास्टर दा अंग्रेजों की हिट लिस्ट में थे और उन्हें किसी भी कीमत पर पकड़ने की जरूरत थी। मास्टर दा अपनी पहचान छिपाने के लिए मजदूर, दूधवाला और कभी-कभी सेल्समैन बन जाते थे। लगभग तीन वर्षों तक ब्रिटिश सेना मास्टर दा को पकड़ने में असफल रही। लेकिन मास्टर दा के एक रिश्तेदार ने ब्रिटिश सरकार द्वारा दी जाने वाली इनामी राशि के लालच में मास्टर दा के बारे में उन्हें जानकारी दे दी। मास्टर दा को अंततः अंग्रेजों ने पकड़ लिया। 12 जनवरी 1934 को ब्रिटिश प्रशासन द्वारा मास्टर दा को फांसी दी गई। हम में से बहुत से लोग जानते हैं कि 12 जनवरी स्वामी विवेकानंद की जन्म तिथि है, जिन्होंने एक बार कहा था कि "उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्त होने तक मत रुको"। मास्टर दा भारत की स्वतंत्रता के लिए वैचारिक रूप से भिन्न तरीके से उस सिद्धांत का पालन करते थे। मास्टर दा का प्रेरक चरित्र फिल्म निर्देशकों को बहुत आकर्षित करता है और उनके आधार पर तीन बायोपिक्स बनाई जा चुकी हैं। नवीनतम फिल्म जिसे "चटगांव" के नाम से जाना जाता है, का निर्देशन भारतीय मूल के नासा के पूर्व वैज्ञानिक ने किया था। भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने और हमें "आज़ादी का अमृत महोत्सव" के 75 साल पूरे होने का अवसर देने के लिए मास्टर दा जैसे हमारे क्रांतिकारियों का महत्वपूर्ण योगदान है।

इन्द्रनील मिश्रा
वैज्ञानिक/अभियंता एसएफ

महायोद्धा- राणा

छप्पन की आयु में, अपनी चावंड राजधानी में।
देखो एक महायोद्धा, सो रहा यमराज की गोदी में।।
शायद गिन रहा, वो अपने घावों को।
या फिर याद कर रहा, अपने चेतक की छलांगों को।।
शायद याद कर रहा, हल्दीघाटी की लाल माटी को।
या फिर याद कर रहा, अपने जगमाल भाई कपटी को।।
शायद याद कर रहा वो, अपने भारी भरकम शायक को।
या फिर याद कर रहा, अपने लंबे शलाका को।।
बचपन की आयु में, अपनी चित्तौड़ राजधानी में।
देखो एक महायोद्धा, सो रहा अपनी माँ की गोदी में।।

अरविंद मिश्र
वैज्ञा. सहायक - बी (मल्टीमीडिया)

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी- यात्रा संस्मरण

हर बार अवकाश में मेरा एक ही लक्ष्य होता है – हमारे भारत देश की विशेष जगहों का भ्रमण करना और वहाँ की खास वस्तु का यादगार के रूप में संकलन करना। इस बार स्वतंत्रता के 75 वर्ष के उपलक्ष्य में मैंने सपरिवार स्टैच्यू ऑफ यूनिटी देखने का मन बनाया। यह सोचकर ही कि स्टैच्यू ऑफ यूनिटी विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है जिसकी ऊँचाई 182 मीटर है, मेरा सर हमेशा गर्व से ऊँचा हो जाता है। हम कार से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की यात्रा पर निकले जो कि अहमदाबाद से लगभग 200 किमी दूर है। गुजरात के नर्मदा जिले के केवड़िया नगर में स्थापित यह प्रतिमा हमारे महान स्वतंत्रता सेनानी, पूर्व उप-प्रधानमंत्री और गृह-मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल जी को समर्पित है, जिन्होंने भारत की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाये रखा।

केवड़िया नगर पहुँचते ही हर तरफ हरियाली तथा पर्वतीय श्रृंखला ने मन मोह लिया। हमने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तथा अन्य पर्यटन स्थलों पर जाने के लिए रिक्शा लिया क्योंकि वहां निजी वाहन को एक नियत स्थल से आगे ले जाने की अनुमति नहीं थी। लौह पुरुष की उपाधि से सम्मानित सरदार जी की यह प्रतिमा उनके मजबूत इरादों को व्यक्त करती है जो अंग्रेजों के आगे कभी नहीं झुके। भारत के प्रसिद्ध वास्तुकार राम सुतार जी ने इस प्रतिमा का अभिकल्प किया है तथा इसका निर्माण भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनी लार्सेन एंड टूब्रो ने किया है। इस प्रतिमा के परिसर में देश के विभिन्न स्थानों से आए लोग थे जिससे अनेकता में एकता के साक्षात् दर्शन हुए। प्रतिमा के अन्दर लगभग 153 मीटर की ऊँचाई पर विजिटिंग गैलरी है जहाँ लिफ्ट से पहुंचा जा सकता है। यहाँ से सरदार सरोवर बाँध और नर्मदा घाटी का दृश्य बहुत ही मनोरम लगता है तथा अन्दर से इस प्रतिमा की अभियांत्रिकी को बेहतरीन तरीके से समझा जा सकता है।

रात को आठ बजे होने वाले स्टैच्यू ऑफ यूनिटी लाइट एंड साउंड शो के शुरू होने में समय था, इसलिए हमने पास के अन्य पर्यटन स्थलों का भ्रमण करने की योजना बनाई। इस परिसर की एक खूबी यह है कि बस के अलावा यहाँ केवल गुलाबी ई-रिक्शा चलते हैं जिन्हें प्रशिक्षित स्थानीय महिलाएं चलाती हैं। महिलाओं को सरकार द्वारा वाहन चलाना सीखने के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है जो कि निस्संदेह महिलाओं को सशक्त बनाने का एक सराहनीय कदम है। हमारी रिक्शा चालक ने एक गाइड का काम भी बखूबी निभाया। हमें आरोग्य वन, खलवानी इको-टूरिज्म, डीनो ट्रेल, जंगल सफारी इत्यादि प्रमुख स्थानों के बारे में विस्तार से बताया और घुमाया। मैं आपको आरोग्य वन के बारे में खासकर बताना चाहूंगी जिसे गुजरात के वन विभाग ने विकसित किया है। इस वन का विकास 'औषध मानव' के रूप में किया गया है। औषध मानव के प्रत्येक अंग में लगाये गए पौधे विशेष रूप से उसी अंग संबंधी रोग के चिकित्सीय उपयोग के लिए हैं। हमारी प्रकृति में ही न जाने कितने जटिल रोगों का इलाज छुपा हुआ है तथा हमारा भारत देश प्राचीन काल से ही आयुर्वेद से जुड़ा हुआ है – यह सोचकर ही हमें एक सुखद अनुभूति हुई। हमने विभिन्न प्रकार के आयुर्वेदिक पौधे (कपूर, मिंट व तुलसी इत्यादि) खरीदे जिससे हम इस वन से हमेशा जुड़े रहें। इसके बाद हम खलवानी इको-टूरिज्म पार्क देखने गए, जहाँ हमें प्रकृति को समीप से देखने का अवसर मिला। इसके बाद हम डीनो ट्रेल देखने गए जो एक कृत्रिम डायनासोर पार्क है। इसमें राजासौरस नर्मदेन्सिस का प्रतिरूप है जो कि एक भारतीय डायनासोर है जिसके अवशेष नर्मदा घाटी में मिले थे। जंगल सफारी में हमें विभिन्न जीव-जंतुओं को देखने का मौका मिला।

इसके बाद स्टैच्यू ऑफ यूनिटी शो शुरू होने का समय हो गया था तो हम ऑटो से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में वापस आ गए। इतनी ऊंची प्रतिमा पर लेज़र किरणों का शो काबिले तारीफ है। इस शो के माध्यम से सरदार वल्लभ जी का जीवन, उनका स्वतंत्रता संग्राम में मुख्य भूमिका निभाना, भारत की एकता को मजबूत करने में उनके योगदान को बखूबी दिखाया गया है। लगभग आधा घंटा चले इस शो को देखने के बाद हमें लगा कि भारत के सभी नागरिकों को सरदार जी से यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि अपने देश की एकता और अखंडता को हमेशा बनाए रखना है तथा इसके लिए हम सभी को सर्वोत्तम प्रयास करना चाहिए।

अभियांत्रिकी की मिसाल यह प्रतिमा हमारे महान स्वतंत्रता सेनानी सरदार वल्लभ जी को सच्ची श्रद्धांजलि है तथा हमें इस पर गर्व है। हमने वहाँ से इस प्रतिमा का छोटा प्रतिरूप तथा विभिन्न राज्यों की हस्तकला वस्तुएँ भी खरीदीं। इन्हीं सब यादों को समेटे हुए हम अपने घर वापस आये। आगे भी हम इसी तरह से अपने देश की ऐतिहासिक विरासतों को देखने की इच्छा रखते हैं। ये विरासतें हमारे बच्चों और युवाओं के लिए प्रेरणा-स्रोत हैं जिससे एक नये भारत का निर्माण होगा।

निधि सिंह
वैज्ञा./अभि. एसएफ

जलियांवाला बाग़ - अविस्मरणीय यात्रा

"पापा लॉन्ग वीकेंड आ रहा है, हमारी भी छुट्टियां हैं, चलो न कहीं घूमने चलते हैं"- शाम को ऑफिस से आते ही बच्चों ने फरमाइश सामने रख दी।

"हां बेटा जरूर। बोलो कहां चलना है"- ऋषि ने भी बच्चों के उत्साह को देखते हुए तुरंत हां कर दी। किसी हिल स्टेशन जाया जाए या तीर्थ स्थान या फिर किसी रिसॉर्ट में आराम करने जाएं, कहीं आसपास ही थोड़ा घूम आते हैं, ऐसे कई विकल्प सामने थे। समय कम था पर उत्साह बहुत ज्यादा।

"सुनिए, चलो ना हम अमृतसर चलते हैं" - रीना ने भी अपना मंतव्य रखा।

"अमृतसर.....पर थोड़ा दूर है ना, अब केवल तीन दिन में कैसे घूमेंगे वहां मम्मी। वहां स्वर्ण मंदिर है, वाघा बॉर्डर है और फिर जलियांवाला बाग भी तो है" - बेटी पलक ने कहा।

"हां, तभी तो वहां जाना है। मेरी बहुत सालों से वहां जाने की इच्छा है, पर हमेशा किसी न किसी वजह से टल जाता है। अब तो हर जगह की फ्लाइट है, दूरी मायने नहीं रखती।" - रीना ने जैसे अपनी ही बात पर मुहर लगा दी।

सभी ने बहुत उत्साह से वहां जाने की तैयारियां शुरू कर दीं। शाम सात बजे की फ्लाइट में बैठते ही मन मिले-जुले अहसास से भर उठा। बच्चों की चटर-पटर शुरू हो गई थी। ढाई घंटे का सफर तो चुटकियों में बीत गया। अंधेरी रात में दिए की लौ की तरह टिमटिमाती रोशनी से पूरा शहर नहाया हुआ था। ऊपर आसमान से इस दृश्य की छटा बहुत ही अद्भुत दिखाई दे रही थी।

सुबह-सुबह जल्दी ही नहा धोकर सब तैयार हो गए। बच्चों ने भी उठने में नखरे नहीं किए, आखिर स्वर्ण मंदिर में मत्था टेकने जो जाना था।

अमृत सरोवर के बीचों बीच स्थित सफेद संगमरमर के बने इस मंदिर की बाहरी परत सोने से मढ़ी गई है। इसकी नींव सोलहवीं सदी में सिखों के चौथे गुरु राम दास जी ने रखी थी। उसके बाद कई बार आतताइयों ने इसे नष्ट करने का प्रयास किया पर हर बार इसका पुनः निर्माण करवाया गया। यह सिखों की आस्था का सबसे बड़ा स्थान है। इसे हरमंदिर साहिब भी कहते है। यहां के लंगर में आने वाले दर्शनार्थियों के लिए मुफ्त में भोजन की चौबीस घंटे व्यवस्था है, यह विश्व का सबसे बड़ा भोजनालय है। यहां बड़े से बड़े पद वाला व्यक्ति भी अपनी सेवाएं देता है। साफ-सफाई, बर्तन से लेकर खाना बनाने परोसने तक की सेवाएं लोग बहुत भक्तिभाव से करते हैं।

स्वर्ण मंदिर में बहुत शांति की अनुभूति हुई। मन अलौकिक शांति से भर उठा। वहां लंगर में खाना खाने के बाद सबने जलियांवाला बाग की तरफ प्रस्थान किया। वहां जाते हुए सबके मन में दुख और उत्सुकता के मिले जुले भाव थे। यह स्वर्ण मंदिर के पास एक छोटा सा बगीचा है जिसने अत्यंत क्रूर एवं भयावह नरसंहार के साक्षी के रूप के इतिहास में अपना नाम दर्ज किया है।

नई फसल आने की खुशी में पूरे पंजाब में मनाया जाने वाला बैसाखी का त्योहार, जब प्रत्येक घर का प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में एक नई ऊर्जा महसूस करता है, उसी पवित्र दिन 13 अप्रैल को सन् 1919 में इस बगीचे ने बच्चों, महिलाओं, बुजुर्गों और पुरुषों का ऐसा जघन्य नरसंहार देखा जिसकी कल्पना करने पर भी आत्मा कांप उठती है।

देश आजादी के लिए लड़ रहा था, जिसमें अनगिनत लोग अपने अनुसार योगदान दे रहे थे। जब महात्मा गांधी और कई वरिष्ठ लोकप्रिय नेताओं के पंजाब प्रवेश पर अंग्रेजों ने पाबंदी लगा दी, तब उसके विरोध में सैकड़ों लोग जलियांवाला बाग में एकत्रित हुए। उन लोगों के अलावा, बैसाखी के पवित्र अवसर पर आसपास के गांव से आए हुए

बहुत से परिवार मेले और उत्सव का आनंद उठाने आए थे। लोग अपने परिवार और मित्रों संग जब खुशियां मनाने में मशगूल थे और एक तरफ आजादी की हुंकार भरी जा रही थी, तब ब्रिटिश सेना के तत्कालीन ब्रिगेडियर जनरल डायर ने उन निहत्थे लोगों पर अंधाधुंध गोलियां बरसाने का क्रूर आदेश दे दिया।

चारों तरह अफरा तफरी मच गई। बगीचे से बाहर जाने का एक ही रास्ता था जिस पर जनरल डायर के सैनिक कब्जा जमाए गोलियां बरसा रहे थे। किसी को कहीं भी छुपने की जगह ना मिली, एक कुआं था जिसमें बचने के लिए लोगों ने छलांग लगानी शुरू कर दी, पर वह भी जल्दी ही मानव देह से भर गया।

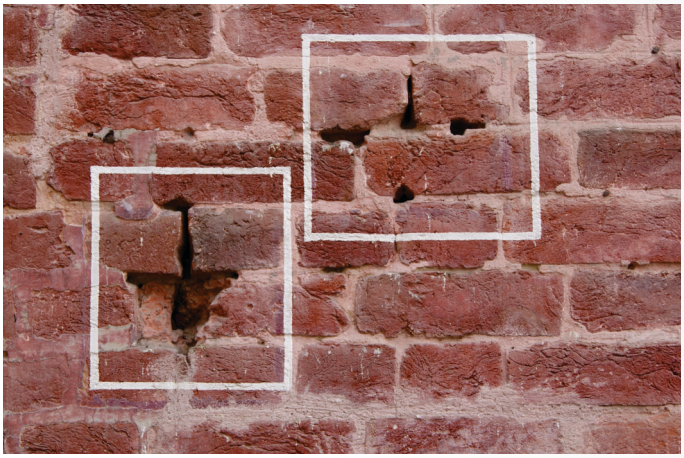

पूरा अमृतसर निर्दोष मासूम लोगों की चीखों से गूंज उठा। ज़ालिम डायर के पास जितनी गोलियां थीं सब उसने आजादी के सिपाहियों और मासूम लोगों के सीने में उतार दीं। उसी जलियांवाला बाग में कदम रखते ही मन सिहर उठा। 103 वर्ष पहले घटित वो घटना जैसे आंखों के सामने चलचित्र की भांति चलने लगी, रोम-रोम कांप उठा। आंखें बंद करने पर वो मार्मिक चीखें आज भी महसूस होती हैं, एकबारगी अपने कानों पर हाथ रख लिया, उन निर्दोषों की करुण पुकार मानो हृदय को चीर रही थी।

"मम्मी जनरल डायर ने सैकड़ों लोगों की हत्या कर दी, तो उसे किसी ने कोई दंड नहीं दिया क्या"- पलक ने रुंधे हुए स्वर में पूछा।

"बेटा इस जघन्य हत्याकांड ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया। लोगों में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध पहले से ही आक्रोश तो था ही, लोग और गुस्से से भर उठे। अब उनमें अपने देश की आजादी के लिए जुनून भर उठा। उस दिन जलियांवाला बाग में सरदार ऊधम सिंह जी भी थे जिन्होंने इस कृत्य को बेबसी से देखा, वो तो किसी तरह बच गए और उन्होंने बहुत से लोगों की जान बचाई।

इस जघन्य घटना ने उनके दिन रात का चैन छीन लिया और अंततः उन्होंने इसका बदला लेते हुए जनरल डायर को गोली मार दी।"

"वाह मम्मी बहुत बहादुरी का काम किया उन्होंने"- नन्हा पलाश खुश हो उठा।

"हां बेटा, सैकड़ों निर्दोष लोगों के हत्यारे को आखिर सजा तो मिलनी ही थी। बेटा ये आजादी हमें बहुत से लोगों की शहादत से मिल पाई है, लाखों लोगों ने अपने परिवार की परवाह न करते हुए अपने देश अपनी

मातृभूमि के लिए हंसते-हंसते अपनी जान दे दी।

अब हमारा कर्तव्य है कि हम उनके इस त्याग और बलिदान का मान रखते हुए अपने देश की खुशहाली, प्रगति और सम्मान के लिए काम करें और उनके बलिदान को व्यर्थ न जाने दें। " - ऋषि ने बच्चों के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा।

बहुत देर तक वे लोग वहां बैठे रहे, वे उन मासूमों के दर्द को महसूस कर रहे थे। आंखें बंद कर उनके लिए प्रार्थना की और भारी मन से उस बाग से विदा ली जहां आज भी आजादी के लिए दी गई सैकड़ों लोगों की कुर्बानियों के निशान ताजा हैं।

अमृतसर की यात्रा बहुत यादगार रही। आधुनिक युग में युवा पीढ़ी को अपने स्वतंत्रता सेनानियों एवं देश के लिए उनके त्याग के बारे में बताना बहुत जरूरी है ताकि वे भी स्वतंत्रता का महत्व समझते हुए देशप्रेम की भावना अपने दिल में जगाए रखें।

श्रीमती प्रीति अग्रवाल
पत्नी- दिनेश कुमार अग्रवाल (वैज्ञा./अभि.एसजी)

दांडी - आजादी की लड़ाई में मील का पत्थर

"सुनिए जी भैया लोग अपने यहां पहली बार आ रहे हैं, उन्हें कहां-कहां घुमाने ले जाना है, सोचा है क्या आपने?"- मम्मी ने चाचाजी का अहमदाबाद आने का कार्यक्रम तय होते ही पापा से पूछा।

"हूं! देखते हैं। आने तो दो उन्हें फिर उन्हीं से पूछ लेंगे"- पापा ने प्रत्युत्तर दिया।

"अरे पहले से सब प्लान बनाकर रखेंगे तो ज्यादा अच्छा रहेगा"- मम्मी ने तर्क दिया।

"पापा अपने यहां तो ढ़ेर सारे मॉल हैं और थियेटर भी। बहुत मजा आएगा" - छोटे भाई पलाश ने मन ही मन वीडियो गेम्स खेलने और मूवी देखने का मूड बना लिया।

"पापा हम साइंस सिटी भी चलेंगे। अभी तो वहां रोबोटिक गेलरी, एक्वेटिक गेलेरी और बहुत से नए नए एक्सपेरिमेंट्स, 5 डी मूवी भी हैं, आदित्य और अवनी को बहुत मजा आएगा वहां" - विज्ञान पसंद करने वाली मैं यानि पलक तपाक से बोल उठी।

"पापा अपने इसरो की एग्जीबिशन भी तो बहुत अच्छी है। वहां बहुत सारे सेटेलाइट्स के मॉडल्स हैं, हर एक जानकारी बहुत विस्तार से समझाते हैं और फिर 3 डी मूवी भी तो है"- पलाश भी कहां पीछे रहने वाला था।

"अरे बाबा हां। सभी जगह दिखाने घुमाने ले जाएंगे उन्हें"- पापा ने हम बच्चों का उत्साह देखकर मुस्कुराते हुए कहा।

"सुनिए जी बच्चों को मौज मस्ती के साथ-साथ अपने अहमदाबाद की सबसे विशेष जगह जरूर ले चलेंगे जो पूरे विश्व में कहीं और हो ही नहीं सकती"- मम्मी ने मुस्कुराते हुए कहा।

"मम्मी ऐसी कौन सी जगह हमारे यहां है?"- नन्हा पलाश अपनी उत्सुकता रोक नहीं पाया।

"अपना साबरमती आश्रम, हम उन्हें साबरमती आश्रम ले चलेंगे"- मम्मी ने भी अपनी राय दी।

"हां मम्मी बहुत ही अच्छा आइडिया है। हमें भी बहुत दिन हो गए आश्रम गए हुए। अब तो रिवर फ्रंट घूमने का भी बहुत मजा आता है" - मैंने खुशी जाहिर करते हुए मम्मी की हां में हां मिलाई।

"बहुत बढ़िया सुझाव है तुम सभी का। समय तो देखना फुर्र करके उड़ जाएगा" - पापा ने हँसते हुए तुरंत हामी भर दी।

तय समय पर राकेश चाचाजी अपने परिवार संग अहमदाबाद पहुंच गए। घर शोरगुल से चहक उठा। जैसा कि आप जानते हैं सबने अपने-अपने प्लान तो पहले से बना रखे थे, फिर चाचाजी के बच्चों से उनकी पसंद पूछ ली गई। अहमदाबाद गांधीनगर के अलग-अलग स्थानों पर घूमते-फिरते, मौज-मस्ती संग ज्ञान अर्जित करते हुए साबरमती आश्रम पहुंचे। साबरमती आश्रम किसी तीर्थ स्थल से कम नहीं है, यही वो जगह है जहां महात्मा गांधी ने आजादी के लिए कई आंदोलनों की व्यूह रचना गढ़ी। अपने सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सविनय अवज्ञा, स्वदेशी अपनाओ जैसे शांतिपूर्ण तरीकों से भारत को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करवाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हृदय कुंज में घुसते ही अलौकिक शांति का अनुभव हुआ। महात्मा गांधी जी के जीवन को नजदीक से जानने का सुअवसर मिला। उनकी सादगी, सरलता को देखते हुए हमारी युवा पीढ़ी को विश्वास करना भी मुश्किल है कि हमारी धरती पर एक ऐसा महामानव पैदा भी हुआ था जिसने बिना किसी खून खराबे के अपने देश को आजाद करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पापा ने पहले ही सभी बच्चों को बता दिया था कि इतने विस्तार से सटीक जानकारी गांधीजी के बारे में कहीं नहीं मिलेगी। इसीलिए हम बहुत उत्साहित थे और अपने नोट्स भी बना रहे थे।

"बेटा गांधीजी के सिद्धांत अपने जीवन में अमल करना चाहिए। अपने आत्मबल, दृढ़ निश्चय, चातुर्य और देशप्रेम की भावना से बड़ी से बड़ी चुनौतियों का हंसकर एवं डटकर सामना कैसे किया जा सकता है, ये तुम यहां खुद महसूस कर सकते हो। अगर आप सच्चे हैं और अच्छे कार्य को करने का बीड़ा उठाया है तो लोग स्वतः आपके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने लगते हैं, तब मंजिल तक पहुंचना आसान हो जाता है"- पापा ने हमारे जोश को और बढ़ाया।

आश्रम में गांधीजी के जीवन से जुड़ी हर एक बात को विस्तार से पढ़ा और महसूस किया। दांडी यात्रा के बारे में विस्तार से पढ़ने पर दांडी जाने की उत्सुकता बहुत बढ़ गई।

उस जमाने में अंग्रेजों द्वारा लगाए गए कर का ऐसा अनूठा शांतिपूर्ण विरोध अकल्पनीय है।

"ताऊजी हम दांडी चलें क्या"- जैसे ही राकेश के बच्चों ने ऋषि से पूछा सभी तुरंत तैयार हो गए।

"हां पापा चलिए ना हम भी कभी नहीं गए वहां"- पलक ने उन बच्चों के सुर में सुर मिलाया।

अगले दिन सुबह ही दांडी के लिए निकल पड़े। अहमदाबाद से लगभग 390 किमी दूर नवसारी जिले में, नवसारी शहर से लगभग बीस किलोमीटर दूर एक छोटा सा तटीय गांव है दांडी। होने को तो बहुत छोटा सा गांव है पर बहुत बड़े घटनाक्रम के कारण इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों से इसका नाम अंकित है।

अंग्रेजों ने हमारी रोजमर्रा की अति आवश्यक वस्तु नमक पर भी कर लगा दिया था। इस कर से पूरे देश में आक्रोश की लहर फैल गई। गांधीजी ने अंग्रेजों के इस कदम का कड़ा विरोध किया, पर वे इस कर को हटाने को राजी नहीं हुए। तब गांधीजी ने इसका शांतिपूर्ण तरीके से विरोध करने के लिए साबरमती आश्रम से ही दांडी तक पैदल यात्रा करने का निर्णय लिया।

12 मार्च 1930 का वो ऐतिहासिक दिन, जब गांधीजी अपने 78 साथियों संग इस यात्रा पर चल पड़े। लाखों लोगों के स्नेह और प्रेम के बलबूते, रास्ते की अनगिनत कठिनाइयों को पार करते हुए, लगभग 24 दिनों की कठिन यात्रा के बाद वे दांडी समुद्र तट पर पहुंचे। यात्रा की थकान होने के बावजूद आत्मविश्वास और देशसेवा के जज्बे से उन सभी का उत्साह चरम पर था। 78 साथियों के साथ जिनमें महिलाएं भी शामिल थीं, शुरू हुई इस यात्रा में रास्ते में लोग जुड़ते चले गए। 6 अप्रैल 1930 को दांडी के समुद्र तट पर नमक उठाकर सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में उन्होंने इस कानून को सविनय तोड़ा। ब्रिटिश पुलिस ने लोगों पर लाठियां बरसाई पर लोग टस से मस नहीं हुए, प्रमुख नेताओं के साथ सैकड़ों लोगों को जेल में बंद कर दिया गया।

यह एक प्रतीकात्मक विरोध था। कानून के शांतिपूर्ण ढंग से उल्लंघन की इस धरना ने विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और भारत की आजादी के लिए देशवासियों में नया उत्साह और जोश भर उठा।

अहमदाबाद से लगभग आठ घंटे की कार से यात्रा के बाद हम दांडी पहुंचे। जहां कार की यात्रा थकाने वाली लग रही थी, वहीं आज से लगभग 92 साल पहले, जहां उतनी सुविधाएं मौजूद नहीं थी, रोज लगभग 15-16 किमी पैदल चलकर ऐसी यात्रा करना बहुत ही साहस का काम था।

दांडी के समुद्र तट पहुंचते ही मानो सारी थकान उतर गई। ठंडी-ठंडी हवाएं और दूर-दूर तक फैला शांत समुद्र इस ऐतिहासिक स्वर्णिम घटना का साक्षी रहा है। जितना शांत यहां का समुद्र दिखाई देता है, उतनी ही अधिक हलचल उस समय यहां तोड़े गए कानून ने पूरे देश के साथ-साथ विश्व में मचा दी थी। एक तूफ़ान सा उठा जिसने अंग्रेजों के गलत इरादों और कानूनों की जड़ें हिलानी शुरू कर दीं थीं।

कई घंटे समुद्र किनारे बैठ हम उस अद्भुत दृश्य और समय की कल्पना करते रहे जिसने हमें रोमांचित कर दिया। हमारे देश की आजादी के लिए लाखों करोड़ों लोगों ने अलग-अलग तरीके से योगदान दिया है जिसका कर्ज हम कभी उतार नहीं सकते। अंग्रेजों के अनगिनत अत्याचारों को हमारे वीरों ने कभी सहन किया, कभी मुखर होकर विरोध किया, जब जैसी जरूरत पड़ी वैसा अपना योगदान दिया।

धन्य है भारत भूमि, धन्य है हमारी मिट्टी, जिसने ऐसे वीर सपूतों को जन्म दिया।

धन्य भाग्य हैं हमारा कि हमें इतनी समृद्ध विरासत मिली। इसी जज्बे को बनाए रखना है, आजादी का अलख जगाए रखना है, लाखों लोगों के खून से लिखी इस इबारत को हमेशा याद रख अपने देश के लिए मर मिट जाना है।

हमारी युवा पीढ़ी को अपने वीरों, शहीदों के त्याग एवं बलिदान को याद रखते हुए देशप्रेम के जज्बे को बनाए रखना है। बहुत मुश्किल से मिली इस आजादी को कायम रखने और अपने देश को निरंतर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाकर विश्व गुरु बनाने का बीड़ा हम युवाओं के कंधे पर ही है।

हर समस्या का हल हिंसक या उत्तेजित होकर नहीं निकाला जा सकता, बहुत सी समस्याएं एवं चुनौतियां शांतिपूर्ण तरीके से भी हल की जा सकती हैं, यह हम बच्चों ने साबरमती आश्रम और दांडी यात्रा से सीखा।

दीप्ति अग्रवाल
पुत्री- दिनेश कुमार अग्रवाल (वैज्ञा./अभि.एसजी)

हमारी आजादी के 75 वर्ष : अमृत मंथन

हमारा देश 15 अगस्त 1947 को सैकड़ों वर्षों की गुलामी की बेड़ियों से आजाद हुआ। तब से लेकर अब तक आत्म निर्भरता, खाद्यान्न, सांस्कृतिक, सैन्य, खेल एवं तकनीकी क्षेत्र की विकास यात्रा में हमने एक पहचान बनाई है। आज भारत की पहचान एक सशक्त राष्ट्र के रूप में है। 75 वर्ष यानी अमृत महोत्सव। इस दौरान देश ने बहुत कुछ खोया, बहुत कुछ पाया। जब हम गुलामी के दौर की कल्पना करते हैं, जहाँ करोड़ों लोगों ने सदियों तक आजादी की एक सुबह का इंतज़ार किया, तब यह अहसास और बढ़ता है कि आजादी के 75 साल का अवसर कितना ऐतिहासिक है, कितना गौरवशाली है। आजादी का अमृत महोत्सव यानी – आजादी की ऊर्जा का अमृत, नए विचारों व संकल्पों का अमृत।

स्वतंत्रता के बाद भारत में बहुत सारी समस्याएँ पैदा हुईं। जैसे कि विभाजन की समस्या, शरणार्थी समस्या, रियासतों का एकीकरण, कश्मीर समस्या, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ। अलगाववादी ताकतों से सामना, नक्सलवाद की चुनौती, सीमापार चीन और पाकिस्तान से युद्ध भी करना पड़ा। गरीबी, निरक्षरता, कुपोषण, बेरोजगारी, आतंकवाद, क्षेत्रवाद एवं भाषावाद जैसी राष्ट्रीय समस्याएँ चिंता का विषय हैं। एक महान देश में गरीबी आज भी अभिशाप है और लगभग 10 करोड़ लोग अभी भी अत्यंत गरीब हैं।

अब अमृत-मंथन करें तो कोरोना महामारी से बचाव हेतु बहुत ही कम समय में 200 करोड़ वैक्सीनेशन/टीकाकरण एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। 2019 में जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 का हटना। 2016 में पाकिस्तान के कब्जे वाले इलाके में सर्जिकल हमला। 1947 में 560 से ज्यादा देशी रियासतों का एकीकरण। आज भारत दलहनों के उत्पादन में सबसे आगे है। प्रजातंत्र, लोकतंत्र सुरक्षित है। भारत जीवंत लोकतंत्र का एक जीता-जागता उदाहरण है। आम-आदमी को सशक्त बनाने के लिए बीते दशकों में सरकार द्वारा जन कल्याणकारी नीतियों और योजनाओं के माध्यम से लेकर उनका लाभ कमजोर वर्गों तक पहुँचाया है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, मनरेगा जैसी योजनाएँ इनके उदाहरण हैं।

अमृत मंथन में हम यह पाते हैं कि हम उदारीकरण के दौर के बाद तेजी से विकास के रास्ते पर आगे बढ़े हैं। आत्म निर्भर भारत, मेक इन इंडिया और गति शक्ति अभियानों ने देश के विकास को गति दी हैं। आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा बाजार बना हुआ है।

परमाणु हथियारों से संपन्न भारत के पास दुनिया की चौथी सबसे शक्तिशाली सेना है। मिसाइल तकनीकी के क्षेत्र में दुनिया भारत का लोहा मान रही है। अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत ने नए-नए कीर्तिमान गढ़े हैं। मंगल - मिशन की सफलता एवं रॉकेट प्रक्षेपण की क्षमता की बदौलत हम विश्व के चुनिंदा देशों में शामिल हैं। आईटी सेक्टर में हम अग्रणी देशों में हैं। योग शिक्षा का जनक भारत दुनिया को काफी कुछ दे सकता है। आत्मनिर्भरता एव स्वदेशी का मंत्र निश्चित ही देश को विकास की राह पर ले जाएगा। देश में प्रतिदिन 37 किलोमीटर सड़क का निर्माण तेजी से हो रहा है। नेशनल हाईवे 6 लेन से 12 लेन के बनाए रहे हैं। 5 जी से संचार क्रांति हो रही है। देश के गांव-गांव तक संचार के माध्यम पहुँच चुके हैं। दूर-दराज के गांव बिजली से रोशन हो चुके हैं। संतोष की बात है कि आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और संवैधानिक रूप से महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ रही है। देश में शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में व्यापक प्रगति हुई है। आज विश्व जिस अंतराष्ट्रीय योग दिवस को मनाता है, वह भारत की सनातन संस्कृति के गर्भ से निकला अध्यात्मरुपी उपहार है। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, आतंकवाद एक चुनौती है लेकिन नए भारत का युवा जोश से सरोबार है। खेलों के क्षेत्र में भी भारत ने प्रगति की है। समय पर चुनाव होना एक बड़ी बात है। आज देश में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान एवं अखिल भारतीय चिकित्सा संस्थानों की संख्या में अच्छी बढ़ोत्तरी हुई है। हरित क्रांति, गुट निरपेक्ष आंदोलन का प्रमुख नेता, श्वेत क्रांति, बांग्लादेश निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका, प्रोजेक्ट टाईगर, गगनयान से मानव को अंतरिक्ष में भेजने के लिए कटिबद्ध, सबका साथ-सबका विकास देने वाला हमारा हिंदुस्तान हमें निश्चित ही एक सुखद अनुभव देता है।

आज हम दूध, खाद्यान्न, दवाई के क्षेत्र में आत्म निर्भर हैं। आज भारत का स्टार्ट अप इको-सिस्टम चर्चा का विषय है। ज्ञान–विज्ञान से समृद्ध भारत, आज मंगल से लेकर चंद्रमा तक अपनी छाप छोड़ रहा है। हर नागरिक का संकल्प होगा, हर संस्था का संकल्प होगा देश को आगे ले जाने का। 'कोविन एप' की सफलता एवं देशी वैक्सीन द्वारा कोविड महामारी का डटकर मुकाबला देश की एकजुटता को दर्शाता है एवं उस संकल्प को दर्शाता है कि हमें विश्व गुरु एवं सिरमौर देश बनना है।

श्रीमती शकुंतला अग्रवाल
माताजी- दिनेश कुमार अग्रवाल (वैज्ञा./अभि.एसजी)

सेलुलर ज़ेल का मुख्य द्वार

सेलुलर जेल : सजा-ए-कालापानी

काला-पानी, नाम सुनते ही एक अजीब-सा डर मन में घर कर जाता है और याद आता है अंग्रेजों के जमाने का वो क्रूर काल जिसे हमने इतिहास के माध्यम से जाना है। इतिहास खंगालते-खंगालते यह ज्ञात हुआ कि काला-पानी की सजा अंडमान की राजधानी पोर्ट-ब्लेयर में स्थित सेलुलर जेल में भोगनी पड़ती थी। युवा जोश था और ऑफिस के कामकाज से एक ब्रेक लेना था। हमने एल.टी.सी. की सुविधा का लाभ उठाया, एक इकानॉमिक पैकेज लिया, बैग पैक कर प्लेन पकड़ा और बस आ पहुँचे इस द्वीप-समूह की राजधानी अर्थात् पोर्ट-ब्लेयर में।

गाइड अच्छा था, उसने दो-तीन दिन पूरा अंडमान घुमाया जिसमें रॉस, वाइपर, हेवलॉक, जॉली-वाय जैसे कई अविस्मरणीय स्थल देखे। लहराते समुद्र के बीच प्रकृति की अद्भुत सुंदरता को देख मन बहुत प्रफुल्लित हो उठा। इन चार-पाँच दिनों में अधिकतर समय समुद्र की लहरों में बोट, स्टीमर और क्रूज में बैठे रहने से लगातार गोते खाने का एहसास मन में कुछ इस तरह घर कर गया कि रात को जब सोते तो अचानक ऐसा लगता कि हमारा पलंग बोट की तरह हिल रहा है। इस यात्रा का अंतिम और अहम पड़ाव सेलुलर जेल और इस लेख का भी...

भारत ने 200 वर्षों तक अंग्रजों की गुलामी झेली और इससे मुक्त होने के लिए लाखों वीर सपूतों ने असहनीय पीड़ा और यातनाएं झेलीं, ना जाने कितनों ने किस-किस तरह की सजा काटकर अपनी उम्र गुजार दी...इन्हीं आजादी के मतवालों को कठोर दंड देने के लिए सजा थी काला-पानी की सजा। काला पानी के नाम से विख्यात जेल अंग्रेजों द्वारा भारतीय-स्वतंत्रता सेनानियों को जेल में रखने के उद्देश्य से बनाई गई थी जिसकी योजना 1857 के विद्रोह के बाद उनके मन में आई।

जेल के मुख्य द्वार से घुसते ही सर्वप्रथम आता है एक विशेष संग्रहालय जहाँ आप पाएंगे विस्तृत भारत-भूमि की भौगोलिक एवं राजनीतिक झलक। तत्पश्चात् यहाँ से निकलने के बाद आप अतीत की यादों में खो जाएंगे। इस जेल का इतिहास इतना भयानक और दर्दनाक था कि लोग काला-पानी की सजा के नाम से ही डर जाते थे। इस जेल का निर्माण 1896 में आरम्भ हुआ और महज दस सालों में इसने अपना पूर्ण आकार ले लिया। ऐसा भी कहा जाता है कि इसको बनाने वाले अंग्रेजों की तानाशाही का शिकार हिंदुस्तानी ही थे। इसके निर्माण में करीब पाँच से छः लाख रुपये खर्च हुए। इसकी आकृति देखकर आपको याद आ जायेगा आठ भुजाओं वाला समुद्री जीव- आक्टोपस। आक्टोपसनुमा इस जेल का विस्तार सात भुजाओं और तीन तलों में फैला हुआ है, जिनमें करीब सात सौ कोठरियाँ हैं और इन्हीं काल कोठरियों को कहते हैं सेल। हर सेल का आकार 4.5 x2.7 वर्गमीटर है।

सेलुलर ज़ेल का बृहत दृश्य

ऐसा जान पड़ता है कि एक सेल से दूसरे सेल को देखा भी नहीं जा सकता। शायद इस आकृति के चुनाव का मुख्य उद्देश्य कैदियों के आपसी मेल-जोल को रोकना रहा होगा जिससे वे एक-दूसरे को न तो

देख पाएं और न कोई रणनीति बना सकें। जेल के एक सेल में एक कैदी को अकेले ही रखा जाता और उसका अकेलापन ही उसके लिए सबसे डरावना और दंडनीय होता था।

सेलुलर ज़ेल का मूल स्वरुप मॉडल, इस जेल को सात भुजाओं में इस तरह बाँटा गया था कि कोई कैदी एक दूसरे को देख भी न सके...इसकी प्रत्येक भुजा में तीन तल थे।

पानी से घिरी सेलुलर ज़ेल, इसकी छत से देखा जा सकता है कि ये मुख्य द्वार को छोड़कर सभी ओर पानी से घिरा हुआ है।

चूंकि जेल के मुख्य द्वार को छोड़कर सभी ओर पानी ही पानी है, इसलिए शायद यही कारण रहा होगा कि इसकी बाहरी दीवारों को मात्र तीन मीटर तक ही ऊँचा रखा गया जिसको कूदकर भी कोई बाहर नहीं जा सकता है। यह जेल भारत की भूमि से बहुत दूर समुद्र में बनी है और कूदने वाले कैदी को बाहर हर तरफ बस पानी-ही-पानी दिखाई पड़ता है जिसे अच्छे- से अच्छा तैराक आसानी से पार नहीं कर सकता।

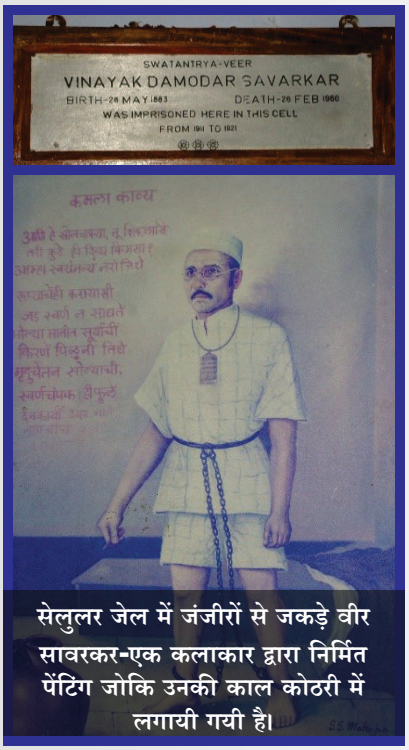

सेलुलर जेल में जंजीरों से जकड़े वीर सावरकर-एक कलाकार द्वारा निर्मित पेंटिंग जोकि उनकी काल कोठरी में लगायी गयी है।

न जाने कितने भारतीयों को यहाँ फाँसी दी गई और न जाने कितने मर गए लेकिन इसका कोई भी रिकार्ड नहीं है। शायद यही कारण है कि आज भी काला- पानी शब्द लोगों के जेहन में एक भयानक शब्द के रूप में बसा हुआ है और एक मुहावरे के रूप में प्रचलित हो गया है।

ब्रिटिश अधिकारियों के लिए यह एक पसंदीदा जगह थी क्योंकि ये द्वीप एकान्त में और दूर स्थित था जिससे यहाँ कोई भी आसानी से आ-जा नहीं सकता था। ये लोग इन कैदियों से विभिन्न तरह के काम भी करवाते थे। सबसे पहले यहाँ 200 कैदी डेविड बैरी की देखरेख में लाए गए और उसके बाद सात-सौ विद्रोहियों को कराची से लाया गया था। जब देश में स्वतंत्रता-का आंदोलन चरम पर था, उस समय अंग्रेजों ने बहुत सारे लोगों को काले पानी की सजा सुनाई थी। इन्हीं नामों में से एक नाम था विनायक दामोदर सावरकर जिनपर लन्दन में पढ़ाई के दौरान क्रांतिकारी पुस्तकें भेजने और एक अंग्रेज अधिकारी की हत्या की साज़िश का आरोप लगाया गया था और 4 जुलाई 1911 को काला-पानी की सजा सुनाकर जेल में भेज दिया गया था।

एक ओर देशवासी आजादी के लिए दिन-रात एक कर संघर्ष कर रहे थे, तो दूसरी ओर अंग्रेजी सरकार उनके विद्रोह को कुचलने का भरसक प्रयास कर रही थी और उन्हें पकड़-पकड़ कर प्रताड़ित कर रही थी। उन्हीं नामों में से थे बटुकेश्वर दत्त, योगेन्द्र शुक्ला, विनायक दामोदर सावरकर जिनको भी इस जेल में रखा गया था।

आज इस सात भुजाओं वाले ऑक्टोपसनुमा विशाल कारागार के केवल तीन अंश बचे हैं। कारागार की दीवारों पर वीर शहीदों के नाम अंकित हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ एक संग्रहालय भी है, जहाँ उन अस्त्रों को देखा जा सकता है जिनसे वीर स्वतंत्रता सेनानियों पर अनेक अत्याचार किए जाते थे।

एक घटना के अनुसार, मई 1933 में अंग्रेजों द्वारा दी जाने वाली यातनाओं के विरोध में यहाँ कैदियों ने भूख हड़ताल शुरू कर दी थी, जिसको विफल करने के लिए एक क्रांतिकारी महावीर सिंह को जबरदस्ती खाना खिलाया गया और अंत में उसकी मत्यु हो गई। इसके अलावा इसी भूख हड़ताल के कारण दिनोंदिन हो रही मौतों के बाद महात्मा गाँधी और रविन्द्रनाथ टैगोर ने इसमें हस्तक्षेप किया और अंततः सेलुलर जेल के सभी राजनीतिक कैदियों को 1937-1938 के बीच रिहा करने का आदेश दिया गया। 1942 में जापान की सेना ने अंडमान पर आक्रमण कर अंग्रेजों को वहाँ से पूरी तरह खदेड़ दिया और

ज़ेल की एक कोठरी का दृश्य, इस जेल की कोठरियों में दरवाजे को बंद करने का प्रावधान कुछ इस तरह से था कि ताला न भी लगा हो तब भी कैदी का हाथ कोठरी के दरवाजे को खोल नहीं सकता था।

उन महान स्वत्रंत्रता सेनानियों के नाम जिन्होंने जेल की इन्हीं दीवारों में बंद रहते हुये अपना समय काटा...उनकी यादों में ये नाम पट्ट वहाँ लगाये गये हैं।

बाद में इसे ब्रिटिश कैदियों का घर बना दिया गया। इसी दौरान सुभाषचंद्र बोस भी इस द्वीप पर आए और उन्होंने ही इस द्वीप पर पहली बार तिरंगा फहराया।

यहाँ हुई बर्बरता के कारण, जब भारत आजाद हुआ तो इस जेल के दो खंडों को नष्ट कर गया, जिसका काफी विरोध हुआ क्योंकि राजनीतिक नेता इसके इतिहास को संजो कर रखना चाहते थे। 1963 में इस जेल के

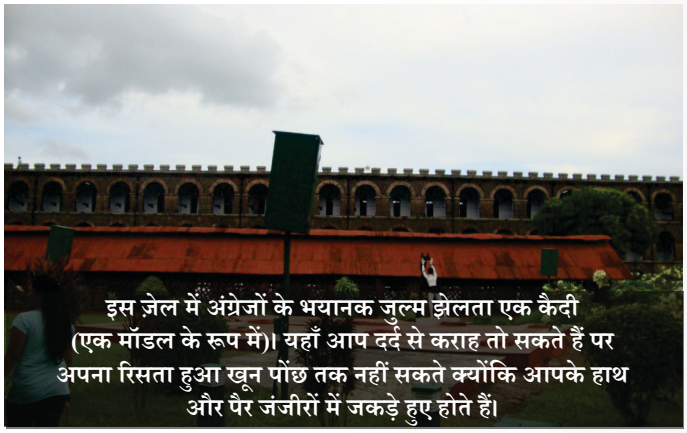

इस ज़ेल में अंग्रेजों के भयानक जुल्म झेलता एक कैदी (एक मॉडल के रूप में)। यहाँ आप दर्द से कराह तो सकते हैं पर अपना रिसता हुआ खून पोंछ तक नहीं सकते क्योंकि आपके हाथ और पैर जंजीरों में जकड़े हुए होते हैं।

परिसर में पंडित गोविन्द वल्लभ भाई पंत हॉस्पिटल की स्थापना कर इसे अस्पताल में तब्दील कर दिया गया।

1979 में मोरारजी देसाई की सरकार में इसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर दिया गया। आज यह एक रोमांचक पर्यटन स्थल है। इसको और आकर्षक बनाते हुये संध्या काल में लाईट एंड साउंड शो आयोजित किया जाता है जो इस जेल के इतिहास को आज की पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करता है।

भारत-सरकार द्वारा सेलुलर जेल को आधुनिकतम रूप देने का प्रयास किया गया है, जहाँ लाईट एवं ध्वनि शो द्वारा जेल की तीन तलों में अंकित तिरंगा

सेलुलर ज़ेल का एक और दृश्य दूसरे छोर से

इस लाईट एंड साउंड शो के दौरान जब जेल की किसी भुजा के तीन तलों पर एक साथ तीन रंग की रोशनी पड़ती है तो तिरंगेनुमा आकृति सबका मन मोह लेती है, वहीं दूसरी ओर लाईट द्वारा हाईलाईट फाँसीघर सबको भावुक कर देता है।

यहाँ आने के बाद इस जेल में बना मूल फांसी घर, सेलों की बनावट, लहराता समुद्र और भयानक यातना वाले दृश्यों को देखकर आपका मन द्रवित जरूर हो जायेगा और अनायास ही आप उन महान स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति अपार श्रद्धा से भर उन वीर सपूतों के प्रति नत-मस्तक हो जायेंगे।

लाईट एवं म्यूजिक शो द्वारा हाईलाईट किया गया, जेल का एक भाग जहाँ कैदियों को फाँसी दी जाती थी।

जितेंद्र कुमार
वैज्ञा./अभि. एसएफ

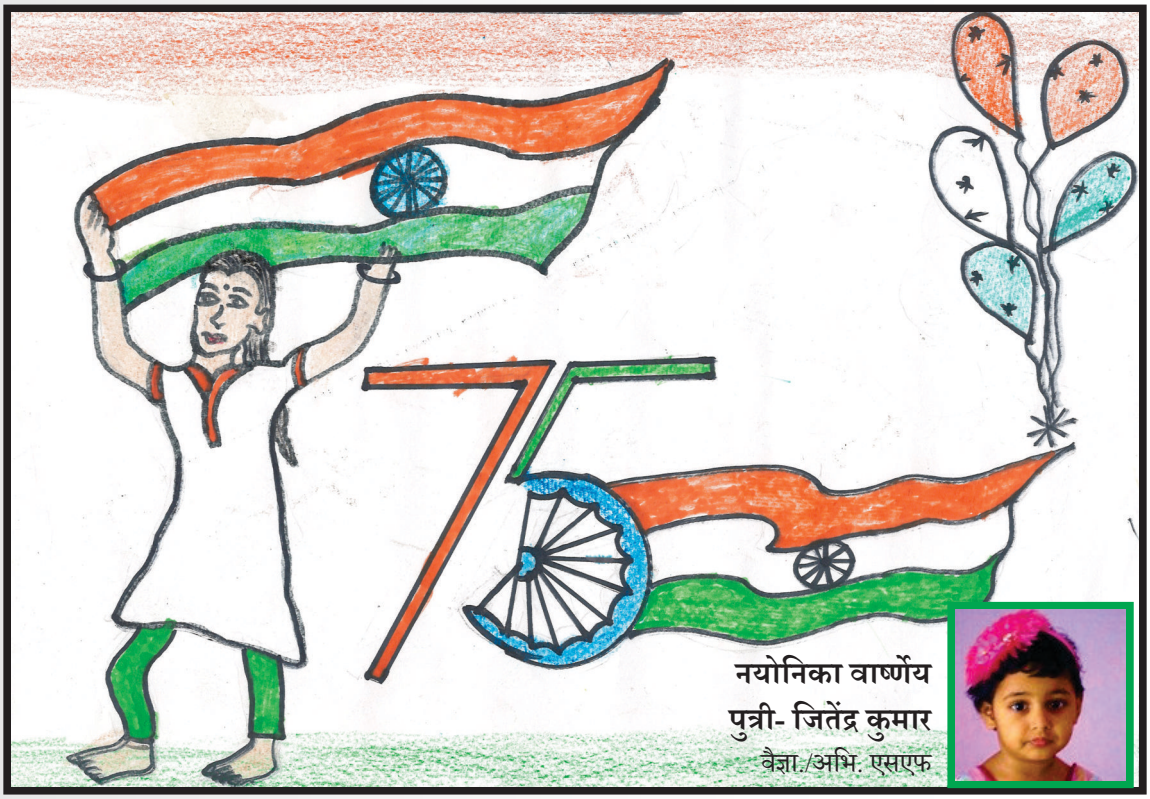

नयोनिका वार्ष्णेय
पुत्री- जितेंद्र कुमार
वैज्ञा./अभि. एसएफ

मोनिका कारे
वैज्ञा./अभि. एसडी

क्रांतिकारी अल्लूरी सीताराम राजू

अल्लूरी सीताराम राजू एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था। अल्लूरी सीताराम राजू आदिवासियों की आवाज और ताकत बने थे। उन्होंने विभिन्न जनजातियों को एकजुट किया, उन्हें गुरिल्ला युद्ध सिखाया और औपनिवेशिक शक्ति से लड़ने के लिए प्रशिक्षित किया। 1922 में, अल्लूरी सीताराम राजू ने रम्पा विद्रोह आंदोलन शुरू किया जिसमें स्थानीय आदिवासी और समर्थकों ने वर्तमान आंध्र प्रदेश में मद्रास प्रेसीडेंसी के पूर्वी गोदावरी और विशाखापट्टनम क्षेत्रों में ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई लड़ी। अल्लूरी सीताराम राजू "मन्यम वीरुडु" के नाम से प्रसिद्ध थे, जिसका अर्थ है "जंगल का नायक"। अल्लूरी सीताराम राजू ने स्थानीय आदिवासी लोगों के समर्थन से चिंतपल्ले, रामपचोडावरम, और अन्नावरम जैसे क्षेत्रों में कई पुलिस स्टेशनों पर छापे मार कर बंदूकें तथा हथियार हासिल किए। उस दौरान महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन के समर्थन के लिए अल्लूरी ने पुलिस स्टेशनों में आग लगा कर कई ब्रिटिश पुलिसकर्मियों को मार डाला।

अल्लूरी सीताराम राजू का जन्म 4 जुलाई 1897 को भीमावरम के समीप मोगल्लु नामक गाँव में हुआ था। अल्लूरी अठारह वर्ष की आयु में सांसारिक सुखों को त्याग कर सन्यासी बन गए। उन्होंने स्कूल में ज्योतिष, जड़ी-बूटी, हस्तरेखा और घुड़सवारी सीखी। जब वे स्कूल में पढ़ रहे थे, तभी उनके पिता की मृत्यु हो गई। उनका पालन-पोषण उनके चाचा 'राम कृष्णम राजू' ने किया, जो पश्चिम गोदावरी जिले के नरसापुर में एक तहसीलदार थे। टेलर हाई स्कूल में अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद, अल्लूरी अपनी बहन और भाई के साथ अपनी मां के गृहनगर विशाखापत्तनम चले गए। वहां उन्होंने 'मिसेज एवीएन कॉलेज' में पढ़ना शुरू किया और अपने चौथे वर्ष में विश्वविद्यालय से बाहर हो गए। विशाखापत्तनम में अपने प्रवास के दौरान उन्होंने गोदावरी में घूमते हुए मूल आदिवासी लोगों की जरूरतों को ध्यान से देखा और स्थानीय आदिवासी समुदाय के साथ घुलमिल गए। बदले में, आदिवासियों ने उन्हें एक ऐसा संत माना जो उन्हें ब्रिटिश अधिकारियों के हाथों उनके अपमानजनक अस्तित्व से मुक्ति दिलाएगा।

जंगलों को काटने के लिए, 'मद्रास वन अधिनियम, 1882' लागू किया गया, जिससे जनजातीय/ आदिवासी समुदायों पर जंगलों में अपनी मर्ज़ी से इधर-उधर जाने पर प्रतिबंध लग गया और साथ ही साथ उन्हें अपनी पारंपरिक पोडु खेती करने से भी रोक दिया गया। अंग्रेज उन्हें वहाँ से बेदखल करना चाहते थे ताकि वे लकड़ी के लिए इन क्षेत्रों को लूट सकें, जो अंततः उन्हें रेलवे और जहाजों के निर्माण में मदद करेगा। इस स्थिति ने अल्लूरी सीताराम राजू को स्वदेशी लोगों के समर्थन में अपनी आवाज उठाने और अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया। इस वर्ष, अल्लूरी अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह करने और साथ ही संपत्ति को समायोजित करने के लिए आदिवासी लोगों में शामिल हो गए। औपनिवेशिक शासन के दौरान कलेक्टरों के साथ गलत व्यवहार किया गया। ये कर संग्रहकर्ता भी अल्लूरी के लक्ष्य के प्रति सहानुभूति रखते थे और अपने पिछले पदों को पुनर्जीवित करने के लिए स्वयं सेवा करने के बजाय उनका समर्थन करते थे। अल्लूरी ने जो सेना बनाई, उसमें विशेष रूप से आदिवासी समुदाय और वंशानुगत कर संग्रहकर्ता शामिल थे, जिन्होंने अल्लूरी सीताराम राजू के पद-चिह्नों पर भारत में अंग्रेजों के खिलाफ एक क्रांतिकारी कदम उठाया।

तत्पश्चात् अल्लूरी सीताराम राजू ने 1920 से 1922 तक महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन के पहलुओं को अपनाना शुरू किया। इन पहलुओं में किसी के विचारों, कार्यों और व्यवहार को उचित तरीके से नियंत्रित करने, शराब पीने पर रोक लगाने, खादी पहनने को बढ़ावा देना और पंचायत अदालतों का पक्ष लेते हुए औपनिवेशिक अदालतों का बहिष्कार करना शामिल था।

अगस्त 1922 में, अल्लूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में 500 लोगों की भीड़ ने हथियारों और गोला-बारूद के लिए कई पुलिस स्टेशनों में तोड़फोड़ की। इस डकैती ने अल्लूरी सीताराम राजू को ब्रिटिश पुलिसकर्मियों को मारने और उनके हथियार चोरी करने और अधिक-से-अधिक पुरुषों को आंदोलन में भर्ती करने के लिए प्रोत्साहित किया। स्थानीय आबादी अल्लूरी सीताराम राजू और उनके आदमियों की मदद करने को तैयार नहीं थी; हालांकि उन्होंने अल्लूरी को आश्रय और सहायता प्रदान की। 23 सितंबर, 1922 को अल्लूरी सीताराम राजू और

उनके साथियों ने दममनपल्ली घाट पर दो प्रसिद्ध ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या कर दी, जिससे अल्लूरी सीताराम राजू के स्थानीय ग्रामीणों के साथ संबंध मजबूत हो गए। पर जल्द ही अंग्रेजों ने मालाबार स्पेशल पुलिस फोर्स का गठन किया, जिन्हें अल्लूरी की गुरिल्ला लड़ाई शैली का मुकाबला करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। अल्लूरी सीताराम राजू ने रामपचोडावरम, अद्दतीगला, नरसीपट्टनम और अन्नावरम पुलिस थानों में छापेमारी जारी रखी। अल्लूरी सीताराम राजू के बारे में जानकारी प्रदान करने और अल्लूरी के लिए अपना समर्थन वापस लेने के लिए प्रोत्साहन और मूल्यांकन की पेशकश करके स्थानीय ग्रामीणों को ब्रिटिश सरकार द्वारा लालच दिया गया, पर ये सभी प्रयास व्यर्थ गए।

इस बीच अंग्रेज़ों ने आदिवासियों पर अत्याचार करना जारी रखा। उनकी पीड़ा को कम करने के लिए और एक न्यायप्रिय व्यक्ति होने के नाते अल्लूरी सीताराम राजू ने इस उम्मीद के साथ आत्मसमर्पण किया कि बदले में उन्हें निष्पक्ष सुनवाई का मौका दिया जाएगा। लेकिन 07 मई 1924 को उन्हें धोखे से फँसा कर, एक पेड़ से बांधा गया और गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध उनकी गौरवशाली लड़ाई का अंत हो गया।

योगेश पार्थ
वैज्ञा./अभि. एसडी

अभिव्यक्ति अंक 17 वर्ग पहेली के उत्तर

1 क्ष	म	2 ता		3 जो	ध	4 पु	र		5 हा	द	6 सा
णि		7 ली	च	ड़		ल		8 नौ			द
9 क	10 ल	म		11 ना	मां	कि	12 त		13 दि	ल्ल	गी
	ड़		14 ने			15 त	न		ने		
16 ए	क		17 क	म	रा		18 ख्वा	19 हि	श		20 पु
21 त	22 प	न				23 श	ह	र		24 का	न
25 बा	न			26 आ	वा	रा		27 न	28 मी		र्ग
र		29 भू		य		30 र	मा		न		ठ
			31 अ	क	स्मा	त		32 व		33 पा	न
	34 प	रि	वा	र				35 सु	वा	स	
36 वा	रि		म		37 अ	नु	38 सं	धा	न		39 अ
40 सं	यो	ग		41 जा	नु		श			42 ज	प
43 ती	ज				गा		44 य	45 ति			का
	46 ना	ग	पं	च	मी			47 ल	ल	का	र

काश....मैं नहीं होता

यूँ तो मैं राष्ट्रीय स्मारक कहलाता हूँ,
वीरों की वीरगाथा आज भी दोहराता हूँ।
(ध्वनि और प्रकाश के माध्यम से)
लेकिन मेरा यहाँ जन्म लेना ही,
मैं अपना दुर्भाग्य मानता हूँ।

एक गूंज उठी 1857 के विप्लव की,
अंग्रेज ने ठान ली मुझे बनाने की,
अंडमान की धरती चुनी गई काले पानी की,
मुझ बदनसीब को जन्म देने की।

विशाल पहिए के आकार सा मैं,
काली कोठरियों से भरा मैं,
चारों ओर गहरे पानी से घिरा मैं,
वीरों पे होते अत्याचार का गवाह मैं,
खून से भरे हृदय वाला घायल मैं।
(लाल ईटों से बना केन्द्रीय क्षेत्र)
जेलर डेविडबेरी का गुलाम मैं

क्या बात बताऊं माँ के लाड़ले सेनानी की ,
इस पहिये के नीचे दबे वीरों की!!

स्वतंत्रता के भूखे वीर, बंदी बन के आए वीर,
सीलन भरी कोठरी में जीते वीर, एक-दूसरे को न मिल पाते वीर।
जानवरों की भांति जीते वीर, फिर भी एक-दूसरे की ताकत बनते वीर,
बदन पे कोड़े खाते वीर, अमानवीय अत्याचार सहते वीर,
फांसी के फंदे चढ़ा दिए गए वीर, काले पानी में समा गए वीर,
माँ के सुनहरे सुपुत्र वीर, माँ की जय पुकारते वीर.....
अंतरात्मा में बसते वीर, अविरत याद आते वीर.....

खुद को न माफ कर पाउँगा मैं .....
मरते दम तक यह जय गाथा सुनाऊंगा मैं.....

अंजना मजीठिया
वैज्ञा./अभि. एसई

आजाद हिन्द फौज के एक स्वतंत्रता सेनानी की वीरगाथा

इतिहासकारों द्वारा इतिहास के वर्णन में एक छुपी विडम्बना यह है कि वे केवल उस काल की प्रमुख घटनाओं और उससे संबंधित प्रमुख व्यक्तियों का ही वर्णन करते हैं। इसी कड़ी में इतिहासकारों ने आजाद हिन्द फौज, उसके गठनकारी रासबिहारी बोस और चलनकारी सुभाषचंद्र बोस का तो समूचे तौर पर वर्णन किया है परन्तु न चाहते हुए भी फौज के उन शूर वीरों का वर्णन छूट गया है जिनके पद और ओहदे आम तौर पर बड़े नहीं समझे जाते। सौभाग्य से ऐसे ही एक शूर वीर का परिचय मेरी माता जी से था। अतः यह लेख उसी आजाद हिन्द फौज के एक सिपाही, रामेश्वर जी की गाथा है।

रामेश्वर जी का जन्म हरियाणा प्रान्त के जिले रोहतक के एक छोटे से गांव, पिलाना में स्व. श्री मान सिंह जी के घर हुआ था। हरियाणा की संस्कृति में एक व्यक्ति को उसके माता पिता द्वारा दिए गए नाम से न पुकार कर अपितु एक हास्य नाम से पुकारना एक सामान्य घटना है, इसी कारण से पूरा गांव उनको 'पणमेशरी' के नाम से जाना करता था। रामेश्वर जी आजाद हिन्द फौज के एक सिपाही थे और यह बात उनके प्रत्येक कथन में बखूबी झलकती थी। उन्हें बच्चे बहुत अच्छे लगते थे और वे उनके साथ घंटों बैठकर आजाद हिन्द फौज और फौज में अपने समय के बारे में बातें किया करते थें। उनकी इन्हीं बातों का संकलन कुछ इस प्रकार है।

वे अक्सर बताया करते थे कि किस प्रकार से रासबिहारी बोस ने आजाद हिन्द फौज की स्थापना सन् 1942 में जापान में की थी और सन् 1943 में सुभाष चंद्र बोस ने सर्वोच्च कमाण्डर के रूप में फौज की बागडोर संभाली थी। अपने शुरूआती सालों में रामेश्वर जी ब्रिटिश हुकूमत की फौज के एक सिपाही थे। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की तरफ से द्वितीय विश्वयुद्ध में भाग लिया था परन्तु युद्ध के दौरान वे जापानी ताकतों के हाथों पकड़े गए और उनको कारागार में डाल दिया गया। जापानी कारागार में उन्हें अनेकों प्रकार की प्रताड़ना का सामना करना पड़ा। वो बड़े गर्व से बताते हैं कि एक दिन अचानक उन्हें कारागार से रिहा कर दिया गया और देखते ही देखते उनकी कैदी की मैली पोशाक भारत की गौरवशाली आजाद हिन्द फौज की पोशाक में तब्दील हो गई। रामेश्वर जी ने उसके पश्चात भारत की आजादी के लिए सुभाष चंद्र बोस के साथ अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। अपने युद्धों के स्थान के बारे में पूछने पर वो सटीक जगह की व्याख्या नहीं कर पाते थे परन्तु उनके वर्णन एवं समकालीन इतिहास के अनुसार यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनका अधिकांश योगदान भारत के उत्तर पूर्वी इलाकों में था। वे बताते थे कि वे और उनके साथी कई दिनों तक भूखे-प्यासे घने जंगलों में अंग्रेजी फौज के विरुद्ध लड़ाई लड़ते थे। भूखे होने के बावजूद भी भारत माता के नाम की एक गुहार पर वे साहस से भर जाते थे। विश्वयुद्ध के अंत में हिरोशिमा एवं नागासाकी क्षेत्र में अमेरिका द्वारा गिराए गए परमाणु बम ने जापान की कमर तोड़ दी अतः जापान को हार माननी पड़ी। इसी के साथ सुभाष चंद्र बोस और उनकी फौज से जापान का समर्थन छूट गया। हथियारों और गोला बारूद के अभाव के चलते आखिरकार आजाद हिन्द फौज ने अपनी गति खो दी। अंग्रेजों द्वारा रामेश्वर जी एवं उनके कई साथियों को भगोड़ा करार दे कर गिरफ्तार कर लिया गया और उनको कारागार में सताया गया। किसी प्रकार से रामेश्वर जी अंग्रेजों की गिरफ्त से भाग निकले और अंततः 1947 में देश के आजाद होने के पश्चात् वे वापस अपने गांव आकर पुनः गुजर बसर करने लगे।

रामेश्वर जी का भारत माता के प्रति लगाव देखते ही बनता था। अक्सर वे अपनी आजादी की लड़ाई का वर्णन करते वक्त अश्रुधार हो जाते थे। वे प्रति वर्ष स्कूली छात्रों को आजादी दिवस के उपलक्ष्य में कुछ न कुछ देशभक्ति गीत तैयार कराया करते थे। अनेकों बार उन्होंने खुद भी स्कूल परिसर में गीत, यात्रा वृत्तान्त, देशभक्ति की गाथाएँ इत्यादि प्रस्तुत की। उनके एक गीत के बोल कुछ इस प्रकार हैं :-

" आजादी दे गए हे सुभाष चंद्र बोस,
कर गए जो भारत का उपकार,
देवताओं में हो गए वो शुमार।"

वर्ष 1995 में वे स्वयं भारत माता की गोद में सदा के लिए लीन हो गए। परन्तु अभी भी गांव के उनके काल के बच्चे रामेश्वर जी का विचार करके भावुक हो उठते हैं और उनमें देशभक्ति की भावना उमड़ पड़ती है। अपने इस वर्णन में मैं उनकी भावुकता को शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूँ। रामेश्वर जी जैसे न जाने कितने ही वीरों की गाथाएँ ऐसे ही किन्हीं कोनों में छुपी हुई हैं जो इतिहास की मुख्य धारा में सम्मिलित नहीं हो पाईं। ऐसे वीर एवं उनकी गाथाओं को शत शत नमन।

"जय नेता जी, जय रामेश्वर जी, जय हिन्द, जय भारत, वन्दे मातरम्।"

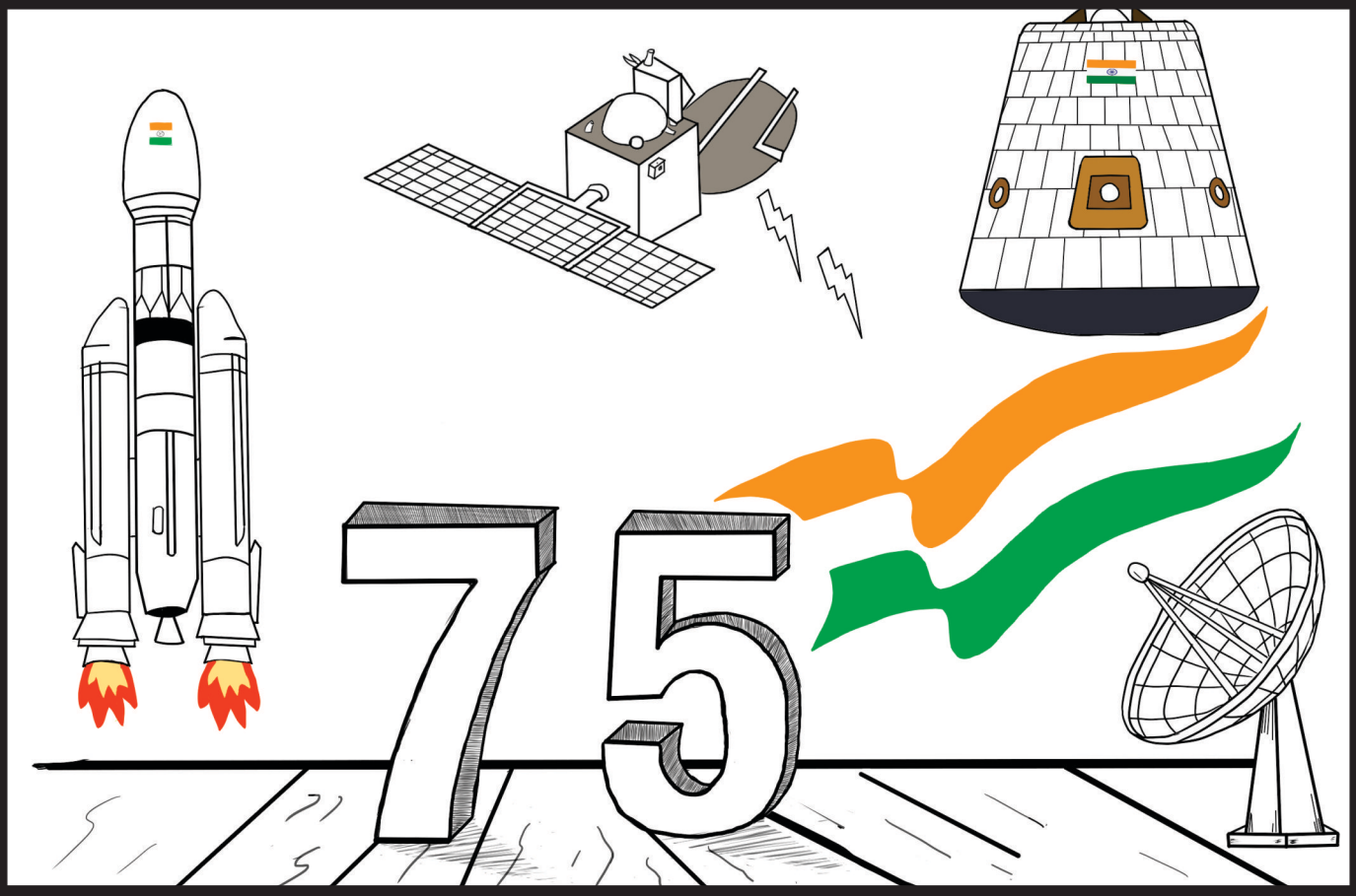

उत्तम सिंह
वैज्ञा./अभि.-एससी

रब्दान्त्से की सभ्यता – भारत का अपना माचू पिच्चू

प्रस्तावना :

गर्मी की छुट्टियों में हम पहली बार सिक्किम के प्रवास पर गए। भीड़-भाड़ वाले शहरों से दूर, हिमालय की गोद में बसे सिक्किम की खूबसूरती के बारे में तो सभी जानते हैं। ऊँचे-ऊँचे पहाड़, हरे-भरे विशाल वृक्षों से सुशोभित वन, गहरी दुर्गम घाटियों के बीच उफनती नदियाँ और दूध के समान श्वेत झरनों के सुन्दर दृश्यों ने हमारा मन मोह लिया। पेल्लिंग शहर के समीप हमें एक बहुत ही अनोखे और खूबसूरत, भारत के विलुप्त रब्दान्त्से (Rabdentse) शहर को खोजने का अनुभव प्राप्त हुआ। इस अनोखे अनुभव की शुरूआत पेल्लिंग-गेजिंग मार्ग पर स्थित एक विशाल पीले सजे हुए द्वार से होती है। इस द्वार से स्मारक परिसर में प्रवेश करते ही एक विशाल तालाब और ऊँचे-घने वृक्षों का अंतहीन वन दिखाई देता है। इस सघन वनक्षेत्र में एक पगडण्डीनुमा रास्ते पर चलकर इस विलुप्त शहर की खोज करना अपने-आप में बहुत ही रोमांचक अनुभव है। चढ़ाई और उतराई वाले पगडण्डी मार्ग के चारों ओर, लाल-भूरे शाहबलूत के वृक्षों पर, नमी से युक्त हरिता की चादर जीवन में पहली बार देखने को मिली। बार-बार यही शंका बनी रहती है कि कहीं आप सही रस्ते से भटक तो नहीं गए? मन में यह विचार आता है कि इतने सघन वन के बीच पूरा का पूरा शहर कैसे मिल सकता है? करीब आधे घंटे घने वन के बीच चलने पर, इतिहास के पन्नों में कहीं खोई हुई भारत के अपने माचू-पिच्चू की सभ्यता के दर्शन होते हैं। जो शहर कभी उन्नीसवीं सदी तक सिक्किम राज्य की दूसरी राजधानी रहा होगा, ऐसे रब्दान्त्से की अब सिर्फ पत्थर की बड़ी-बड़ी दीवारों में जड़ी हुई अनगिनत स्मृतियाँ ही शेष हैं। ऊंचाई पर स्थित स्मारक को बहुत ही अच्छे से संजोया गया है। चारों ओर पर्वतों और गहरी घाटियों से घिरे इस विप्लुत शहर की अलग ही ठाट-बाट और पहचान रही होगी। भूतपूर्व राजघराने का रहन-सहन, उनकी बौद्ध धर्म के प्रति असीम श्रद्धा और विश्वास के यहाँ जगह-जगह सबूत मिलते हैं।

रब्दान्त्से शहर का इतिहास :

रब्दान्त्से शहर भूतपूर्व सिक्किम राजशासन की दूसरी राजधानी सन् 1670 से 1814 तक रहा। समुद्रतल से लगभग 6000 फीट की ऊँचाई पर बसे इस अद्भुत प्राचीन शहर को नेपाल की गुरखा सेना द्वारा आक्रमण करके पूर्णतः नष्ट कर दिया गया था। अब यहाँ सिर्फ शानदार महल और चोरटनों (स्तूपों) के खंडहर और अवशेष ही दिखाई देते हैं। यह प्राचीन खंडहर भारत के पूर्वोत्तर में, पश्चिमी सिक्किम के पेल्लिंग शहर के समीप स्थित है। पेमायांग्त्से मठ

(Pemayangtse Monastery) जोकि सिक्किम के इतिहास के सबसे पुराने मठों में से एक है, इन्हीं खंडहरों के बहुत समीप है। मठ के रास्ते में प्रार्थना झंडों की श्रृंखला देखने को मिलती है। भूतपूर्व सिक्किम की राजधानी रब्दान्त्से से, विश्व के तीसरे और भारत के सबसे ऊँचे

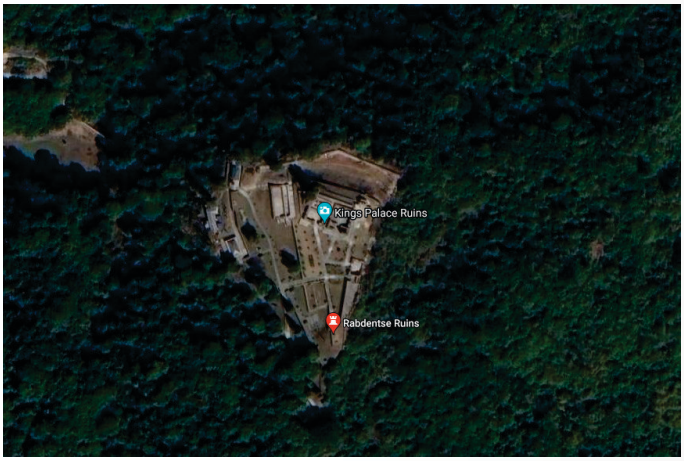

कंचनजंगा पर्वत शिखर का विहंगम दृश्य देखते ही बनता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा इन खंडहरों को राष्ट्रीय स्मारक के रूप में चिह्नित किया गया है। रब्दान्त्से शहर को 1670 में चोग्यल तेन्सुंग नमग्याल द्वितीय ने बसाया था। ये ही अपनी राजधानी को युक्सोम से रब्दान्त्से लेकर लाए। सदियों से रब्दान्त्से शहर के स्तूपों के दर्शन, बौद्ध धर्म के अनुयायियों की पवित्र धार्मिक यात्रा के अभिन्न अंग रहे हैं। नमग्याल द्वितीय के बाद आए तेनजिंग नमग्याल एक कमज़ोर राजा साबित हुए और उनके शासनकाल में सिक्किम राज्य के बहुत से हिस्सों पर नेपाल राज्य का कब्ज़ा होता रहा। अंत में इस चोग्यल (राजा) को रब्दान्त्से से भाग कर ल्हासा (चीन) में शरण लेनी पड़ी जहाँ सन् 1780में उनकी मृत्यु हुई। उनके पुत्र तुशुदपुद नमग्याल सन् 1793 में, चीन की मदद से, सिक्किम की राज-गद्दी पर पुनः काबिज़ हुए। नेपाल राज्य की सीमा के बेहद समीप होने के कारण वह अपनी राजधानी को सामरिक दृष्टि से सुरक्षित उत्तरी सिक्किम में तुमलोंग ले गए। अपने चरम काल में कभी सिक्किम की सत्ता का केंद्रबिंदु रहा प्रसिद्ध रब्दान्त्से शहर अब वीरान हो गया था। कालांतर में भूटान और नेपाल राज्य की सेनाओं के अनेक भीषण आक्रमणों को सहता हुआ यह ख़ूबसूरत शहर खंडहर में तब्दील हो गया।

रब्दान्त्से शहर की संरचना :

रब्दान्त्से शहर में प्रवेश करने पर एक विशाल पत्थर के सिंहासन पर तीन बड़े पत्थरों का समूह सुरक्षित है जिसको स्थानीय भाषा में "नाम्फोगांग" कहा जाता है। यहाँ पर राजघराने के न्यायाधीश बैठा करते थे और राज्य के न्यायालय के फैसलों को प्रजा को सुनाया करते थे। थोड़ा आगे चलने पर तापहप चोरटन (स्तूप) बना हुआ है जो थोड़ा जर्जर हो चुका है। यह स्तूप किसी ज़माने में राजमहल का मुख्य प्रवेश द्वार हुआ करता था। स्थानीय लोग बताते हैं कि सभी बाहर से आने वालों को यहाँ अपने-अपने घोड़ों से उतर कर, राजा के सम्मान में अपनी टोपी उतार कर जाना होता था। यहाँ से थोड़ा आगे जाने पर बरामदे के बीच राज-महल के अवशेष मिलते हैं।

रब्दान्त्से शहर के खंडहरों को उत्तरी और दक्षिणी भागों में बांटा जा सकता है। उत्तरी हिस्से में राजपरिवार के रहने का स्थान, राज-महल आदि हुआ करते थे। यहीं एक चबूतरे पर "दब-लगांग" है जो राजपरिवार का प्रार्थना करने का स्थान है। यहीं पर ही तीन चोरटन (स्तूप) मिलते हैं जो प्रार्थना के लिए बनाये गए थे और अभी भी बहुत ही अच्छी हालत में सुरक्षित हैं। यहाँ पर करीब सात फुट लंबा और पाँच फुट चौड़ा मार्बल का पत्थर है। यह पत्थर आज भी स्थानीय लोगों द्वारा पूजनीय है। किंवदंती है कि इस पत्थर को नदी से लाकर पहाड़ की चोटी पर एक ही पुरुष द्वारा स्थापित किया गया था। जहाँ यह पत्थर है उस स्थान को प्राचीन "रिशुम घुम्पा" नामक मठ के रूप में पूजा जाता है।

रब्दान्त्से शहर के दक्षिणी भाग में राजा अपनी प्रजा से मिला करते थे। बड़े बरामदे में बना पत्थर का सिंहासन आज भी यह एहसास कराता है जैसे अभी राजदरबार शुरू होने वाला हो। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा यह स्मारक भारतीय राष्ट्रीय धरोहर के रूप में सुरक्षित है और इसे सहेजने के लिए संबंधित विभाग के प्रयास बहुत ही सराहनीय हैं। रब्दान्त्से का शहर, पेरू के विश्वप्रसिद्ध माचू-पिच्चू के विलुप्त शहर जितना प्रसिद्ध तो नहीं है पर इस अनोखे शहर की विरासत और आन-बान-शान माचू-पिच्चू से कुछ कम भी नहीं है।

रब्दान्त्से शहर सिक्किम की खूबसूरत हरी-भरी पहाड़ियों के बीच बसा है। यहां मौसम सालभर बहुत अच्छा रहता है। अक्तूबर–नवम्बर एवं

बहुत की सुन्दर पहाड़ों के अद्भुत नज़ारे देखने को मिलते हैं। अगर आप भी भारत की प्राचीन सभ्यता, इतिहास और प्रचुर प्राकृतिक सौंदर्य में रूचि रखते है तो आप यहाँ जरूर जाएं, यह स्थान आपका मन मोह लेगा। सोलहवीं शताब्दी की बनी हुई बहुत सी संरचनाएं यहाँ अभी भी सुरक्षित हैं और बड़ी ही संजोकर रखी गई हैं। यहाँ पर अत्यधिक मात्रा में प्राकृतिक सौंदर्य देखने को मिलता है। प्राचीन बौद्ध मठों के बीच सुखद आत्मिक और मानसिक शांति की अनुभूति होती है। यहाँ आकर मुझे अद्भुत और अविस्मरणीय अनुभव हुआ, आशा है आप भी वहाँ जरूर जाएंगे।

अंकिता जैन
विवाहिती – निष्काम जैन (वैज्ञा./अभि. एसएफ)

ये कैसी आज़ादी???

ये कैसी आज़ादी भाई ये कैसी आज़ादी?
अंग्रेजों की गुलामी से तो हुए हम आज़ाद,
पर कब मिलेगी अँग्रेजी से आज़ादी?
ये कैसी आज़ादी भाई ये कैसी आज़ादी?
हो गए साल पचहत्तर पर अभी भी चर्चा है ये जारी,
क्यूँ राजभाषा लिखने के लिये देने पड़ते हैं पुरस्कार भारी?
ये कैसी आज़ादी भाई ये कैसी आज़ादी?
विदेश जाकर भले ही बसे हमारे भारतवासी,
फिर वहीं से देते हैं क्यूँ अपने देश को गाली?
ये कैसी आज़ादी भाई ये कैसी आज़ादी?
बोलने का हक दिया है संविधान ने हम सब को,
क्यूँ करके बकवास लोग कर रहे हैं अपनी मनमानी?
ये कैसी आज़ादी भाई ये कैसी आज़ादी?
लिखने की स्वतंत्रता से कर सकते हैं बात सच्ची,
पर बिक गए हैं लोग, बिक गई है लेखनी?
ये कैसी आज़ादी भाई ये कैसी आज़ादी?
जिन शहीदों ने जान गंवाकर दी अपनी कुर्बानी,
नाम आज उन्हीं का लेकर नेता करे बेईमानी?
ये कैसी आज़ादी 'आश' ये कैसी आज़ादी?
****

आशिष सोनी
वैज्ञा/अभि. एसएफ

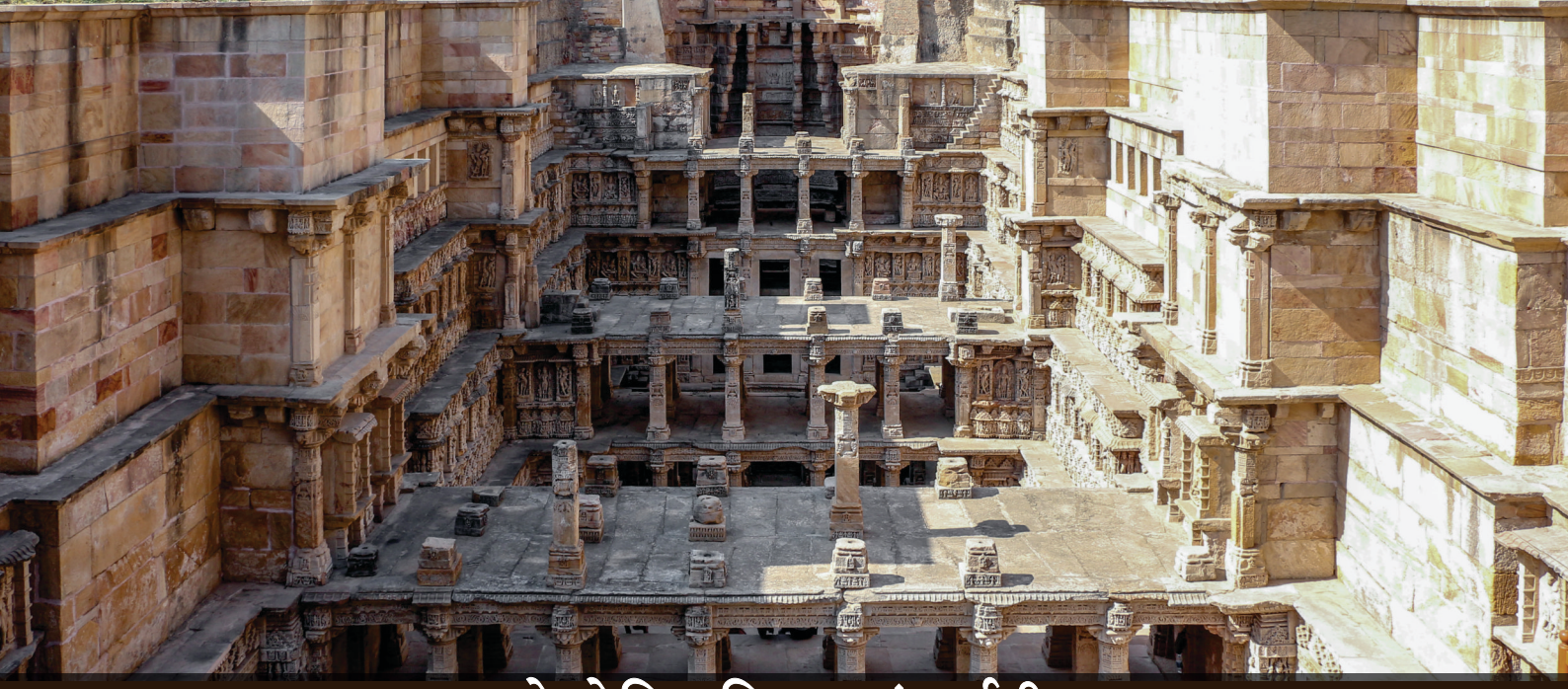

गुजरात के ऐतिहासिक एवं दर्शनीय स्थल

भारत एक समृद्ध ऐतिहासिक विरासत वाला देश है और इसकी संस्कृति प्राचीन होने के साथ-साथ गतिशील है। भारत का इतिहास इसकी संप्रभुता एवं अखंडता का प्रतीक है। भारत दुनिया के सबसे खूबसूरत देशों में से एक है और अपनी बहुरंगी संस्कृति तथा आकर्षक विरासतों के लिए जाना जाता है। भारत में ऐसे अनेक स्थान हैं जो भारत के गौरवमयी इतिहास को प्रदर्शित करते हैं। अपनी शानदार वास्तुकला से लेकर एक मजबूत विरासत तक, भारत के ऐतिहासिक स्मारक बहुत कुछ बोलते हैं। ऐसा ही मैंने पाया जब मैं अगस्त 2021 में गुजरात भ्रमण पर गई। गुजरात के ऐतिहासिक स्थान भारत के विविध आयामों का भव्य प्रदर्शन हैं। सिंधु घाटी सभ्यता के 4000 साल से अधिक प्राचीन स्थल धोलावीरा और लोथल का रोमांच महसूस करने, भुज के रेगिस्तानी शहर और राजाओं की विरासत का अनुभव करने, पोरबंदर में महात्मा गांधी के जन्मस्थान और जूनागढ़ की पूर्व रियासत की गहरी समझ हासिल करने के लिए मैं आपको इस यात्रा पर ले चलती हूँ। रानी की वाव या 'रानी की बावड़ी' गुजरात के छोटे से शहर पाटन में स्थित जल भंडारण प्रणाली का एक विशिष्ट रूप है। गुजरात राज्य में यह सबसे भव्य बावड़ी मानी जाती है। इसका निर्माण रानी उदयमति ने अपने पति चालुक्य वंश के राजा भीम-1 की याद में करवाया था। यह मारू-गुजरात स्थापत्य शैली के शिखर का प्रतीक है। बावड़ी सात स्तरों में विभाजित है जिसके अंत में गहरा गोलाकार कुआं है। एक सीढ़ीदार गलियारा नियमित अंतराल पर स्तंभों वाले बहुमंजिला मंडपों द्वारा विभाजित है। दीवारें सुन्दर और नाजुक आकृतियों और मूर्तियों से अलंकृत हैं। बावड़ी में 212 स्तंभ हैं। यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध इस 900 साल पुरानी संरचना को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी किए गए नए ₹100 के मुद्रा नोट में प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया है।

अडालज की वाव इस्लामी प्रभाव के साथ वास्तुकला की सोलंकी शैली में बनाई गई है। फूलों के रूपांकन और ग्राफिक्स कुएं के विभिन्न स्तरों पर उकेरे गए हिंदू और जैन देवताओं के प्रतीकों के साथ बहुत अच्छी तरह से मेल खाते हैं। सभी दीवारों पर कुछ पौराणिक दृश्यों के साथ-साथ महिलाओं के छाछ मंथन, नर्तकियों के साथ संगीतकारों, खुद को सजाने वाली महिलाओं और एक स्टूल पर बैठे एक राजा के दृश्यों को उकेरा गया है। नक्काशी में कुछ दिलचस्प विशेषताओं में अमी खुम्बोर का चित्रण शामिल है, जो जीवन, कल्प वृक्ष और नवग्रह या नौ ग्रहों का प्रतीक है।

स्वामीनारायण अक्षरधाम गांधीनगर शहर में स्थित एक हिंदू मंदिर है और अहमदाबाद के शीर्ष आकर्षणों में से एक है। इसका शाब्दिक अर्थ है ईश्वर का दिव्य निवास। इसमें स्वामीनारायण की 1.2 टन सोने की परत वाली 7 फुट ऊंची मूर्ति है और आध्यात्मिक व्यक्तित्वों की 256 मूर्तियाँ भी हैं। मंदिर के प्रत्येक तत्व से आध्यात्मिकता गूंजती है- मंदिर, प्रदर्शनियाँ, यहाँ तक उद्यानों से भी। हर शनिवार और रविवार को रोशनी का आकर्षक प्रदर्शन होता है। यहां सत-चित-आनंद नामक एक जल शो भी आयोजित किया जाता है, जो उपनिषदों की एक प्रसिद्ध कहानी बताता है। अक्षरधाम में एक शोध केंद्र और पुस्तकालय भी है, जहां केवल सूचीबद्ध विद्वानों को ही अनुमति दी जाती है। अक्षरधाम की यात्रा एक सुखद अनुभव है। यहाँ प्रत्येक प्रार्थना आत्मा-सुधार में एक प्रयास और ईश्वर के करीब एक कदम है।

साबरमती आश्रम की स्थापना महात्मा गांधी ने 1915 में अपने बैरिस्टर मित्र जीवनलाल देसाई के कोचरब स्थित बंगले में की थी। बाद में इसे साबरमती नदी के तट पर स्थानांतरित कर दिया गया। यहाँ गांधीजी 1917 से 1930 ई. तक रहते थे। आश्रम को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के कार्य के लिए मुख्य केंद्रों में से माना गया है। गांधीजी ने 12 मार्च 1930 को इस आश्रम से दांडी मार्च या नमक सत्याग्रह का नेतृत्व किया था।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर दांडी मार्च के पर्याप्त प्रभाव की वजह से भारत सरकार ने आश्रम को राष्ट्रीय स्मारक के रूप में मान्यता दी है। आज यह प्रेरणा, मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में कार्य करता है। आश्रम का

मुख्य भाग गांधी स्मारक संग्रहालय है। इसमें एक पुस्तकालय, सभागार और महात्मा गांधी के जीवन को दर्शाने वाली फोटो गैलरी है। हमने यहां गांधीजी द्वारा लिखे गए पत्रों का संग्रह, उनके लेखों की पांडुलिपियां और भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित फिल्में भी देखीं। आश्रम के पुस्तकालय में 35000 पुस्तकों का संग्रह है, जो सभी महात्मा गांधी के जीवन और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर आधारित हैं। हमने आगंतुक आश्रम ट्रस्ट द्वारा आयोजित 90 मिनट के निर्देशित दौरे में आश्रम के बारे में जानकारी ली। यात्रा स्लाइड शो से शुरू होती है और पर्यटकों को आश्रम के विभिन्न हिस्सों जैसे मगन निवास, उपासना मंदिर, हृदय कुंज और विनोबा-मीरा कुटीर तक ले जाती है। पेंटिंग गैलरी, 'माई लाइफ इज माई मैसेज', और लाइब्रेरी एंड आर्काइव्स को देखने के बाद 90 मिनट का दौरा समाप्त होता है। आज यह प्रेरणा, मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में कार्य करता है और गांधी के जीवन मिशन के स्मारक के रूप में खड़ा है।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा है, जिसकी ऊँचाई 182 मी. है। यह भारतीय राजनेता और स्वतंत्रता कार्यकर्ता लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा है। स्वतंत्र भारत बनाने के लिए भारत की 562 रियासतों को एकजुट करने में उनके नेतृत्व के लिए उनका सम्मान किया गया। इस प्रतिमा का निर्माण अक्तूबर 2013 में भारतीय कंपनी लार्सन एंड टुर्बो द्वारा शुरू किया गया और इसका उद्घाटन प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने 31 अक्तूबर 2018 को पटेल जी की 143वीं जन्मजयंती पर किया। उनकी प्रतिमा गरिमा, आत्मविश्वास और दयालुता से भरे उनके व्यक्तित्व का परिचय देती है। प्रतिमा को 180 किलोमीटर प्रति घंटे तक की हवाओं और रिक्टर पैमाने पर 6.5 मापने वाले भूकंपों का सामना करने के लिए बनाया गया है। प्रतिमा को पांच क्षेत्रों में विभाजित किया गया है, जिसमें से तीन क्षेत्र जनता के लिए खुले हैं। इसके आधार से प्रतिमा की पिंडली तक पहला क्षेत्र है जिसमें तीन स्तर हैं और इसमें प्रदर्शनी क्षेत्र, मेजेनाइन और छत शामिल है। पहले क्षेत्र में स्मारक उद्यान और एक संग्रहालय भी है। दूसरा क्षेत्र प्रतिमा की जांघों तक पहुंचता है और तीसरा 153मी. की ऊंचाई पर देखने वाली गैलरी तक फैला है। चौथा क्षेत्र रखरखाव क्षेत्र है और अंतिम क्षेत्र में मूर्ति के सिर और कंधे शामिल हैं।

गुजरात में कई अन्य ऐतिहासिक विरासतें हैं जिनका अनुभव होना अपने-आप में एक सौभाग्य होता है। समय और स्थान के अभाव की वजह से उनकी चर्चा हम फिर कभी करेंगे। अगर आपने उपर्युक्त स्थान नहीं देखे हैं, तो अवश्य देखकर आइए और अपने देश की विरासतों के दर्शन का आनंद लीजिए।

शिस्ची
वैयक्तिक सहायक

स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन के रोचक तथ्य

भारत की आजादी की लड़ाई में लाखों लोगों ने भाग लिया था लेकिन कुछ ऐसे भी लोग थे जो एक प्रतीक बनकर उभरे। यह कहना गलत नहीं होगा कि आजादी के लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने जीवन का त्याग किया और इन्हीं लोगों के कारण हम आज स्वतंत्र देश में रहने का आनंद ले रहे हैं। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के लिए जीवन, परिवार, संबंध और भावनाओं से भी ज्यादा महत्वपूर्ण हमारे देश की आजादी रही और इसके लिए उन्होंने अपनी जान की भी परवाह नहीं की। ऐसे महान सेनानियों के नाम कुछ इस प्रकार हैं।

(1) मंगल पांडे

(2) भगत सिंह

(3) चंद्रशेखर आजाद

(4) सुभाषचंद्र बोस

देश के युवाओं को स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान से प्रेरणा लेनी चाहिए और एक सौहार्दपूर्ण और समावेशी समाज की दिशा में प्रयास करना चाहिए। किसी प्रकार के भेदभाव से मुक्त समाज का निर्माण, स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को वास्तविक श्रद्धांजली है। देश को आजाद कराने में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता है। आज के युवाओं को स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति से देश को अक्षुण्ण व अखंड रखने की प्रेरणा लेनी चाहिए। स्वतंत्रता सेनानियों के अंदर त्याग, बलिदान और आजादी के लिए देश पर मर-मिटने का जज्बा था। यही उनके जीवन के रोचक तथ्य आज के हमारे देश के युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं।

वैष्णवी विजय जैसवाल
पुत्री-विजय छगनलाल जैसवाल (वरि. तकनीशियन ए)

वर्ग पहेली

सौजन्य: आरती सोनी
विवाहिती: आशिष सोनी (वैज्ञा./अभि. एसएफ)

1		2		3			■	4		5	
	■		■		■	■	6		■		■
7				■	■	8	■		■	9	
	■	■	■	10					■		■
11	12		13	■	■		■	■	■	■	14
15		■	16	17	■	■	■	■	18	19	
■	■	20			■	21		22			■
23	24		■	25			■	26		■	27
28			■	■	■	■	29	■	■	30	
	■	■	31	32	33	■		■	■	34	
35		36				■	■	37			■
	■		■	■	■	■	38	■	■	39	40
	■	■	41	■	■	42	■	43		■	
44				■	45				■	■	

बांये से दांये

क्रम		शब्द संख्या
1.	75 वीं वर्षगांठ	3,4
4.	वल्लभभाई पटेल	4
6.	कई सेनानियों ने जेल को ही अपना ___ बना लिया था, आशियाना	2
7.	___ नहीं सिखाता आपस में बैर रखना	4
9.	सूर्य	2
10.	विधानसभा बम कांड के एक स्वतन्त्रता सेनानी, ___ दत्त	5
11.	गुजरात में हुआ एक प्रमुख किसान आंदोलन जिसका नेतृत्व वल्लभभाई पटेल ने किया था, ___ सत्याग्रह	4
15.	पृथ्वी, सती, पार्वती के लिए एक और नाम	2
16.	स्वतन्त्रता सेनानियों ने अंग्रेजों के लिए ___ का माहौल बना दिया था, खौफ, भय	2
18.	देश पर शहीद होने वाले जवान ___ हो जाते हैं।	3
20.	हमारे देश का नाम इस राजा के नाम से पड़ा।	3
21.	वंदे मातरम के रचयिता, बंकिमचंद्र ___	5
23.	स्वतन्त्रता की लड़ाई में कई स्त्रियों ने अपने ___ गंवाये। सौभाग्य, अहिवात	3
25.	स्वामी विवेकानंद का नाम, ___ दत्त	3
26.	1942 के बाद स्वतन्त्रता की लड़ाई ने एक ___ प्राप्त कर ली थी। गति, सामंजस्य	2
28.	हमारा प्यारा देश	3
30.	कई सेनानी इस ___ को छोड़ शहीद हो गए।, दुनिया	2
31.	ए मेरे प्यारे ___, तुझ पर दिल कुर्बान	3
34.	फांसी की रस्सी यहीं लगती है; गरदन; गला	2
35.	पृथ्वीराज रासो के रचयिता	2,4
37.	अपनी ___ को हम हरगिज़ भुला सकते नहीं।	3
38.	गांधीजी की जन्म तारीख	1
39.	स्वतन्त्रता सेनानियों ने आज़ादी की ___ जलाए रखी थी। दिया	2
43.	कई शहीदों के ___ भी हम नहीं जानते।	2
44.	भारत की कोकिला, ___ नायडू	4
45.	5 फरवरी 1922 गोरखपुर में हुआ ___ कांड	2,2

ऊपर से नीचे

क्रम		शब्द संख्या
1.	गांधी आश्रम, कोचरब आश्रम यहां पर स्थित है	6
2.	कई बाहरी शासकों ने देश को मानो ___ कर दिया, बर्बाद	3
3.	हमारे देश के प्रमुख परमाणु वैज्ञानिक ___ भाभा	2
4.	आज़ाद देश की प्रथम ___ कांग्रेस पक्ष की बनी।	4
5.	भारत के वयोवृद्ध पुरुष ___ नौरोजी	4
8.	देश के प्रथम अंतरिक्ष यात्री, ___ शर्मा	3
12.	सरहद पर खड़े जवान देश की दिन-रात ___ करते हैं।	2
13.	नेता	3
14.	महाराष्ट्र के सेनानी ___ सावरकर	2
17.	पद्मभूषण भारतीय उद्यमी, ___ टाटा	3
18.	1857 के विप्लव के बाद आज़ादी की लड़ाई में नए ___ जुड़ते गए। प्रकरण	3
19.	इसकी बुरी लत ने कई घरों को उजाड़ा है, मदिरा	2
20.	विधानसभा में बम फेंकने वाले निडर सेनानी, ___ सिंह	3
21.	पंडितजी, ___ शेखर आज़ाद	2
22.	लाल-बाल-___, बिपिनचंद्र	2
23.	आज़ाद हिंद फ़ौज के संस्थापक	5,3
24.	आखिरकार अंग्रेजों को अपनी ___ स्वीकारनी पड़ी, पराजय	2
27.	सन 1857 के विप्लव के नायक, ___ पांडे	3
29.	हमारी राजभाषा	2
30.	___ चन्द्र बसु, रेडियो विज्ञान के पिता	4
31.	पुष्प की अभिलाषा काव्य में पुष्प यह ___ मांगता है कि उसे उस पथ पर फेंका जाए, जहाँ से वीर पुरूष मातृभूमि के लिए अपना बलिदान देने के लिए गुजर रहे हों।	2
32.	उस समय, तब	2
33.	हमारे वैज्ञानिकों ने कई ___ खोजें की हैं, नवीन	2
36.	सेना का सेनापति, किलेदार	2
40.	आज भी कई सेनानी अपनी ___ सेवाएँ प्रदान करते हैं, मान या प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला	3
41.	लताजी भी इस ___ दुनिया को छोड़कर चल बसे, नश्वर	2
42.	स्वतंत्रता की लड़ाई में पुरुष के साथ ___ ने भी अपना योगदान दिया था	2
43.	स्वतंत्रता संग्राम का एक ___: इन्कलाब जिंदाबाद	2

आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वराज के बाद दुःख का आरंभ

"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।" - स्वतंत्रता के इस जयघोष के साथ देश की आज़ादी के महासंग्राम को एक ऊर्ध्व दिशा देने वाले हमारे देश के महान सपूत, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलकजी के एक प्रेरणादायक किस्से को साझा करता हूँ।

तत्कालीन सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट फॉर इंडिया, विलियम वेजवुड बेन्न, भारत के दौरे पर थे। हमारे वरिष्ठ नेताओं को उन्होंने मिलने के लिए बुलाया। सभी नेता नए सूट-बूट पहनकर उस बैठक में पहुँचे। देशी कपड़ों में पहुँचने वाले दो नेता थे, लोकमान्य तिलकजी और महात्मा गांधीजी।

वेजवुड बेन्न ने लोकमान्य तिलकजी से पूछा: "आप स्वराज मांग रहे हैं। परंतु, क्या आपको लगता है कि स्वराज मिलने से आपको सुख मिलेगा?"

लोकमान्य तिलकजी ने अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए जवाब दिया: "नहीं, सुखी तो हम आज हैं, पर हमें ऐसा सुख नहीं चाहिए। आज हमें कोई चिंता नहीं, हम आराम कर रहे हैं। भारत की रक्षा आप कर रहे हैं, राज्य भी आप ही चला रहे हैं। स्वराज प्राप्त होगा तब हमारा "दुःख" शुरु होगा। पर, हम उस "दुःख" को गले लगाना चाहते हैं। जो भी विघ्न आएंगे, उससे हमारी शक्ति बढ़ेगी। हम गलतियाँ करेंगे और उन्हें सुधार कर ही हमें सीख मिलेगी। हमें ये सब बाधाएँ ही चाहिए।"

ऐसे उदात्त विचारों से प्रेरित होकर ही हमारे स्वतंत्रता संग्राम के सूरमाओं ने अपना तन-मन-धन सब कुछ देश हेतु न्यौछावर कर दिया। आइए, आज़ादी के अमृत काल में हम इन शूरवीरों के उच्चतम त्याग को याद करें और इनकी जीवनी से प्रेरणा प्राप्त कर, भारत को अविरत विकास के पथ पर ले जाने के लिए कदम बढ़ाएँ। इस अवसर पर निम्न स्व-रचित पंक्तियों के साथ पाठकों से बिदा लेना चाहूँगा:

"करें उन सेनानियों के विचारों का सम्मान,
जिनसे संभव हो सका आज, स्वतंत्रता का सुधापान
आहुति प्राणों की, और दिए अनेकानेक बलिदान,
जिनसे विश्व में उन्नत आज, भारतवर्ष का गर्वगान..."

देवांग मांकड
वैज्ञा./अभि. एसजी

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रसिद्ध भाषण और नारे

15 अगस्त 1947 की आधी रात को भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र बना। राष्ट्र की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए कई ज्ञात और अज्ञात पुरुषों और महिलाओं ने अपने जीवन का बलिदान दिया। जो बचता है वह उनकी यादें हैं और ज्ञान के शब्द हैं। आज मैं भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के कुछ प्रसिद्ध भाषणों और नारों पर प्रकाश डालूंगी, जिन्होंने समूचे स्वतंत्रता आंदोलन में प्रतिभागिता हेतु लोगों को प्रेरित किया।

"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा"

यह बाल गंगाधर तिलक का प्रसिद्ध नारा है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रसिद्ध नेता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई, 1856 को हुआ था। वे एक समाज सुधारक, वकील और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के पहले नेता थे। वे अपने समय के सबसे प्रभावशाली स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे। उनके शब्दों ने उनके अनुयायियों में देशभक्ति की भावना जगा दी और अनगिनत लोगों को बिना पीछे हटे स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। यह उनके द्वारा 1917 में नासिक में दिए गए भाषण का मूल पाठ है।

"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। मेरा स्वराज जब तक मेरे अंदर जिंदा है, मैं कमज़ोर या बूढ़ा नहीं हो सकता। कोई भी हथियार इस हौसले को पस्त नहीं कर सकता, कोई आग इसे जला नहीं सकती, पानी की धारा इसे भिगो नहीं सकती, हवा के तेज झोंके भी इसे सुखा नहीं सकते। हम स्वराज की मांग करते हैं और हम इसे लेकर रहेंगे।"

"भारत छोड़ो" भाषण "करो या मरो"

भारत छोड़ो प्रस्ताव से एक दिन पहले 7 अगस्त, 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक के बाद महात्मा गांधी द्वारा बंबई में दिए गए भाषण में "अंग्रेजों भारत छोड़ो" का प्रस्ताव पारित किया गया था, जिसमें भारत में ब्रिटिश शासन के तत्काल अंत की घोषणा की गई थी।

"यहां एक मंत्र है, एक छोटा मंत्र जो मैं आपको देता हूं। आप इसे अपने दिलों पर छाप सकते हैं और अपनी हर सांस को इसकी अभिव्यक्ति दे सकते हैं। मंत्र है: 'करो या मरो'। हम भारत को स्वतंत्र करेंगे या मरेंगे। हम अपनी गुलामी की निरंतरता को देखने के लिए जीवित नहीं रहेंगे।" गोवालिया टैंक मैदान, जहां महात्मा गांधी ने अपना भाषण दिया था, का नाम बदलकर अगस्त क्रांति मैदान कर दिया गया।

"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा"

सुभाषचंद्र बोस ने 1944 में बर्मा (अब म्यांमार) में भारतीय राष्ट्रीय सेना को यह बयान दिया, भारत के युवाओं से उनके साथ स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने का आग्रह किया। उनके शब्दों का उद्देश्य उन्हें देश के लिए और अधिक सक्रिय रूप से लड़ने और भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने जीवन का बलिदान करने के लिए प्रेरित करना था। नेताजी सुभाष चंद्र बोस के शक्तिशाली भाषण ने देश को क्रान्ति का संदेश भेजा, जब उन्होंने "तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूंगा" का नारा दिया।

"जय हिन्द"

"जय हिंद" का नारा "नेताजी" सुभाष चंद्र बोस द्वारा रचा गया था। इस शब्द को स्वतंत्र भारत द्वारा राष्ट्रीय नारे के रूप में अपनाया गया। जय हिंद पोस्टमार्क भी स्वतंत्र भारत का पहला स्मारक पोस्टमार्क था। यह 15 अगस्त, 1947 को भारत की स्वतंत्रता के दिन जारी किया गया था। आज, "जय हिंद" एक ऐसा अभिवादन है जिसे हम राजनीतिक बैठकों और यहां तक कि स्कूल के कार्यक्रमों में भी सुनते हैं।

"वन्दे मातरम्"

"जय हिंद" की तरह, "वंदे मातरम्" हमारे स्वतंत्रता समय का एक और नारा है जिसे हम आज कई सभाओं में सुनते हैं। इसका अनुवाद है, "माँ, मैं आपको नमन करता हूँ।" यह बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित महज एक गीत और नारा ही नहीं था अपितु इससे कहीं अधिक, यह एक शपथ थी, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जोश और देशभक्ति की एक प्रबल अग्नि प्रज्ज्वलित की। 1905 और 1947 के बीच, लोगों ने पहले देशभक्ति के नारे के रूप में और फिर युद्ध के नारे के रूप में "वंदे मातरम्" के नारे लगाए।

"सत्यमेव जयते"

यह नारा मदन मोहन मालवीय द्वारा दिया गया। मदन मोहन मालवीय जी भारत के पहले और अंतिम व्यक्ति थे जिन्हें महामना की उपाधि से अलंकृत किया गया था। जिन्होंने 1918 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में अपने अध्यक्षीय भाषण में इस नारे का प्रयोग किया था। उन्होंने सुनिश्चित किया कि यह नारा जनता तक पहुंचे और उन्हें प्रेरित करे।

"इंकलाब जिंदाबाद"

यह नारा सरदार भगत सिंह द्वारा लोकप्रिय किया गया था, इसे 1921 में कार्यकर्ता, स्वतंत्रता सेनानी और उर्दू कवि हसरत मोहनी द्वारा रचा गया था। यह एक युद्ध का नारा था जिसने अनगिनत लोगों को क्रान्ति हेतु सड़कों पर उतारा।

"सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा"

मोहम्मद इकबाल द्वारा लिखा गया प्रसिद्ध गीत "सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा" युवाओं में देशभक्ति की भावना को जीवंत करने के लिए नारे के रूप में इस्तेमाल किया गया था।

मोहम्मद इकबाल एक प्रसिद्ध कवि, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक और उल्लेखनीय शिक्षाविद् थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी में दिए गए भाषणों एवं नारों ने स्वतंत्रता आंदोलन को एक नयी धार दी। इन नारों से प्रभावित होकर आम भारतीय अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध उठ खड़ा

हुआ। इन नारों ने उसे और भी जोश के साथ आज़ादी की लड़ाई लड़ने हेतु प्रेरित किया। अंततः इन्हीं नारों के प्रभाव ने 15 अगस्त सन 1947 को अंग्रेजी हुकूमत को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. भारतीय संघर्ष, नेताजी सुभाष चंद्र बोस
2. भारत के स्वतंत्रता सेनानी, एम जी अग्रवाल
3. स्वतंत्रता के लिए भारत का संघर्ष, बिपन चंद्र
4. Voices of Indian Freedom Movement, J. C. Johari
5. Civil Disobedience Movements in India and India's Case for Freedom, C. V. H. Rao
6. Essays on Indian Freedom, Raj Kumar

सेजल पटेल
तकनीकी अधिकारी सी

सागी श्रवण कुमार
वैज्ञा./अभि. जी

डॉ. मिलिंद महाजन
वैज्ञा./अभि. एच

स्वतंत्रता के बाद देश की 75 उपलब्धियों का संकलन

(1) 15 अगस्त 1947 से स्वतंत्रता के तुरंत बाद जब 560 रियासतों ने भारत संघ के अधीन आना स्वीकार किया तो दुनिया का सबसे बड़ा विलय और अधिग्रहण हुआ।

(2) भारत दुनिया का एक मात्र ऐसा देश है जिसने अपनी स्वतंत्रता के बाद से ही अपने प्रत्येक वयस्क नागरिक को मतदान का अधिकार दिया था।

(3) 12 अगस्त 1948 के दिन लंदन ऑलंपिक के दौरान भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने लगातार चौथा और आजादी के बाद पहला ओलंपिक स्वर्ण मेडल जीत कर अपना वर्चस्व कायम रखा।

(4) सन् 1950 को सुबह 10.18 बजे भारत एक गणतंत्र देश बना। इसके बाद 10.24 बजे डॉ राजेंद्र प्रसाद ने भारत के पहले राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली, जिसके बाद पूरे देश में संविधान लागू हुआ।

(5) सन् 1951 में रेलवे का राष्ट्रीयकरण किया गया और अब भारतीय रेलवे दुनिया के सबसे बड़े नेटवर्क में से एक है। इसमें 68312 किमी मार्ग पर 115000 किमी का ट्रैक और 7112 स्टेशन हैं।

(6) 6 जनवरी 1954 को परमाणु उर्जा आयोग के द्वारा ट्रॉम्बे में परमाणु उर्जा संस्थान (ए.ई.ई.टी) आरम्भ किया गया और सन् 1957 में प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा राष्ट्र को समर्पित किया गया।

(7) सन् 1955 में भारत देश का पहला कंप्यूटर HEC- 2M इंडियन स्टैटिस्टिकल इंस्टीट्यूट (ISI), कोलकाता में लगाया गया था।

(8) भारत ने 4 अगस्त 1956 को एशिया का पहला न्यूक्लियर रिएक्टर बनाया था। आज भारत के पास कुल 21 न्यूक्लियर रिएक्टर्स हैं।

(9) सन् 1956 में भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने मेलबर्न ओलंपिक में फिर स्वर्ण पदक जीता था।

(10) मुंबई के उत्तरी उपनगर पवई में सन् 1958 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) की स्थापना हुई।

(11) 2 सितंबर 1959 को आरती साहा इंग्लिश चैनल पार करने वाली पहली एशियाई महिला बनीं।

(12) 15 सितंबर 1959 को, भारत सरकार ने दिल्ली में दूरदर्शन याने डीडी को लॉन्च किया।

(13) सन् 1960 के रोम ओलिंपिक में 400 मीटर दौड़ की फाइनल में मिल्खा सिंह चौथे स्थान पर रहे। मिल्खा सिंह महज 0.01 सेकेंड से पदक हार गए पर वे ऐसा रिकॉर्ड बनाने वाले पहले भारतीय बने।

(14) सन् 1962 के एशियाई खेलों में भारतीय फुटबॉल टीम ने स्वर्ण जीतकर सबसे ऊंची रैंकिंग हासिल की।

(15) सन् 1966 में रीता फारिया विश्व सुंदरी का खिताब जीतने वाली पहली भारतीय महिला हुई।

(16) सन् 1967 में मशहूर सितारवादक पंडित रविशंकर को ग्रैमी पुरस्कार प्रदान किया गया।

(17) सन् 1968 में डॉ प्रफुल्ल सेन, हृदय प्रत्यारोपण सर्जरी करने वाले एशिया के पहले डॉक्टर बने।

(18) 15 अगस्त, 1969 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की स्थापना राष्ट्र को अंतरिक्ष आधारित सेवाएं प्रदान करने और प्रौद्योगिकियों को विकसित करने हेतु की गई थी । इसरो आज दुनिया की छह सबसे बड़ी अंतरिक्ष एजेंसियों में से एक है।

(19) 18 मई 1974 को पोखरण में भारत ने पहला परमाणु परीक्षण 'बुद्ध स्माइलिंग' (बुद्ध मुस्करा रहे हैं) किया। इसने विश्व के परमाणु क्षमता संपन्न देशों की सूची में भारत का नाम दर्ज करा दिया।

(20) 19 अप्रैल 1975 को सोवियत संघ की सहायता से स्वदेश में विकसित पहला उपग्रह आर्यभट्ट अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक स्थापित किया गया, जो इसरो के एक लंबे सफर का पहला कदम माना जाता है।

(21) 25 अक्टूबर 1975 से भारत में सामाजिक न्याय को हासिल करने के लिए अधिनियम 1976 को लागू करके बंधुआ मजदूरी प्रणाली को संपूर्ण देश से खत्म कर दिया गया।

(22) सन् 1977 में माइकल फरेरा ने मेलबर्न में पहली बार विश्व बिलियार्ड्स चैंपियनशिप जीती।

(23) सन् 1979 में भारतीय सुप्रीम कोर्ट ने जनहित याचिका को वैध करार दिया, यह दुनिया में न्यायिक नवीनता के महत्वपूर्ण उदाहरणों में से

एक है।

(24) सन् 1980 में चेचक की बीमारी से निपटने के लिए भारत ने सबसे लंबे टीकाकरण की शुरूआत की।

(25) सन् 1982 में नई दिल्ली में भारत ने एशियाड खेलों की पुन: मेजबानी की। अपने घर में भारत 13 स्वर्ण, 19 रजत और 25 कांस्य पदक जीतकर तालिका में कुल 57 पदकों के साथ पांचवें स्थान पर रहा।

(26) 25 जून 1983 को कपिल देव की अगुवाई में भारतीय क्रिकेट टीम ने पहली बार विश्व कप जीता था।

(27) 3 अप्रैल, 1984 को भारत के पहले अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा सोवियत संघ के बैकानूर से सोयूज टी-11 अंतरिक्ष यान से उड़ान भरकर अंतरिक्ष में पहुंचे थे। शर्मा अंतरिक्ष में 7 दिन 21 घंटे तक रहे।

(28) सन् 1985 में भारत फास्ट ब्रीडर न्यूक्लियर रिएक्टर हासिल करने वाला छठवां देश बना।

(29) भारत के गीत सेठी ने 1985 में पहली बार और बाद में 9 बार विश्व बिलियर्ड चैम्पियनशिप जीती थी। गीत सेठी का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में एमेच्योर वर्ल्ड चैम्पियनशिप जीतने के कारण दर्ज है।

(30) भारत में देश की पहली टेस्ट ट्यूब बेबी हर्षा चावड़ा का जन्म 6 अगस्त 1986 को मुंबई के केईएम अस्पताल में मुंबई की मशहूर डॉक्टर इंदिरा हिंदूजा और डॉ कुसम झावेरी ने करवाया था।

(31) 'लिटल मास्टर' नाम से मशहूर क्रिकेटर सुनिल गावस्कर 7 मार्च 1987 को अहमदाबाद में टेस्ट मैच खेलते हुए अपने टेस्ट करियर में 10 हजार स्कोर करने वाले विश्व के पहले क्रिकेटर बने।

(32) 17 मार्च, 1988 को सोवियत बैकानूर कॉस्मोड्रोम से इसरो ने एशिया का पहला रिमोट सेंसिंग सैटेलाइट आईआरएस-1ए को लॉन्च किया था। इस मिशन ने 8 वर्ष और 4 महीनों तक सेवाएं दी थीं।

(33) सन् 1990 में कुवैत और इराक़ से 1 लाख 10 हज़ार भारतीयों को एयरलिफ्ट किया गया, जो दुनिया का अब तक का सबसे बड़ा नागरिकों को बाहर निकालने का प्रयास माना जाता है।

(34) सन् 1993 में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भारत को दुनिया की छठीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बताया।

(35) सन् 1993 में फिल्मकार सत्यजीत रे को अपने सिनेमा के लिए ऑस्कर से नवाज़ा गया।

(36) 8 फरवरी 1994 को कपिल देव ने अहमदाबाद में भारत और श्रीलंका के बीच खेले गए तीसरे टेस्ट मैच के दौरान 432 वां टेस्ट विकेट हासिल करके रिचर्ड हेडली के विश्व रिकॉर्ड को तोड़ दिया था।

(37) सन् 1994 में भारत की सुष्मिता सेन ने मिस यूनिवर्स और ऐश्वर्या राय ने मिस वर्ल्ड का ताज़ जीता था।

(38) सन् 1996 के अटलांटा ओलंपिक में भारत के लिएंडर पेस ने पहला एकल कांस्य पदक जीता था।

(39) सन् 1997 में लेखक अरुंधती रॉय की किताब 'दि गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स' को बुकर पुरस्कार मिला।

(40) 11 मई 1998 को भारत ने राजस्थान की पोखरण फील्ड फायरिंग रेंज में 'ऑपरेशन शक्ति' के तहत दूसरा सफल परमाणु परीक्षण किया था। उसके बाद 13 मई को न्यूक्लियर टेस्ट किया गया था। इससे न्यूक्लियर हथियारों वाले देशों की लिस्ट में भारत का नाम शामिल हो गया।

(41) सन् 1998 में भारतीय अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने अर्थशास्त्र में नोबल पुरस्कार जीता था।

(42) सन् 1999 में न्यूयॉर्क के नास्डैक में लिस्ट होने वाली इंफोसिस पहली भारतीय कंपनी बनी।

(43) सन् 2000 में शंतरज के बादशाह विश्वनाथन आनंद फीडे विश्व शतरंज चैंपियनशिप जीतने वाले पहले भारतीय बने। वर्ष 2007 में विजय के बाद वे 2012 तक लगातार चार बार विश्व शतरंज चैंपियन रहे।

(44) सन् 2003 में सानिया मिर्ज़ा विंबलडन की डबल्स ट्रॉफी जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं।

(45) सन् 2005 में भारत ने सूचना का अधिकार (RTI) अधिनियम को पास किया, जिसके तहत नागरिक अनुरोध करके कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

(46) 1 जुलाई 2005 में स्पेन के सॉर्ट में अन्तरराष्ट्रीय ओपन में परिमार्जन नेगी ने अपना फाइनल इन्टरनेशल नार्म (IM) स्कोर करके 'विश्व का सबसे कम उम्र का इन्टरनेशनल मास्टर' की उपलब्धि हासिल की।

(47) 25 जुलाई, 2007 को श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति बनीं।

(48) 24 सितंबर, 2007 को पहली बार दक्षिण अफ्रीका में आईसीसी टी-20 विश्व कप खेला गया और महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में भारतीय क्रिकेट टीम ने फाइनल में पाकिस्तान को हराकर खिताब जीता।

(49) 11 अगस्त 2008 को बीजिंग ओलंपिक में भारतीय निशानेबाज अभिनव बिंद्रा ने पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल शूटिंग में भारत के लिए पहला व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीता।

(50) अक्टूबर 2008 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने चंद्रयान 1 नामक अपना पहला उपग्रह चंद्रमा पर भेजा और यह अगस्त 2009 तक संचालित रहा था।

(51) सन् 2009 में, भारत में प्रत्येक नागरिक को उनके बायोमेट्रिक और जनसांख्यिकीय डेटा के आधार पर एक अद्वितीय 12-अंकीय संख्या देने के लिए आधार कार्ड लॉन्च किया गया।

(52) सन् 2009 में शिक्षा का अधिकार अधिनियम को मंजूरी दी गई थी। जो 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को मुफ्त शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार देता है।

(53) 2 अप्रैल 2011 के दिन मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में कप्तान महेंद्र सिंह धोनी की अगुवाई में भारतीय क्रिकेट टीम ने इतिहास दोहराते हुए दूसरी बार वनडे विश्व कप अपने नाम किया था।

(54) तेजस लड़ाकू विमान के पहले प्रतिरूप ने अपनी पहली उड़ान 27 अप्रैल, 2012 को भरी थी। तेजस भारत द्वारा विकसित किया गया एक हल्का व कई तरह की भूमिकाओं वाला जेट लड़ाकू विमान है।

(55) लंदन ओलंपिक 2012 में भारत ने 6 पदक (2 रजत और 4

कांस्य) जीते थे। बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल ओर बॉक्सर मैरी कॉम ओलंपिक कांस्य पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं।

(56) 5 नवम्बर 2013 के दिन मंगलयान को मंगल ग्रह की परिक्रमा करने हेतु इसरो ने पीएसएलवी सी-25 के द्वारा सफलतापूर्वक छोड़ा। मंगलयान भारत एवं इसरो का प्रथम मंगल ग्रह अभियान था।

(57) सन् 2014 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत को पोलियो मुक्त घोषित किया।

(58) सन् 2014 में, मानवाधिकार कार्यकर्ता कैलाश सत्यार्थी ने बच्चों और युवाओं के उत्पीड़न के खिलाफ अपने संघर्ष के लिए शांति का नोबेल पुरस्कार जीता।

(59) सन् 2015 में सानिया मिर्ज़ा डब्ल्यूटीए रैंकिंग में महिला टेनिस युगल के नंबर 1 रैंकिंग पर और सायना नेहवाल व्यक्तिगत खेल बैडमिंटन में नंबर 1 रैंकिंग पर पहुंच गई।

(60) सन् 2015 में सालाना 25-40 मिलियन यात्री श्रेणी में एयरपोर्ट काउंसिल इंटरनेशनल ने दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय (आईजीआई) हवाईअड्डे को सर्वश्रेष्ठ हवाईअड्डा का खिताब दिया था।

(61) भारतीय सेना ने उरी हमले के जवाब में 29 सितंबर, 2016 को पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में नियंत्रण रेखा के पार आतंकवादी शिविरों के खिलाफ सबसे बड़ी सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया था।

(62) वर्ष 2016 में प्रज्ञानानंद रमेशबाबू 10 वर्ष और 10 माह की उम्र में शतंरज के इतिहास के ग्रैंड मास्टर बने। प्रज्ञानानंद ने वर्ल्ड यूथ चेस चैम्पियनशिप का अंडर-8 और अंडर-10 खिताब भी जीता था।

(63) 15 फरवरी, 2017 को इसरो ने पीएसएलवी-C37 में कार्टोसैट-2 उपग्रह के साथ 103 सह-यात्री उपग्रहों का एक साथ सफलतापूर्वक प्रमोचन किया। यह सफलता हासिल करने वाला भारत पहला देश बना।

(64) 3 अगस्त, 2017 को भारत ने जीएसटी को हरी झंडी दिखाई जिसे 25 साल का देश का सबसे बड़ा कर सुधार कार्यक्रम माना गया है।

(65) मिस वर्ल्ड कम्पटीशन 2017 में भारत की मानुषी छिल्लर ने मिस वर्ल्ड 2017 का खिताब जीता था।

(66) पंकज आडवाणी ने साल 2017 में वर्ल्ड चैंपियनशिप में बिलियडर्स और स्नूकर दोनों में गोल्ड मेडल जीता था। भारत के लिए सबसे ज्यादा 23 बार वर्ल्ड टाइटल जीतने वाले पंकज एकमात्र खिलाड़ी हैं।

(67) सन् 2018 में, सरदार वल्लभभाई पटेल की 182 मीटर ऊंची प्रतिमा, साधू बेट नामक स्थान पर, जो कि नर्मदा नदी पर एक टापू है, स्थापित की गई। यह दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है और इसे 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' का नाम दिया गया है।

(68) जुलाई 2019 में, तीन तलाक के खिलाफ विधेयक संसद द्वारा पारित किया और एक कानून बनाया गया। इस कानून के मुताबिक तीन बार तलाक बोलकर दिया जाने वाला तलाक अब अवैध और अमान्य है।

(69) 5 अगस्त 2019 को जम्मू-कश्मीर के लिए विशेष रूप से बनाई गई धारा 370 तथा अनुच्छेद 35-ए के प्रावधानों को निरस्त कर दिया गया। बाद में जम्मू-कश्मीर और लद्दाख को अलग केन्द्र शासित प्रदेश बनाया गया।

(70) 9 नवंबर 2019 को 134 साल पुराने अयोध्या राम मंदिर-मस्जिद विवाद पर सुप्रीम कोर्ट के तत्कालीन प्रधान जस्टिस रंजन गोगोई की अगुआई वाली पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने सर्वसम्मति से फैसला सुनाकर अयोध्या में 2.77 एकड़ की पूरी विवादित जमीन राम मंदिर निर्माण के लिए दे दी गए।

(71) 26 फरवरी 2019 को भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमानों ने बालाकोट में एयर स्ट्राइक से आतंकी शिविरों को ध्वस्त कर दिया साथ में आतंकियों को भी मार गिराया। यह हमला भारत ने जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में सीआरपीएफ के काफिले पर किए गए आत्मघाती हमले के मद्देनजर किया।

(72) सन् 2021 में नीरज चोपड़ा ने टोक्यो ओलंपिक में भारत के लिए भाला फेंक खेल में स्वर्ण पदक जीता। वह व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीतने वाले दूसरे भारतीय बन गए।

(73) सन् 2021 में भारत की हरनाज़ संधू ने इसराइल में हुई प्रतियोगिता में मिस यूनिवर्स का ताज जीता।

(74) 5 फरवरी, 2022 को भारत ने अंडर-19 क्रिकेट विश्व कप के फाइनल मुकाबले में इंग्लैंड को हराकर खिताब अपने नाम कर लिया। भारतीय क्रिकेट टीम ने पांचवीं बार टाइटल जीता है, जो एक रिकॉर्ड है।

(75) भारत ने विश्व के सबसे बड़े कोविड-19 वैक्सीन टीकाकरण अभियान में कीर्तिमान स्थापित करते हुए 200 करोड़ खुराक का ऐतिहासिक पड़ाव 17 जुलाई 2022 को पूरा कर लिया।

जयेश पटेल
वैज्ञा./अभि. एसडी

स्वतंत्रता के मतवाले गुमनाम नायक – मेरे दादाजी

स्वतंत्रता हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा था –'पराधीन सपनेहुँ सुख नाही', इस काव्य पंक्ति का गहन अर्थ है कि पराधीन व्यक्ति कभी भी सुख का अनुभव नहीं कर सकता है। पराधीनता वास्तव में अत्यंत कष्टदायक होती है। हमारे भारतवर्ष में स्वतंत्रता संग्राम का एक विशाल इतिहास है, जो स्वतंत्रता सेनानियों की गौरवमयी गाथाओं से ओतप्रोत है। पूर्व में मुगलों का शासन और फिर लगभग 200 वर्षों तक अंग्रेजों के अधीन रहने के बाद 14-15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को देश के इतिहास में एक सुनहरा पल आया जब हमारे देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। इसलिए 15 अगस्त के दिन को हम सभी देशवासी गर्व से, बड़ी ही धूम-धाम से हर्ष और उल्लास के साथ एक 'राष्ट्रीय पर्व' के रूप में मनाते हैं।

इस वर्ष स्वतंत्र भारत के गौरवमयी 75 वें स्वतंत्रता दिवस को हम सभी राष्ट्रवासियों ने बहुत आन-बान और शान से 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के रूप में मनाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 12 मार्च, 2021 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से 'आजादी का अमृत महोत्सव' की उद्घोषणा की। 75 सप्ताह तक इस महोत्सव को 15 अगस्त 2023 तक मनाने की प्रतिबद्धता का आशय है कि हम सभी देशवासी स्वतंत्रता सेनानियों की निस्वार्थ देशभक्ति को याद करें, उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करें तथा दृढ़संकल्प होकर अपने देश को विश्वपटल पर प्रत्येक क्षेत्र में सर्वाच्च स्थान में स्थापित करें। 'आजादी का अमृत महोत्सव' यानी 'नए विचारों का अमृत,' 'नए संकल्पों का अमृत' और 'आत्मनिर्भरता का अमृत' है। यह पर्व किसी धर्म, संप्रदाय या जाति का नहीं वरन् प्रत्येक भारतवासी का है। 'आजादी का अमृत महोत्सव' प्रगतिशील भारत की आजादी के 75 साल और इसके लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को मनाने के लिए भारत सरकार की एक पहल है जिसे हम सभी ने मिलकर आत्मसात किया है और गौरवान्वित महसूस करते हैं।

व्यक्तिगत रूप से 'आजादी का अमृत महोत्सव' मुझे एक विशेष अवसर भी प्रदान कर रहा है, जब मैं अपने बचपन में अपने दादा जी के साथ बिताए स्वर्णिम पलों को याद करती हूँ। देश के स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों के आहुति देने वाले अनेक चर्चित वीरों को तो हम सभी जानते हैं, परन्तु स्वतंत्रता के महायज्ञ में अपना योगदान, बलिदान देने वाले अनेक मतवाले गुमनाम नायक भी थे। मुझे बहुत गर्व है कि मेरे दादा जी 'स्वर्गीय श्री महेंद्र प्रताप शास्त्री जी' स्वतंत्रता सेनानी थे। अपने बचपन में मुझे और मेरे बड़े भाई आदर्श जी को उनसे स्वतंत्रता संग्राम के संघर्षों एवं बलिदानों के बारे में जानने, समझने और महसूस करने के अनेक अवसर प्राप्त हुए।उन्होंने वर्ष 1939 में महान क्रन्तिकारी एवं युगदृष्टा ऋषि दयानंद जी के विचारों से प्रेरित होकर आर्यसमाज के संगठन की ओर से हैदराबाद में स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।इस आन्दोलन के चलते उनकी गिरफ़्तारी भी हुई एवं उनको कठिन शारीरिक परिश्रम के साथ लम्बे समय तक जेल में घोर यातनाएं सहनी पड़ीं। महात्मा गाँधी एवं आचार्य विनोबा भावे के अनुयायी मेरे दादा जी ने पूरी जिंदगी सत्य और अहिंसा की लड़ाई लड़ी और देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में अपना योगदान दिया। अपने पिता जी और माता जी से भी पूज्य दादाजी के जीवन संघर्षों के बारे में जानने का अवसर प्राप्त हुआ। मुझे उनकी मधुर स्मृतियों में बचपन के वे किस्से याद आते हैं, जब दादाजी जेल में व्यतीत हुए उनके समय के बारे में बताते थे, जब बहुत श्रम करने के पश्चात् कंकड़-पत्थर वाले आटे की सूखी रोटी फेंककर दी जाती थी और विरोध करने पर दंड मिलता था। स्वतंत्रता संग्राम का जोश आज़ादी के इन मतवालों को सभी प्रकार के शारीरिक और मानसिक कष्टों से जूझने की प्रेरणा देता रहा। वर्ष 1972 में भारत सरकार ने आदरणीय दादा जी को स्वतंत्र संग्राम सेनानी के रूप में सम्मान पत्र एवं आजीवन पेंशन देकर सम्मानित किया। कुछ वर्षों के पश्चात् मध्य प्रदेश सरकार ने भी उनको सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया तथा उनको पेंशन भी प्राप्त हुई जो उनको मृत्युपर्यंत प्राप्त होती रही। युवावस्था

में जेल में कष्ट सहने के कारण उन्हें अनेक स्वास्थ्य सम्बन्धी तकलीफों का सामना भी करना पड़ा। वर्ष 1947 में देश के विभाजन के दर्दनाक हादसे में भी उनक सर्वस्व निछावर हो गया और जीवन में अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा। तिनका-तिनका जोड़ कर अपने परिवार का लालन-पोषण किया तथा जीवन में शिक्षा को सर्वोपरि स्थान दिया। वे हमें हमेशा देशभक्ति, कर्त्तव्य परायणता एवं उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रेरित करते रहे। वर्ष 1998 में जब देश के गौरवमयी संस्थान इसरो के अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में कार्य करने हेतु मेरा चयन हुआ तो मेरे दादा जी अपने जीवन के अंतिम पलों में यह समाचार सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और आशीर्वाद देकर गए कि देश की उन्नति के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देना।

यह मेरा सौभाग्य है कि मेरा जन्म स्वतंत्र भारत में हुआ। 'आजादी के अमृत महोत्सव' की पावन बेला में 75 वें स्वतंत्रता दिवस के स्वर्णिम अवसर पर मैं अपने दादा जी तथा स्वतंत्रता संग्राम के समस्त वीर नायकों के स्मृति चरणों में सादर नमन करते हुए स्वरचित कुछ पंक्तियों से अपने राष्ट्र के प्रति आदर और सम्मान व्यक्त करती हूँ।

अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का परचम लहराएंगे,
भारत को 'विश्वगुरु' की पहचान दिलाएंगे,
स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों को स्मरण कर
'आज़ादी का अमृत महोत्सव', सब मिल कर मनाएंगे।|

पूज्य दादा जी एवं बड़े भाई के सानिध्य में
बचपन में संध्या वंदन समय की मधुर स्मृतियाँ

डॉ. आभा छाबरा
वैज्ञा./अभि. एसएफ

मेरा भारत: परतंत्र से स्वतंत्र

हम भारत की संतान हैं
हमारी संस्कृति महान है।
प्रेम और सौहार्द हमारी पहचान है
हमारे वीर सपूतों पर हमें अभिमान है।।

सिंधु घाटी की सभ्यता से उपजा मेरा देश
सोने की चिड़िया बना समृद्ध इसका वेश।
मौर्य, गुप्त, मुग़ल आदि वंशों का था समावेश
अचानक हो गया छल से अंग्रेजों का प्रवेश।।

राज किया भारत पर, रो उठा हर इंसान
दासता की जंजीरों में जकड़ा, रोशनी का था न कोई निशान।
विद्रोह हुए, आंदोलन हुए, लगा दी जान की बाजी
क्या भगत सिंह, क्या चंद्रशेखर, पीछे न थी झाँसी की रानी।।

शांति और अहिंसा का, पैगाम लेकर आये गाँधी
चल पड़ी जन लहर, रोके न रुकी यह आँधी।
उखड़ गए पैर अंग्रेजों के, किया कूच निज वतन,
आज़ादी मिली भारत को, फिर हुआ चैन–अमन।।

मुश्किलों और बलिदानों से हम हुए स्वतंत्र
ताक लगाकर बैठे आज भी कई घाती करने परतंत्र।
आंतरिक राष्ट्र शांति न हो कभी भी भंग
आजादी का अमृत महोत्सव हम सब मनाएँ हर पल।।

अमित शुक्ला
वैज्ञा./अभि. एसएफ

जंगल के दावेदार भगवान बिरसा मुण्डा

बिरसा मुण्डा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को रांची में एक छोटे गरीब किसान के परिवार में हुआ था। मुण्डा एक जनजातीय समूह था जो छोटा नागपुर पठार (झारखण्ड) निवासी थे। बिरसा का जन्म बृहस्पतिवार को हुआ था, इसलिए इनका नाम बिरसा रखा गया। उनके पिताजी का नाम करमी हाटू तथा माताजी का नाम सुगाना मुण्डा था। वह परिवार के चार बच्चों में से एक थे। कहा जाता है कि जिंदगी बड़ी नहीं महत्वपूर्ण होनी चाहिए, ऐसे ही बिरसा की कहानी है।

बिरसा केवल 25 साल की अल्पायु में स्वर्ग सिधार गए किंतु आदिवासियों के मन में भगवान का स्थान पाकर गए। बिरसा मुण्डा एक ऐसे जननायक थे जिन्होंने झारखण्ड में अपने क्रांतिकारी चिंतन से आदिवासी समाज की दशा और दिशा बदलकर नवीन सामाजिक युग का सूत्रपात किया। आजादी की जंग के महानायक भगवान बिरसा मुण्डा की पुण्य तिथि 1 जून को मनाई जाती है।

माँ भारती की स्वतंत्रता और जल, जंगल, जमीन एवं जनजातीय संस्कृति तथा परंपराओं की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले भगवान बिरसा मुण्डा तीर-कमान के दम पर अंग्रेजों से लड़े और उन्हें हराया। उन्होंने अपने समाज को जागृत करने के लिए कहा- "उठो, प्रकृति ने तुम्हें जीने के लिए सभी हथियार दिए हैं", "यह धरती हमारी है, हम इसके रक्षक हैं", "हर अन्याय के खिलाफ उलगुलान यानी एक हो जाओ और आक्रमण करो, यही पुरखों का रास्ता है", "अप्राकृतिक ताकतों के खिलाफ एकजुट हो जाओ"। बिरसा मुण्डा एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और एक आदिवासी नेता थे, जिन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह किया था। वे बहुत दूरदर्शी थे जिन्होंने अपने समुदाय आदिवासी लोगों की मुक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो ब्रिटिश शोषणकारी नीतियों और अत्याचारों से लगातार पीड़ित थे।

युवावस्था में जब बिरसा काम की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा कर रहे थे तब उन्होंने अनुभव किया कि उनका समुदाय ब्रिटिश उत्पीड़न से पीड़ित था। इससे उन्हें विभिन्न मामलों की समझ प्राप्त हुई। उन्होंने महसूस किया कि ब्रिटिश कंपनी भारत में लोगों पर अत्याचार करने और धन को विदेश ले जाने के लिए आई हुई है। बिरसा एक ऐसे आदिवासी नेता हैं जिनकी फोटो संसद भवन में भी लगी है। बिरसा 'धरती-बाबा' से भी जाने जाते हैं।

बिरसा मुण्डा ने ब्रिटिशों के एजेंडे को उजागर करने के लिए जागरूकता फैलाना शुरू किया और अपनी आदिवासियों की सेना को इकट्ठा किया। आदिवासी सेना ने ब्रिटिश राज के अन्याय और विश्वासघात के खिलाफ आन्दोलन किया। वे विद्रोह में एक सक्रिय भागीदार थे और उन्हें एक वीर सेनानी के रूप में याद किया जाता है जिसने अंग्रेजों से लड़ने का साहस किया। इनको 'यंग मैन ऑफ मुण्डा' भी कहते थे। उन्होंने जंगल का नियंत्रण हासिल करने के लिए ब्रिटिश कंपनी की योजनाओं के बारे में आम लोगों में जागरूकता फैलाना शुरू किया, अंग्रेजों के खिलाफ कई विरोध प्रदर्शन किए और अपने आन्दोलन से दिखाया कि आदिवासी समाज के असली मालिक हैं। उन्होंने बिचौलियों और अंग्रेजों को खदेड़ने की भी मांग की।

03 मार्च 1900 को बिरसा आदिवासी छापामार सेना के साथ मकोपाई वन (चक्रधर) में ब्रिटिश सैनिकों द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। रांची की जेल में उन्हें रखा गया था जहां 25 वर्ष की उम्र में उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया। ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की उनकी मृत्यु हैजा से हुई है। हालांकि सरकार ने बीमारी के कोई लक्षण नहीं बताए। बाद में पता चला कि शायद उन्हें जहर दिया गया था।

गायत्री भनारकर
वरि. परियोजना सहायक

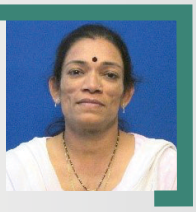

ध्यानि आर. पटेल
पुत्री- भाविका आर. पटेल (वैज्ञा./अभि. एसडी)

अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद उद्यान : रोमाँचक और प्रेरणादाई

प्रिय पाठकों! यह बात पिछले वर्ष अक्टूबर की है जब मैं सपरिवार बनारस में काशी विश्वनाथ जी के दर्शन करके रीवा के लिए लौट रही थी। रास्ते में इलाहाबाद जिसका वर्तमान में नाम प्रयागराज है, वहाँ हम सब अपने रिश्तेदार के घर पर रुक गए।

दूसरे दिन सुबह हम लोग प्रयागराज शहर के प्रमुख स्थानों पर घूमने गए। जिस जगह ने मुझे बहुत प्रभावित किया, उसका नाम 'अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद पार्क' है। इस उद्यान का निर्माण 1870 में अंग्रेजी राजकुमार अल्फ्रेड के स्वागत के लिए किया गया था। इसलिए इसका नाम 'अल्फ्रेड पार्क' रखा गया था। वहाँ जाकर मुझे ऐसा लगा जैसे कि आज जो मैं स्वतंत्र हूँ वह उस दौर (आज़ादी के पहले) के बहुत प्रयासों का फल है। लोगों के अंदर अपने देश को आज़ाद करने का जो जुनून था उसका जीता-जागता उदाहरण यह उद्यान देता है। इस लेख के माध्यम से मैं पाठकों को श्री चंद्र शेखर आज़ाद जी के विषय में और इस उद्यान के बारे में और अधिक जानकारी देना चाहूँगी।

यह उद्यान प्रयागराज शहर का सबसे बड़ा उद्यान है। इसमें एक संग्रहालय तथा ग्रंथालय है। वहाँ पर मौजूद कई वस्तुओं और शिलालेखों से आज़ादी का संघर्ष और चंद्रशेखर आज़ाद जी के बारे में

मुझे बहुत सारी जानकारियां प्राप्त हुईं चंद्रशेखर जी की जीवनी से हमें शिक्षा लेनी चाहिए इसलिए मैं संक्षेप में उनके प्रेरणादायी जीवनी के बारे में यहां पर वर्णन करूंगी और मेरे जो अनुभव इस उद्यान में आकर हुए उन्हें सभी लोगों के साथ साझा करना चाहूंगी।

चंद्रशेखर जी का जन्म 23 जुलाई 1906 को अलीराजपुर रियासत के भावरा गाँव में हुआ था। उनका पूरा नाम चंद्रशेखर तिवारी था, उनके पिता सीताराम तिवारी एवं माता जगरानी देवी थीं। बचपन से ही वे बहुत बहादुर थे तथा उन्हें तीर-कमान, भाला चलाना, कुश्ती और तैराकी में महारत हासिल थी। स्वभाव से वे बहुत साहसी, ईमानदार, सत्यनिष्ठ और न्यायप्रिय थे। प्रारंभिक शिक्षा अलीराजपुर में होने के पश्चात् वे काशी विद्यापीठ में संस्कृत पढ़ने के लिए गए। वहाँ पर उनका कई राष्ट्रवादी विचारधारा वाले युवकों के साथ संपर्क हुआ। उस समय भारतीयों के साथ अंग्रेजों का व्यवहार अत्यंत क्रूर होता था। 1919 के जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद राष्ट्रीय विद्रोह हुए, उन आंदोलनों में चंद्रशेखर जी एक युवा कार्यकर्ता थे।

गांधी जी द्वारा शुरू किए गए 1920 के असहयोग आंदोलन में उन्होंने भाग लिया तथा विरोध प्रदर्शन किए। 15 वर्ष की अल्प आयु में वे गिरफ्तार किए गए और सजा काटी। अधिकारियों ने जब उनका नाम पूछा तो उन्होंने निर्भीकता से कहा कि उनका नाम 'आज़ाद' है। असहयोग आंदोलन को 1921 में वापस लेने से वे काफी क्रोधित हुए और फिर अंग्रेजों को बाहर भगाने के लिए क्रांतिकारी गतिविधियों में लग गए। राम प्रसाद बिस्मिल द्वारा स्थापित हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य बनकर उन्होंने काकोरी कांड, लाला लाजपत राय जी की लाहौर में की गई हत्या का बदला, केंद्रीय विधानसभा में प्रदर्शन जैसी कई योजनाओं को क्रियान्वित किया। इन विद्रोहों में उनका साथ भगत सिंह, राजगुरु, सचिंद्र नाथ सान्याल, अशफाक उल्ला खान इत्यादि महान क्रांतिकारियों ने दिया था। उनके अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध विद्रोह के कारण अंग्रेजों ने उनका नाम क्रांतिकारियों की सूची में रखा और उन्हें जिंदा या मुर्दा पकड़ने पर इनाम घोषित किया। चंद्रशेखर आज़ाद ने काफी कुशलता के साथ अंग्रेजों को धूल चटाई और अपनी गतिविधियों को अंजाम देते रहे।

चित्र में मैं जहां खड़ी हूं , वहाँ पर 27 फरवरी 1931 में इतिहास रचा गया। चंद्रशेखर आज़ाद अपने साथियों के साथ इसी पार्क में योजनाएं बना रहे थे। पुलिसकर्मी वेवर की सूचना पर अंग्रेजी सेना ने पार्क को घेर लिया। दोनों पक्षों के बीच गोलीबारी हुई, चंद्रशेखर आज़ाद ने कई पुलिसकर्मियों को मार डाला और अपने साथियों को कुशलता से वहाँ से निकालने में कामयाब रहे।

वे चारों ओर से हमलावरों से घिर गए। अपनी प्रतिज्ञा (हमेशा आज़ाद रहने की) के अनुसार, जब बंदूक में अंतिम गोली बची तो वह उन्होंने

स्वयं को मार ली और मातृभूमि पर प्राण न्योछावर कर दिए। उसी जगह पर इस उद्यान में चंद्रशेखर शहीद स्मारक बना हुआ है। 25 वर्ष की आयु में वे शहीद हो गए। उनके द्वारा दिया गया प्रमुख नारा था, 'आज़ाद ही रहे हैं और आज़ाद ही रहेंगे'। यह नारा वास्तव में उनके जीवन का सार बना। इस घटना ने सभी देशवासियों के हृदय में अशांति की भावना पैदा की और आजादी की इच्छा प्रबल हो उठी। हम-आप जो इस मुक्त धरा पर जल और हवा का उपयोग कर पा रहे हैं, वह ऐसे वीर सपूतों के बलिदानों के कारण ही संभव हो सका।

यहां पर आकर ऐसा लगता है, जैसे मैं किसी मंदिर आई हूं और इस स्मारक को मैं शत-शत नमन करती हूं। आंखें बंद करके यहां पर हुए उस समय के संघर्ष को महसूस करती हूँ। मेरी आप सभी से अनुरोध है यदि आप कभी प्रयागराज में कुंभ के मेले या गंगा स्नान के लिए जाएं तो इस पार्क में स्थित स्मारक को नमन अवश्य करें और चंद्रशेखर आज़ाद जी की बहादुरी पर गर्व करें।

अव्या शुक्ला
पुत्री- अमित शुक्ला (वैज्ञा./अभि. एसएफ)

अमृत महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव, भारत देश मना रहा है।
यह महोत्सव है देश के त्याग और बलिदान का।
यह महोत्सव है मातृभूमि के गौरव और स्वाभिमान का।
जन-जन की भागीदारी से आत्मनिर्भर भारत बनाना है।
सबका साथ, सबका विकास, इसको अपनाकर चलना है।
याद करें उन वीरों को, जो अपनी जान पर खेल गए।
तन-मन को न्यौछावर करके, काले पानी की जेल गए।
बहुत कुछ पाया, बहुत कुछ खोया, फिर भी दिया शांति का सन्देश।
नाम बड़ा संविधान बड़ा, बडी पवित्र है वसुंधरा।
कई भाषाओं, कई मान्यताओं और बड़ी नदियों का देश।
आओ हम सब मिलकर, आजादी का अमृत महोत्सव मनाएं।
नए भारत का निर्माण कर, विश्व जगत में नाम कमाएं।
।। जय हिन्द ।।

मृदुला डी शाह
सेवानिवृत्त कर्मचारी

क्रांतिकारियों के करीबी साथी रामचंद्र कर्नावट

भारत की स्वतंत्रता के लिए न जाने कितने नर-नारियों ने अपना जीवन होम किया। उनका बस एक ही लक्ष्य था- अंग्रेजों की गुलामी से छुटकारा। वे जानते थे कि जिस रास्ते पर वे चल रहे हैं, वह सर्वस्व बलिदान माँगता है। उस रास्ते से धन मिलना तो दूर, नाम भी नहीं मिल सकता था, क्योंकि क्रांतिकारियों को तो अपना नाम भी छुपाकर रखना पड़ता था। जो पुलिस की पकड़ में आए या पुलिस का सामना करते हुए शहीद हो गए या सरकारी गवाह बन गए, उनके ही नाम सामने आ सके। शेष अनगिनत लोगों ने या तो स्वयं को जानबूझकर गुमनामी की दुनिया में ढकेल दिया या फिर अलग रास्ते से देश-सेवा में जुट गए। ऐसे ही एक क्रांतिकारी थे श्री रामचंद्र कर्नावट।

उनका जन्म पुणे (महाराष्ट्र) के पास एक छोटे-से गाँव में हुआ था। शैशवावस्था में ही माता-पिता दोनों का निधन हो जाने से उनके मामा ने उनका पालन-पोषण किया। वे पुणे में रहते थे और निस्संतान थे, इसलिए उन्होंने उन्हें अपने पुत्र की भाँति पालने का विचार किया। पुणे बाल गंगाधर तिलक का नगर होने से राजनैतिक दृष्टि से बहुत जागरूक था। उन दिनों देश अपने प्रमुख नेताओं को लाल-बाल-पाल के नाम से जानता था। लाल यानी लाला लाजपतराय (उत्तर भारत), बाल यानी बाल गंगाधर तिलक (पश्चिमी भारत) और पाल यानी बिपिनचंद्र पाल (पूर्वी भारत)।

लोकमान्य तिलक अपने समाचार पत्रों (केसरी और मराठा) में सरकार के हर अन्यायपूर्ण कार्य के विरुद्ध अग्रलेख (संपादकीय) लिखा करते थे, जिसके लिए उन्हें कई बार सजा हुई, किंतु शहीद खुदीराम बोस के समर्थन में संपादकीय लिखने पर राजद्रोह का जो मुकदमा चला, उसमें उन्हें सजा सुनाकर मांडले की जेल में भेज दिया गया। कहा जाता है कि वहाँ उन्हें स्लो पॉइजन दे दिया गया था, जिसके कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ता गया। किसी भी बदनामी से बचने के लिए अंग्रेज सरकार ने उन्हें सजा पूरी होने से पहले ही छोड़ दिया, किंतु उनके स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ। उन्हें समझ में आ गया कि वे मृत्यु की ओर बढ़ रहे हैं। ऐसे में उन्होंने तय किया कि वे विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का कार्य करेंगे। इसी योजना के अनुरूप विद्यार्थियों के बीच उनकी कई सभाएँ हुईं और सैकड़ों विद्यार्थी सबकुछ छोड़कर देश-सेवा के लिए तत्पर हो गए। उनमें से एक श्री रामचंद्र कर्नावट भी थे। उन्होंने स्वयं का जीवन देश को स्वतंत्र कराने के लिए न्योछावर कर देने का पूरा मन बना लिया।

स्वाभाविक था कि उनके पालक उनके इस कदम से असहमत थे। परिणामस्वरूप उन्होंने घर ही छोड़ दिया और अपने कुछ साथियों के साथ आगरा चले आए। यहाँ पढ़ाई करते हुए क्रांतिकारियों से संपर्क स्थापित हो गया। क्रांतिकारियों के कार्य करने का तरीका बिलकुल अलग हुआ करता था। एक समूह में होते हुए भी एक-दूसरे के बारे में व्यक्तिगत जानकारी न के बराबर होती थी। यहाँ तक कि असली नाम भी मालूम नहीं होते थे। उदाहरण के लिए राजगुरु, जिनका वास्तविक नाम शिवराम हरी राजगुरु था, क्रांतिकारी दल में रघुनाथ नाम से पहचाने जाते थे। कर्नावट को बहुत छोटा-सा नाम मिला था 'बेरा'। यह नाम दिए जाने का कारण कोई भी नहीं जानता था। क्रांतिकारी कोई डायरी भी नहीं लिख सकते थे।

बहुत-से छोटे-मोटे कार्यों के बाद दल ने जो बड़ी जिम्मेदारी ली, वह थी लॉर्ड इरविन की ट्रेन को बम से उड़ाना। बम रखने का कार्य तो एक ही व्यक्ति (श्री यशपाल) ने किया, किंतु क्रांतिकारियों का बहुत बड़ा दल इसमें लगा हुआ था, जिसके एक सदस्य श्री रामचंद्र कर्नावट भी थे। बम वॉइसराय के कोच में ही फूटा, किंतु लॉर्ड इरविन के किसी काम से अपने डिब्बे से आगे के डिब्बे में चले जाने से उसकी जान बच गई। लॉर्ड की ट्रेन के रक्षकों ने रात के अंधेरे में अंधाधुंध गोलियाँ चलाईं। अनेक क्रांतिकारी शहीद हो गए। रामचंद्र कर्नावट भी कुछ गोलियाँ खाकर भी किसी तरह निकल भागने में सफल रहे। कई गोलियाँ उनके शरीर को छूती हुई निकली थीं। एक बिलकुल कपाल को छूती हुई तो दूसरी बायें कंधे को। दोनों अपने निशान छोड़ती गई थीं, जो अंतिम समय तक उनके शरीर पर बने रहे थे। एक गोली घुटने में अंदर चली गई थी। फिर भी जैसे-

तैसे वे पंधाना के जंगलों में पहुँचने में सफल रहे, जहाँ आदिवासियों ने किसी तरह उस गोली को निकाला और जंगली जड़ी-बूटियों के सहारे ही घाव को ठीक किया। यह निशान भी अंत तक उनके शरीर पर बना रहा।

यह बहुत बड़ा कांड था, अतः पुलिस गहन जाँच में लग गई और यह जानने में सफल रही कि इस घटना में वे भी शामिल थे। आगरा में उनके छात्रावास के मेनेजर को तलब किया गया। वहाँ इनका नाम रायचंद के रूप में दर्ज था। मेनेजर ने बड़ी चतुराई से रजिस्टर में रायचंद को रामचंद्र कर दिया। इससे तात्कालिक संकट टल गया। किंतु इन्हें छात्रावास से निकाल दिया गया कि आगे कहीं और कोई आफत न आ जाए।

तब वे मध्यप्रदेश में उज्जैन के पास महिदपुर नामक कस्बे में आ गए। इस कस्बे की विशेषता यह थी कि यह मुख्य सड़क से काफी अंदर था और मुख्य सड़क से एक ही ओर से जुड़ा हुआ था। यहाँ छिपकर रहने में ज्यादा आसानी थी। यहाँ अपने नए नाम रामचंद्र का उपयोग करते हुए उन्होंने अनेक सामाजिक कार्य किए, जिनमें मुख्य रूप से विद्यार्थियों को शिक्षित करना था। इससे यह नगर आपका प्रशंसक बन गया। न सिर्फ नागरिक बल्कि सरकारी अधिकारी-कर्मचारी भी आपको सम्मान की दृष्टि से देखने लगे।

इधर पुलिस अपनी कार्यवाही में लगी हुई थी। नाम बदलने और महिदपुर में उनके होने की खबर पुलिस को मिल गई। वारंट तामील किए जाने के लिए महिदपुर पुलिस स्टेशन भेजा गया। थानेदार उनके नाम का वारंट देखते ही हतप्रभ हो गया, क्योंकि वह भी उनका बहुत बड़ा प्रशंसक था। और मन से देशभक्त तो था ही। वह गुप्त रूप से उनके पास पहुँचा और इन्हें तत्काल गाँव छोड़ देने को कहा, वह भी मुख्य सड़क से नहीं बल्कि जंगल के रास्ते।

उसी ने यह भी बता दिया कि प्रचलित व्यवस्था के अनुसार वारंट एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में करीब तीन दिन लग जाते हैं। इसलिए अब इन्हें कहीं भी तीन दिन से ज्यादा नहीं रहना चाहिए। अब वे बड़ी उलझन में थे कि क्या करें और कहाँ जाएँ। इस स्थिति का सामना करने के लिए उन्होंने एक अनोखा उपाय निकाला। एक साइकिल ली और आगरा से प्रकाशित एक आवधिक पत्र "जैन-पथ-प्रदर्शक" के प्रचारक के रूप में भारत भ्रमण शुरू कर दिया। ऐसा करते हुए वे कहीं भी दो रात से अधिक समय तक नहीं रुकते थे। इस तरह तीन वर्ष का समय निकाला।

इस अवधि के पूरे होने तक क्रांतिकारी दल का विघटन हो गया था, क्योंकि दल के कुछ सदस्यों को फाँसी हो गई थी, कुछ शहीद हो गए थे और कुछ सरकारी गवाह बन गए थे। लिहाजा, श्री रामचंद्र कर्नावट को भी क्रांति का मार्ग छोड़ना पड़ा, किंतु देश के प्रति कुछ कर गुजरने की ललक चैन से बैठने नहीं दे रही थी, इसलिए वे कांग्रेस के सत्याग्रहों से जुड़ गए। जंगल सत्याग्रह में उन्हें जेल की सजा हुई। इसके बाद प्रजा मंडल के कार्यों में अपना योगदान दिया। उसमें फिर जेल की सजा हुई। उस समय राजनैतिक बंदियों के साथ भी अपराधियों जैसा ही व्यवहार किया जाता था। सजा सश्रम होती थी, यानी कई तरह के हाड़तोड़ मेहनत के कार्य कराए जाते थे। जितना कार्य दिया हो उतना पूरा न करने पर बेंत से पिटाई की जाती थी या चाबुक फटकारे जाते थे। ऐसे न जाने कितने कष्ट हमारे क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों ने सहे। तब ही हम स्वतंत्र वातावरण में साँस ले पा रहे हैं।

स्वतंत्रता मिलने पर अधिकांश लोग इन स्वतंत्रता सेनानियों को भूल गए। केवल कुछ जागरूक नागरिकों ने इन्हें याद रखा और इनके प्रति यत्किंचित् आभार व्यक्त किया। इसी क्रम में स्वतंत्रता के तत्काल बाद मध्य भारत सरकार ने ताम्रपत्र देकर और वर्ष 1972 में भारत सरकार ने ताम्रपत्र देकर सम्मानित किया। मध्यप्रदेश सरकार ने भी मानपत्र दिया। अन्य सामाजिक संस्थाओं ने भी इन्हें सम्मानित किया। उज्जैन के प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर मंदिर के पास स्थापित स्वतंत्रता-सेनानियों के नाम की शिला पर पहला नाम श्री रामचंद्र कर्नावट का ही है।

पिछली सदी के आरंभ में (संभवतः 1905 में) जन्मे श्री रामचंद्र कर्नावट ने वर्ष 1993 में उज्जैन में अंतिम साँस ली।

हीरालाल करनावट
पिताजी-सोमा करनावट (कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी)

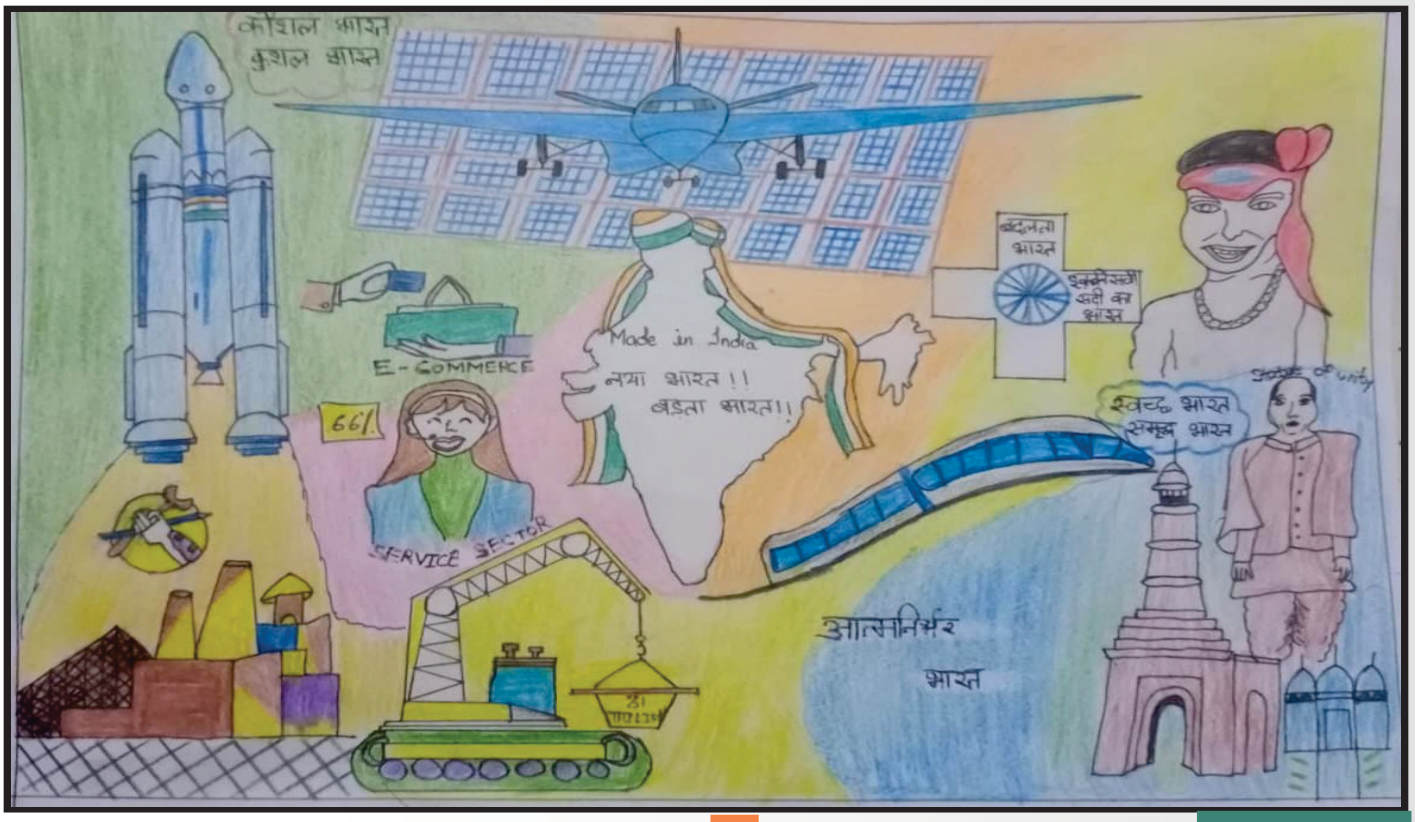

अक्षित भल्ला
पुत्र- रोहिल भल्ला (कुक)

अंशिका भल्ला
पुत्री- रोहिल भल्ला (कुक)

तेजस्विनी जैसवाल

पुत्री- विजय जैसवाल (वरि. तकनीशियन ए)

नज़रिया

जश्न तो हमने अनेक मनाए,
आओ मिलकर एक उत्सव मनाएं,
आजादी का अमृत महोत्सव मनाएं।

शहीदों के बलिदान को नमन हम करते हैं,
श्रद्धांजलि में उनके सपनों को पूरा करने की शपथ हम लेते हैं,
सैनिक देश के लिए अपना लहू बहाते हैं,
हाँ, हम भारतीयों की उपलब्धियों पर गौरवान्वित हो जाते हैं।

जन्मे हम आजाद भारत में,
आपको आजाद भारत की छवि दर्शाते हैं,
एक महिला जिस देश का नेतृत्व करे,
हाँ हम भारतीयों की उपलब्धियों पर गौरवान्वित हो जाते हैं।

जहाँ क्रान्तिकारी वीरों की क्रांति ही नहीं,
घर-घर में बिजली, पानी और गैस की क्रांति आई है,
हाँ, हम भारतीयों की उपलब्धियों पर गौरवान्वित हो जाते हैं।

देश ने मल्टी नेशनल कम्पनियों के सीईओ से लेकर किसान पैदा किए हैं,
मेहनत से जिनकी आज हम दाल उत्पादन में सबसे आगे हैं,
हाँ, हम भारतीयों की उपलब्धियों पर गौरवान्वित हो जाते हैं।

जब देखती हूँ मैं गर्व से आसमान की तरफ,
तिरंगा लहराता है चांद और मंगल पर हर तरफ,
हाँ, हम भारतीयों की उपलब्धियों पर गौरवान्वित हो जाते हैं।

खिलाड़ियों ने पदकों की लड़ी से देश की गरिमा बढ़ाई है,
देश के रत्नों ने हमें 1जी से 4जी तक की दूरी तय कराई है,
हाँ, हम भारतीयों की उपलब्धियों पर गौरवान्वित हो जाते हैं।

विद्यालय की आहार योजना ऐसा तोड़ लाई है,
बच्चों में विद्यालय जाने की लहर सी आई है,
हाँ, हम भारतीयों की उपलब्धियों पर गौरवान्वित हो जाते हैं।

शिक्षा के स्तर ने नए आयामों को छुआ है,
परमाणु से ऊर्जा का उत्पादन किया है,
हाँ, हम भारतीयों की उपलब्धियों पर गौरवान्वित हो जाते हैं।

आजाद भारत का एक सपना है,
आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करना है,
हमें लक्ष्य की ओर बढ़ते चलना है,
भारत की प्रगति को नये आयामों तक पहुंचाना है।

निधि जैन
वैज्ञा./अभि. एसएफ

रुद्रनील मिश्रा
पुत्र- इंद्रनील मिश्रा (वैज्ञा./अभि. एसएफ)

कृतज्ञ नागरिक

फिर कृतज्ञ हो आज मैंने,
तिरंगे के आगे शीश झुकाया है,
अरे उस देश को क्या अर्पण कर दूं,
जिस देश से इतना पाया है।

विविध भाषाओं का हार मिला,
गंगा गोदावरी का उपहार मिला,
हिमालय सा प्रहरी और
हिंद महासागर का विस्तार मिला।

प्रकृति की छटा निराली,
सुंदर ऋतुओं का यौवन है,
कहीं कच्छ की रेत सुनहली,
कहीं पंचवटी सा उपवन है।

मंदिर की आरती, मस्जिद की अजान है,
चौपाई गाते तुलसी, दोहे सुनाते रसखान है।

शिक्षा है संस्कारों की,
अदब ओ तहजीब का ज्ञान है,
यहां योग से कदम मिलाता,
गणित और विज्ञान है।

राग मल्हार के अलाप निराले,
कत्थक सा नृत्य सिखाया है,
कर्म योग का ज्ञान सुनाता,
वंशीधर इसी धरती से आया हैं।

मदर टेरेसा से प्रेम,
बापू से सौहार्द मिला,
भगत सिंह से स्वाभिमान,
और वीरता का वरदान मिला।

कैसे और बतलाऊं,
कि क्या क्या मैंने पाया है,
धन्य हुआ ये मेरा जीवन,
मैंने जन्म भारतवर्ष में पाया है।

अधिकारों की बात बहुत हुई,
दायित्वों का प्रश्न अब आया है,
एक अच्छा नागरिक बन पाऊं मैं,
जीवन भर बस ये कर्तव्य निभाया है।।

वंदे मातरम, जय हिंद

सुगंध मिश्रा
वैज्ञा./अभि. एसएफ

लखनऊ रेजीडेंसी : 1857 की क्रांति की गवाही देती एक इमारत

1857 का भारतीय विद्रोह, जिसे प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, सिपाही विद्रोह और भारतीय विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है, ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक सशस्त्र विद्रोह था। दो वर्षों तक चले इस विद्रोह में भारत के कई शहरों की अहम् भूमिका रही। उसी में से एक शहर उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ रहा, जहां की इमारतों में आज भी क्रांति की गूंज को महसूस किया जा सकता है। लखनऊ शहर उत्तर-प्रदेश की राजधानी होने के साथ-साथ ऐतिहासिक दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण है। ब्रिटिश राज में अवध की राजधानी होने के कारण इस शहर में आज भी कई ऐतिहासिक धरोहरें विराजमान हैं, जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं। इसी क्रम में एक महत्वपूर्ण इमारत अंग्रेजों की कॉलोनी ब्रिटिश रेजीडेंसी है, जहाँ की एक-एक दीवार अपना दर्द बयां करती है। चूंकि मेरी जन्मस्थली लखनऊ है तथा मैंने अपनी स्नातक तक की शिक्षा इसी शहर में रहकर प्राप्त की है, इसलिए विविध अवसरों पर इस रेजीडेंसी को देखने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। विद्यालय द्वारा भी शैक्षणिक प्रवास के लिए कई बार इस ऐतिहासिक स्मारक का भ्रमण कराया गया। आज हम स्वतंत्रत भारत में सांस ले रहे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हमारे क्रांतिकारियों द्वारा 1857 के विद्रोह के साथ शुरुआत की गई थी। आज की युवा पीढ़ी के लिए अत्यंत आवश्यक है कि वह भारत के इतिहास से परिचित हो, जिससे आजादी के लिए अपनी जान गँवाने वाले वीरों के लिए वे सम्मान एवं गर्व का अनुभव करें। तो आइए हम रेजीडेंसी के इतिहास से परिचय प्राप्त करते हैं।

रेजीडेंसी नाम सुनकर ही यह अंदाजा हो जाता है कि यह किसी का निवास स्थान रही होगी। रेजीडेंसी को ब्रिटिश रेजिडेंसी अथवा रेजीडेंसी कॉम्प्लेक्स भी कहा जाता है। यह एक ही सीमा में कई बिल्डिंगों का एक समूह है। यह ब्रिटिश निवासियों का निवास स्थान हुआ करती थी, जो अवध के नवाब के कोर्ट प्रतिनिधि थे। यह लखनऊ शहर के बीचों-बीच स्थित है, जिसके आस-पास शहीद स्मारक, तेहरी कोठी और उच्च-न्यायालय की बिल्डिंग आदि स्मारक स्थित हैं। यह कॉम्प्लेक्स लगभग 2000 सिपाहियों की दरगाह है, जिन्होंने 1857 के युद्ध के दौरान अपने जीवन का बलिदान दिया। वर्तमान में इस विरासत में एक म्युजियम तथा अवध के पहले नवाब रुआदत अली खान का मकबरा भी स्थित है।

इस रेजीडेंसी को नवाब रुआदत अली खां द्वारा सन् 1800 में बनवाया गया था। वर्तमान में यह राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक है। लखनऊ निवासी सुबह की सैर के लिए भी इस स्थान का प्रयोग करते हैं। इसका निर्माण लखनऊ के समकालीन नवाब आसफुद्दौला ने सन् 1780 में प्रारंभ करवाया था, जिसे बाद में नवाब सआदत अली द्वारा सन् 1800 में पूरा करवाया गया। लखनऊ रेजीडेंसी के अवशेष ब्रिटिश शासन की स्पष्ट तस्वीर पेश करते हैं। संपूर्ण परिसर में मुख्यतया पाँच-छह भवन थे जिसमें मुख्य भवन, बेंक्वेट हॉल, डॉक्टर फेयरर का घर, बेगम कोठी के पास एक मस्जिद, ट्रेजरी आदि प्रमुख थे। नवाब ने अंग्रेजों की सुविधा को देखते हुए इसे नदी किनारे एक ऊँचे टीले पर बसाया। लखौरी ईंट और सुर्ख चूने से बनी इस द्वि-मंजिला इमारत में बड़े-बड़े बरामदे और एक पोर्टिको शामिल था। रेजीडेंसी के नीचे आज भी एक बड़ा तहखाना है। अवध के रेजीडेंट इस तहखाने में आराम फरमाते थे।

गदर के वक्त तमाम अंग्रेज महिलाओं और बच्चों ने इसी तहखाने में शरण ली थी। इसी जगह 01 जुलाई 1857 को कर्नल पामर की बेटी के पैर में गोली लगी थी। इसी भवन की ऊपरी मंजिल के पूर्वी सिरे वाले कमरे में 02 जुलाई 1857 को सर हेनरी लारेंस को क्रांतिकारियों ने गोली मारी थी। अवध हुकूमत ने इस इमारत में ब्रिटिश रेजीडेंट के लिए दावत खाना भी बनवाया था। ये द्वि-मंजिला भवन एक दौर में यूरोपियन फर्नीचर और चीन के सजावटी सामानों से भरा पड़ा था। इसके मुख्य कक्ष में फाउंटेन चलते थे। गदर के दिनों में इस भवन को अस्पताल बना दिया गया। 08 जुलाई 1857 के हमले में रेवरेंड पोली हेम्पटन यहाँ बुरी तरह से जख्मी हुए।

यदि गदर के निशान देखने हों तो रेजीडेंसी से ज्यादा मजबूत जगह और कहीं नहीं मिलेगी। उस दौर में आज़ादी के मतवालों ने अंग्रेज अधिकारियों के गढ़ रेजीडेंसी पर पूरे 86 दिन तक कब्जा जमाए रखा। इस दौरान कई छोटे-बड़े अंग्रेज सैनिक और अधिकारी इन क्रांतिवीरों के हाथों मारे गए। संघर्ष में कई हिन्दुस्तानी सैनिक भी शहीद हुए। अतीत की कई कहानियां समेटे रेजीडेंसी आज भी शहर आने वाले पर्यटकों को अपने मोहपाश में जकड़ लेती है।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में रेजीडेंसी का अपना ही महत्व है। बेगम हजरत महल के प्रमुख सहायक राजा जियालाल की कमांड में लड़ी गई चिनहट की लड़ाई के अगले दिन 30 जून 1857 को सैय्यद बरकत अहमद के नेतृत्व में हिन्दुस्तानियों ने इस विदेशी गढ़ पर गोलीबारी शुरू कर दी। क्रांतिकारियों ने 86 दिनों तक यहाँ आपना कब्जा बनाए रखा। इस दौरान तमाम अंग्रेज परिवार यहाँ कैद रहे। 17 नवंबर 1857 की रात मौलवी अहमउल्ला शाह ने रेजीडेंसी पर आखिरी हमला किया, जिसके दूसरे दिन कॉलिन कैम्पबेल कानपुर से सेना लेकर आए और फिर से रेजिडेंसी पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

रेजीडेंसी का एक बहुत बड़ा हिस्सा 1857 की क्रांति में अंग्रेजों और भारतीय क्रांतिकारियों के बीच हुई लड़ाई में नष्ट हो गया था। युद्ध खत्म होने के बाद इसे जस का तस छोड़ दिया गया और धीरे-धीरे यह खंडहर में तब्दील हो गया। इस इमारत की टूटी-फूटी दीवारों में आज भी तोप के गोलों के निशान देखे जा सकते हैं, जो 1857 में हुई क्रांति की याद दिलाते हैं। यहाँ स्थित चर्च और कब्रिस्तान आज जमींदोस्त हो गए हैं। रेजिडेंसी परिसर में स्थित संग्रहालय में प्रतिदिन रेजिडेंसी के इतिहास पर प्रकाश डाला जाता है। इस संग्रहालय में 1857 की क्रांति का बहुत अच्छे से चित्रण किया हुआ है।

रेजीडेंसी के प्रवेश द्वार से थोड़ा आगे बढ़ने पर बैली-गार्ड द्वार है। काले रंग का यह द्वार काफी ऊँचा है और दूर से देखने पर किसी किले के प्रवेश द्वार जैसा लगता है। इस द्वार का निर्माण अवध के नवाब शादत अली खान ने ब्रिटिश कैप्टन "बैली" के सम्मान में करवाया था, इसलिए इस द्वार को बैली गेट के नाम से जाना जाता है। द्वार के दोनों ओर की दीवारों पर खिड़कियां हैं, जो आज भी सलामत हैं। रेजीडेंसी में स्थित सेंट मेरी चर्च की यदि बात करें तो प्रसिद्ध इतिहासकार योगेश प्रवीन के अनुसार 1810 में गाथिक शैली का सेंट मेरी गिरिजाघर बनकर तैयार हुआ था। गदर के समय इसे गल्ले का गोदाम बना दिया गया। स्वतंत्रता संग्राम में मारे गए पहले अंग्रेज की कब्र भी इसी चर्च में बनाई गई। यहीं नवाव मुस्तफा खां और मिर्जा मोहम्मद हसन खां की मजार भी है। रेजीडेंसी में ट्रेजरी हाउस भी स्थित था। यह यूरोपियन अधिकारियों का विनिमय विभाग था। 1857 की क्रांति में इसके केंद्रीय भाग को प्रयोगशाला बना दिया गया। इसमें इनफील्ड गन के कार्टिजेस बनाए जाते थे। इसके निकट ही पुराने बरगद के पास रेजीडेंसी का पोस्ट ऑफिस था, जिसमें गदर के समय टूल्स शेल्फ का निर्माण होने लगा। इस भवन में स्थित हेनरी लारेंस स्मारक के बारे में इतिहासकार रोशन तकी बताते हैं कि रेजिडेंसी में रहने वाले ब्रिटिश अधिकारियों में हेनरी लारेंस बेहद कुशल प्रशासक था। गदर की लड़ाई में मरने वाले हेनरी लारेंस की कब्र 51 फीट ऊँचे और बड़े घेरे में बनाई गई।

रेजीडेंसी की घेराबंदी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की शुरूआत का नतीजा थी। चूंकि यह परिसर ब्रिटिश अफसरों का निवास-स्थान था, इसलिए क्रांतिकारियों ने सबसे पहले इसे निशाना बनाया। यहाँ के भ्रमण के बाद तथा विस्तार से इसका विवरण जानकर पर्यटक यह विचार करने पर मजबूर हो जाते हैं कि यह सब कैसे हुआ होगा। रेजीडेंसी का भ्रमण करने वाले पर्यटकों का हृदय इस स्थान को देखकर और अनुभव कर अलग-अलग भावनाओं से भर उठता है। मेरे लिए यह स्थान अचंभे, दुख, सम्मान और गौरव का प्रतीक है।

नीलू सेठ
उप निदेशक (राजभाषा)

मुर्शिदाबाद का रोचक इतिहास

भारतवर्ष एक समृद्ध संस्कृति का देश है, जहां सदियों पुराना इतिहास एवं परंपरा दृष्टिगोचर होते हैं। मैं बंगाल से ताल्लुक रखती हूँ और इतिहास में मेरी रुचि है, तो मुर्शिदाबाद को मूल रूप से जानने की इच्छा हमेशा से थी। इसी इच्छा को मूर्त रूप देने के लिए यात्रा का आरम्भ की। मुर्शिदाबाद में मेरे मित्र रहते हैं उन्हीं की मदद और समर्थन ने मेरे लिए इस ऐतिहासिक अन्वेषण को बहुत हद तक आसान कर दिया। गंगा नदी के तट पर स्थित मुर्शिदाबाद स्वतंत्र बंगाल की अंतिम राजधानी थी। यह अपने मुगल और ब्रिटिश औपनिवेशिक इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। अपनी भौगोलिक स्थिति की वजह से यह शहर रेशम के व्यापार का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यहाँ की मलमल, जामहानी, बालूचरी भारतीय संग्रहालय कोलकाता में प्रदर्शित की गई है।

मिर्जा मुहम्मद सिराज उद्दौला, प्रचलित नाम सिराजुद्दौला- मुगल साम्राज्य के बंगाल प्रांत के नवाब थे, जिसमें वर्तमान भारत के पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, उड़ीसा तथा बांग्लादेश सम्मिलित थे। वे सन् 1756 के अप्रैल में अपने नाना अलीवदी खान के द्वारा उत्तराधिकारी के पद पर बंगाल के नवाब बनाए गए। सिराजुद्दौला 23 जून 1757 को रॉबर्ट क्लाइव के अधीन ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ प्लासी की लड़ाई हार गए।

इस हार का प्रमुख कारण था नवाब की सेना के कमांडर मीर जाफर द्वारा किया गया विश्वासघात। रोचक बात यह है कि जब हम मुर्शिदाबाद की पुरानी नवाबी राजधानी की यात्रा करते हैं, तो हमें कई खूबसूरत इमारतें दिखाई देती हैं। लेकिन सिराज द्वारा निर्मित किसी भी इमारत का कोई निशान नहीं है।

जिन स्मारकों को हम देखते हैं वे सिराज के उत्तराधिकारियों द्वारा बनाई गई थीं। सिराज से संबंधित केवल दो चीजें अभी भी इस शहर में स्थित हैं।खोशबाग, पुरानी मदीना मस्जिद नवाब सिराज द्वारा निर्मित पुराने निजामत इमामबाड़े के केंद्र में स्थित थी जो आग लगने पर जल गई थी।

उसके बाद नवाब मंसूर अली खान ने वर्तमान निजामत इमामबाड़ा का निर्माण किया और नई इमारत के अंदर एक और मदीना मस्जिद का निर्माण किया।

दोनों मस्जिद नदी के तट पर हजारदुआरी महल के दक्षिण के समानांतर स्थित हैं। अब हम चलते हैं खोशबाग की ओर। खोशबाग एक उद्यान-कब्रिस्तान है, जिसका निर्माण बंगाल के नवाब अलीवर्दी खान ने सन् 1740 में 7.65 एकड़ जमीन पर करवाया था। सन् 1756 में नवाब अलीवर्दी खान के देहान्त के बाद नवाब सिराज ने अपने नाना के लिए खोशबाग में पहली बार समाधि का निर्माण और उनके सम्मान में बाराद्वारी का निर्माण किया था।

बदकिस्मती से इस घटना के 1 साल बाद सिराज की हत्या हुई और उनके साथ-साथ उनके परिवार के कई सदस्यों तथा मित्रों की भी हत्या हो गई। सन् 1756 से लेकर सन् 1757 तक खोशबाग में कुल 34 समाधियाँ बनाई गई। मोतीझील महल और हीराझील महल यह दो महल भी ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। मोतीझील वस्तुतः एक घोड़े की नाल के आकार की झील है। नवाब नवाजिश मुहम्मद खान के शासन काल में इस झील का निर्माण हुआ था, नवाब साहब ने इस झील के बगल में संग-ए-ढ़लन (शाब्दिक रूप से पत्थर के महल) का भी निर्माण किया था। प्रमुख स्थानों का वर्णन इस लेख में किया गया है। इसके अतिरिक्त कश्गोला महल, जहान कोष कैनन, कटरा मस्जिद, फौती मस्जिद और वासिफ मंजिल भी उल्लेखनीय हैं।

किसी विषय पर ज्ञान को मनन एवं चिंतन में धारण करना एक प्रकार का आत्मिक योग है और अगर वास्तविक रूप में उन्हीं तथ्यों से हम रूबरू होते हैं, तो सत्य अनुभूत होता है। मुर्शिदाबाद शहर से संबंधित जो किताबी ज्ञान पिछले कई वर्षों से मैंने प्राप्त किया, इस शहर के स्मारकों के बीच सांस लेते समय उसी ज्ञान ने परिपूर्णता प्राप्त की।

आखिरकार ये शहर जो भारतवर्ष के अनेक ऐतिहासिक विरासतों में से एक है, ने मुझे अपने प्रशंसकों की तालिका में शामिल कर लिया।

श्रेया मिश्रा
विवाहिती- इंद्रनील मिश्रा (वैज्ञा./अभि. एसएफ)

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में संपन्न हिंदी तकनीकी संगोष्ठी-2022 की रिपोर्ट

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में 07 अप्रैल 2022 को "भारतीय परिप्रेक्ष्य में ग्रहीय अन्वेषण और समानव अंतरिक्ष कार्यक्रम" विषय पर हिंदी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री नीलेश एम. देसाई, निदेशक, सैक की अध्यक्षता में संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया, इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री एस.के. श्रीवास्तव आई.एफ.एस., अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, गुजरात सरकार उपस्थित रहे।

मंच पर आसीन (बाएं से) श्री ए.एस. पटेल, श्री राजेश खंडेलवाल, श्री नीलेश देसाई, श्री एस.के. श्रीवास्तव, डॉ. अनिल भारद्वाज एवं श्रीमती नीलू सेठ

संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के दौरान सभागार में उपस्थित श्रोतागण

अंतरिक्ष विभाग से प्राप्त निर्देशानुसार डेकू और पीआरएल प्रतिभागी यूनिट के तौर पर संगोष्ठी में शामिल हुए। इन दोनों यूनिटों के वैज्ञानिक/अभियंताओं और कर्मचारियों ने संगोष्ठी में लेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र से पूर्व, डेकू द्वारा इसरो के विविध अंतर-ग्रहीय मिशन यथा चंद्रयान, मंगलयान आदि पर बनाया गया वीडियो कार्यक्रम प्रदर्शित किया गया। इसके बाद प्रार्थना और दीप प्रज्ज्वलित कर संगोष्ठी प्रारंभ की गई। मंचासीन महानुभावों का स्वागत ऑक्सीजन प्लांट्स से किया गया। केंद्र की उप निदेशक (राजभाषा) श्रीमती नीलू सेठ ने संगोष्ठी में सभी का स्वागत किया। नियंत्रक, सैक तथा अध्यक्ष, संगोष्ठी आयोजन समिति श्री ए.एस. पटेल ने संगोष्ठी का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि कोविड-19 की विपरीत परिस्थितियों को पार करते हुए किस प्रकार इस संगोष्ठी के विविध आयोजनों की व्यवस्था की गई। उन्होंने बताया कि संगोष्ठी के लिए 90 लेख प्राप्त हुए थे, जिसमें से 80 को प्रस्तुति के लिए चयनित किया गया। संगोष्ठी में सैक के70, डेकू के 3 और पीआरएल के 7 वैज्ञानिकों द्वारा लेख प्रस्तुत किए गए।

निदेशक, डेकू श्री राजेश खंडेलवाल तथा निदेशक, पीआरएल डॉ. अनिल भारद्वाज ने विशेष उद्बोधन दिए। अध्यक्षीय भाषण में निदेशक, सैक श्री नीलेश एम. देसाई ने उपस्थित वैज्ञानिकों से कहा कि गगनयान तथा चंद्रयान-3 परियोजनाओं के समय में इस संगोष्ठी का विषय अत्यंत प्रासंगिक है।

संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के दौरान लेख-संग्रह का विमोचन

लेख-संग्रह की ई-प्रति/ फ्लिप-बुक का विमोचन

तदुपरांत, मुख्य अतिथि श्री एस.के. श्रीवास्तवआई.एफ.एस. ने संगोष्ठी के लेख-संग्रह का विमोचन किया। लेख संग्रह संगोष्ठी के लेखक प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत 80 लेखों का संकलन है। लेख-संग्रह की ई-प्रति फ्लिपबुक के रूप में भी तैयार की गई थी जिसका विमोचन निदेशक-सैक ने किया।

मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में उपस्थित श्रोताओं को वन संरक्षण में इसरो के योगदान के विषय में अवगत कराया। साथ ही उन्होंने जनता की भाषा में नवीनतम ज्ञान उपलब्ध कराने पर बल दिया। प्रधान, एमसीबीडी- श्री आशिष सोनी ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का मंच-संचालन सुश्री सोमा करनावट, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री सोनू जैन ने किया।

उद्घाटन सत्र के दौरान (बाएं से) मुख्य अतिथि श्री एस.के. श्रीवास्तव, श्री नीलेश देसाई, श्री ए.एस. पटेल एवं श्री राजेश खंडेलवाल

उद्घाटन सत्र के दौरान (बाएं से) डॉ. अनिल भारद्वाज, श्रीमती नीलू सेठ, श्री सोनू जैन और सुश्री सोमा करनावट

उद्घाटन समारोह के पश्चात्, गणमान्य व्यक्तियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया।

उद्घाटन सत्र के दौरान (बाएं से) मुख्य अतिथि श्री एस.के. श्रीवास्तव, श्री राजेश खंडेलवाल, डॉ. अनिल भारद्वाज, श्री ए.एस. पटेल श्रीमती नीलू सेठ एवं श्री सोनू जैन

इसके बाद संगोष्ठी के विविध सत्र निम्नानुसार संपन्न हुए:

सत्र का नाम	नाम	सत्राध्यक्ष / सत्र संचालक
सत्र -4 उभरते रुझान एवं भावी चुनौतियाँ : अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य समय – 11.10-12.30 बजे (विक्रम हॉल- मेन हॉल)	श्री टी.वी.एस. राम डॉ. हरीश सेठ	सत्राध्यक्ष सत्र संचालक
सत्र-1 (b) (प्रौद्योगिकी) : डिजाइन, संविरचन तथा परीक्षण प्रक्रिया में संवर्धन : प्रौद्योगिकी समय – 12.30-13.30 बजे (विक्रम हॉल- मेन हॉल)	श्री अपूर्ब भट्टाचार्य श्रीमती पूजा श्रीवास्तव	सत्राध्यक्ष सत्र संचालक
सत्र-2 (a) (परीक्षण) : डिजाइन, संविरचन तथा परीक्षण प्रक्रिया में संवर्धन : प्रौद्योगिकी समय – 11.10-12.30 बजे (विक्रम हॉल- हॉर्स शू रूम)	डॉ. सी.वी.एन. राव श्रीमती रिंकू अग्रवाल	सत्राध्यक्ष सत्र संचालक
सत्र-2 (b) (परीक्षण) : डिजाइन, संविरचन तथा परीक्षण प्रक्रिया में संवर्धन : प्रौद्योगिकी समय – 12.30-13.30 बजे (विक्रम हॉल- हॉर्स शू रूम)	श्री देबज्योति धर श्रीमती रचना पटनायक	सत्राध्यक्ष सत्र संचालक
सत्र-3 (a) (डिजाइन) : डिजाइन, संविरचन तथा परीक्षण प्रक्रिया में संवर्धन : प्रौद्योगिकी समय – 11.10-12.30 बजे (विक्रम हॉल- सेमिनार हॉल)	श्री के.एस. परीख श्री उज्ज्वल गंगेले	सत्राध्यक्ष सत्र संचालक
सत्र-3 (b) संचार, नौवहन, सुदूर संवेदन : अनुप्रयोग समय – 12.30-13.30 बजे (विक्रम हॉल- सेमिनार हॉल)	श्री ईशमोहन बहुगुणा श्री आशीष कु. शुक्ला	सत्राध्यक्ष सत्र संचालक
सत्र-1 (a) (डिजाइन) : डिजाइन, संविरचन तथा परीक्षण प्रक्रिया में संवर्धन : प्रौद्योगिकी समय – 14.10-15.20 बजे (विक्रम हॉल- मेन हॉल)	श्री डी.के. सिंह श्री अनुराग वर्मा	सत्राध्यक्ष सत्र संचालक
सत्र-5 विविध समय – 14.10-15.20 बजे (विक्रम हॉल- हॉर्स शू रूम)	श्री के.के. सूद श्रीमती रूपल याज्ञिक	सत्राध्यक्ष सत्र संचालक
पोस्टर सत्र - I समय – 11.15-12.45 बजे	श्री ए.एस. पटेल श्री दिनेश अग्रवाल	सत्राध्यक्ष सत्र संचालक
पोस्टर सत्र - II समय – 11.15-12.45 बजे	श्री ए.के. लाल श्री कमल पोद्दार	सत्राध्यक्ष सत्र संचालक
पोस्टर सत्र - III समय – 11.15-12.45 बजे	डॉ. मिलिंद महाजन श्री ज्ञान सिंह	सत्राध्यक्ष सत्र संचालक

उक्त सत्रों में कुल 54 लेख पावर पाइंट माध्यम से और 26 लेख पोस्टर माध्यम से प्रस्तुत किए गए। सभी लेखकों ने ज्ञानवर्धक और प्रभावपूर्ण प्रस्तुतियां दी। प्रत्येक प्रस्तुति के लिए 8 मिनिट का समय दिया गया जिसके बाद 2 मिनिट का प्रश्नकाल भी रखा गया, जिसमें उपस्थित श्रोताओं ने अपने प्रश्न रखे।

पीपीटी सत्र के दौरान प्रस्तुति देते लेखकगण

पोस्टर सत्र के दौरान प्रस्तुति देते लेखकगण

पीपीटी सत्र के दौरान प्रस्तुति देते लेखकगण

पैनल चर्चा के दौरान मंचासीन सत्राध्यक्ष

सभी सत्राध्यक्षों द्वारा पैनल चर्चा का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें संगोष्ठी की विषयवस्तु के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। पैनल चर्चा के पश्चात् हिंदी की विविध प्रोत्साहन योजनाओं का पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इसमें वार्षिक प्रोत्साहन योजना, हिंदी माह प्रोत्साहन योजना, प्रभाग/अनुभाग प्रोत्साहन योजना, बच्चों के योग्यता पुरस्कार और विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार शामिल थे।

संगोष्ठी में सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति के लिए प्रथम पुरस्कार उमंग भाटिया-प्रमोद मिश्रा तथा अंकिता रानी-शालिनी गंगेले को, द्वितीय पुरस्कार राकेश कुमार-दीक्षा शर्मा और आकाश गुप्ता-समीर ठाकुर को, तृतीय पुरस्कार दीपक पाटीदार-धवल वर्तक को, प्रोत्साहन पुरस्कार रमेश कुमार-अजय कुमार सिंह तथा अखिलेश शर्मा-संजय त्रिवेदी को प्रदान किए गए।

प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र ग्रहण करते हुए लेखकगण

विविध प्रोत्साहन योजना, बच्चों के योग्यता पुरस्कार, विश्व हिंदी दिवस और संगोष्ठी की श्रेष्ठ प्रस्तुति के प्रमाण-पत्र वितरित करते निदेशक-सैक, निदेशक-डेकू और नियंत्रक-सैक

प्रमाण-पत्र वितरण के पश्चात् निदेशक महोदय ने सभी विजेताओं को बधाई दी व हिंदी में काम करने और अपनी मातृभाषा को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। पुरस्कार वितरण समारोह का मंच संचालन श्री आशिष सोनी ने किया। अंत में उप निदेशक (राजभाषा) श्रीमती नीलू सेठ ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

* * *

08 अगस्त 2022 को सैक/डेकू के नव-नियुक्त कर्मचारियों के लि एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. डी. राम रजक, समूह प्रधान, पीपीईजी, मीसा ने की। कार्यशाला में कुल 24 कर्मचारियों ने भाग लिया।

02 मार्च 2022 को राजभाषा समन्वयकों के लिए एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री राजीव ज्योति, सह निदेशक, सैक ने की। कार्यशाला में कुल 199 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

18 मई 2022 को सैक/डेकू के प्रशासनिक (प्रशासन, लेखा, क्रय एवं भंडार) अधिकारियों के लिए एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री एन. एम. देसाई, निदेशक, सैक ने की। गई। कार्यशाला में कुल 35 अधिकारियों ने भाग लिया।

राजभाषा योग्यता पुरस्कार एवं हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले बच्चों को पुरस्कार वितरण

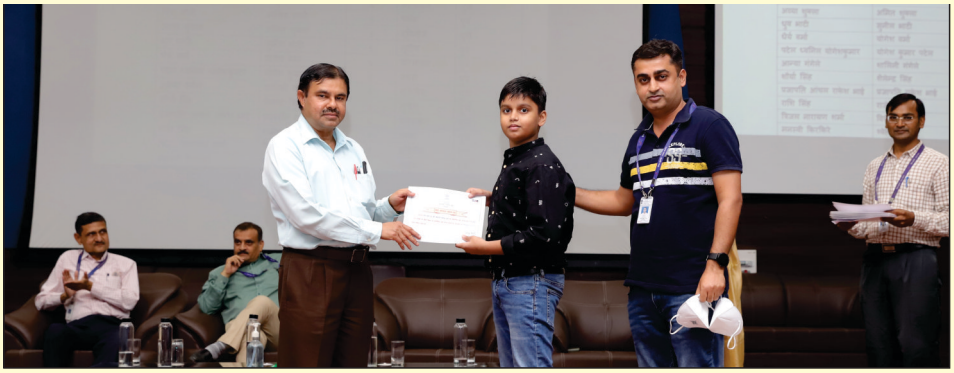

झलकियां - विश्व हिंदी दिवस 2022

केंद्र में तकनीकी एवं प्रशासनिक अनुभागों के लिए लागू प्रोत्साहन योजना के विजेताओं को प्रमाण-पत्र एवं शील्ड वितरण

गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान 10वीं एवं 12वीं कक्षा में हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले सैक/डेकू के कर्मचारियों के बच्चों को पुरस्कार प्रदान करते हुए निदेशक, सैक

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद

डेकू - इसरो द्वारा डिज़ाइन
Designed by DECU - ISRO
अक्तूबर - 2022
October - 2022